MSS No. 359 Subject

Name of MSS बृहत्कवि वल्लभ ग्रन्थ

Author हरिचरणदास

Period Folios 45

Script संस्कृत Source Prithipal Singh.

Missing Folios

बृहत्कवि वल्लभ ग्रन्थ
५५ पत्रक ॥ ल० ग० १६ पं० प्र० पृ०

ह० ल०

ग्रा त्र त्र यात्रे म्रात्नी भयोरेनरोत्रोन:

कार्तिकाइ ग्रासाग्राहाग्रातार्थिपर्थिष्ठिर्ईता:
सप्तविंसतितीन, दिन ताहिलागे तं

वर्ततमर्इ
कार्तिकेईमुड़शा साता ताथिर्तिथिसे प्रताः
सप्तविंसतिहोइड़ा दिन ताता फलेलमेतं
२१

एकदेव प्रथम सर्गमा चैका
लगेथा

रेखा

राम नाम सत्य धाम

नलखनवानी पोथीय
लपिसा १७३६ फा २७

भाषा

साखी

११ नेकसारथी १ "सरीर कवलम २ 2
नाम माला २ भाषा भूषन २
कवलम ३ सभा सकास २
नाम माला ४ रूप

कवित दोहरा
ता सवपोथीया
" स· क· ना-ना-ने- 2
सूची वनी वानी

बाचे ।। नेकसरथी क
नाम माल
कवलम
भाषा भूषन
चन्द्रिक ।।=
रूप दीपक

[illegible]

359

(5)

प्रथमंलंकार

क.र. ॐश्रीराधाकृष्णौविजयेतां अथ दूषणानि लिख्यते दो० मोहन चरन पयोज मैं तुलसी कौ है
ख.१ वास ताहि सुमरि हरि भक्त सब करत विघ्न कौ नास १ कवित्त आनंद कौ कंद वृषभानजा कौ मुख
चंद लीला ही तें मोहन के मानस कौं चोरै है दूजौ तैसो रचिवे कौ चाहत विरंचि नित ससि कौं व
नावै अजौं मन कौं न भोरै है फेरत है सान आसमान पै चढाय फेर पान प चढायवे कौं वारिधि मैं बो
रै है राधिका के आनन कौ जोटन विलोकै विधि टूक टूक तोरै पुनि टूक टूक जोरै है २ अथ दोष
लछन रस आनंद सरूप कौं दूषै तै है दोष आमा कौं ज्यौं अंधता औरव बधिरता रोष ३ अथ पंच प्रका
र दोष पद मैं पद के अंस मैं वाक्यार्थ मैं मान रस मैं पंच प्रकार एके विदूषन पहिचान ४ अथ पद
वाक्य दोषनाम कवित्त दोष कर्न कटु १ गतसंस्कृति २ अप्रयुक्त ३ फेर असमर्थ ४ निहतार्थ हू
न ५ भाषिए अनुचितार्थ ६ त्यागौ औ निरर्थक ७ सौं दूर भागौ कवि हू न त्रिविधि अस्लील ८
अभिलाषिए ज्याड़ि ये अवाचक ९ संदिग्ध १० अप्रतीत ११ दूकौं ग्राम्य १२ नेयार्थ १३ पद दोष
है न राषिए विरुद्धमतिकारी १ अविमृष्टविधेयांस २ औ क्लिष्ट तीन दोष पद संग ही मैं साषि
ए ५ विरुद्धमतिकृत आदि तीन दोष पद के समूह मैं ही होत हैं दोहा गतसंस्कृति १ असमर्थ पु
नि औरु निरर्थक ३ त्यागि वाक्य हू मैं सब होत हैं दोष लषो अनुराग ६ गतसंस्कृति आदि तीन
दोष छोड़ि कैं कर्न कटु आदि वाक्य मैं भी होत है पद को समूह सो वाक्य कर्न कटु १ अप्रयुक्त २ निहतार्थ
[illegible] ४ औ मीनन त है के अस्लील ८ [illegible] अप्रतीत ८ ग्राम्य १०

नेयार्थ ९ एतेनें दश दोष वाक्य मैं भी होत हैं अथ हि विधि पद दोष लक्षन दोहा सब्द पर्याय जहां जहां होइ
धन सिरजाय जो पद दोष अन्वय बिना पढि लैं सम फेरा जाय १ पद दोष के दोष लक्षन जो सब्द परि
वृत्ति को न ही सहै सो एक पीय पीय अरु मैं सदा बिसुनै टूबि च सैन रहो दोष मिले [illegible] जहां पद
पद को अन्वय नहीं होने पावे पढि लैं दोष को सान देय सो भी सह दोष जानिए नेयार्थ इत्यादि अथ
वाक्य दोष लक्षन जो पद औरे पद नि लैं जहां दूषित होत वाक्य दोष सो जानिए को ने कवि लखे हो
न ८ [illegible] मारन चढत नाव [illegible] को मारन के संजोग तें दोष भयो मीन मारन [illegible] रहो दोष नहीं
अथ अर्थ दोष लक्षन होत जु अर्थ प्रतीत जब नवल [illegible] को हूं बाध संदेह जु पद परिवृत्ति को अर्थ दोष
सो सोध ९ लोक के सह इत्यादि दोहा मैं जब वह अर्थ की प्रतीत होय गौन वजा न परे गो लोक के सह इत्यादि
अभिसार का कौन [illegible] पुष्ट करें बडो बाल क है दोष नहीं मिटै असें जानिए अथ अनेक दु होत रस म
निश्चत तिन को जो कोउ अकट भान वंदें कनेक ट दोष को [illegible] लर देह पहिचान १० निद्रा दिकालो [illegible]
इत्यादि दोहा जब तें केन विदेस को गयो सखी [illegible] पीय पीय [illegible] के सदा [illegible] विच सैन [illegible] वा
डेउ अकट बिहारी [illegible] निद्रा [illegible] दिये [illegible] लागत हैं [illegible] सो [illegible] कौ ला
ल १२ निद्रा [illegible] अकट अथ गज से [illegible] नहिं है अथ प्रतीत [illegible]
ना कौ [illegible] दोष बीन [illegible] १३ [illegible]
सब गण [illegible] १४ [illegible] निम दोष है [illegible] नहीं होत [illegible]
नहीं सम [illegible] निम दोष के अगोल क न को [illegible] को बोध कन [illegible]

A. no. 359

2

कव. प्र. २

हो सोई क्रियो सयानो सषिनसों नहि सयांन यह मलइ हैं इगाये फूल लोकों पिय आगम फूल १४
सुथा अर्थ में करी सयानो चाहिए ए ह मारी कैसी विहारी को टीकाह में प्रकाम नामें इम अर्थ में ये वकेल
गायो हैं सयानी सषिनतें न सयानें क्रियो वचन अर्थ मों चनयाई वो नहीं दोषनहीं और केतेक कहत हैं जा
के देस की जो भाषा तामें जो लिषा के हूं नहीं दोष नहीं फूल्यों है नहवाराके सषिवसंन तिन्न मांहि ल
वे वैन कौ छांद नो तो गुब लागी नांहि १५ इहां फूले बादि एव चनसों रसिकप्रिया लाजवे गा
रे मारकी छाड दई सब वृत्त सदेषो दोषन मानई पूपसु के सव रास १७ छांडि दियो सर्व सम अ
सो चाहिए पमान वाजके जासम नेचकवाजल जानके पानमें गानछि पाए जासपुछि गाहै अर्थ
प्रयुक्त सट सहके विनोधरै ताको है न विचार करत वटै मनहोत तंतहां अप्रयुक्त निरधार १९ वि
हारी सौं विहरी जननमें हआन रहो विहाय सो आ छो जाम अकेहद गाजुवदन वरसनरहत १९
सों रहि नके अर्थ में व हुत कविन न ही यसों रसिक प्रियामें ह विन हरि न हार रमादिक विन में वोधी
न क अप व न व न स्याम वन हीसेनर है अपवन अंगको नाम है ताको प्रयोग कि न हूं नें न हीं कि
यो अप्रयुक्त अंसें लौ स्याहि अंसेनिघट यट सहहै कविनि नैन हीं धरयो कविप्रियामें ता अंसकों या
हे वोन र से चलचाहि विलोचनको परचेह विरोच न को है वानरा कौंचे चलता अवनाई कविनिनै
नहीं कहीं यह अर्थ दोष मैं देसहकौ परिहारि कौं सट हैं भाषामें अप्रसिद्ध सहजांनके लिये कविचा
हिं करत्या वेहै और हम भी वहुत लिषेंगे एक अर्थ के सहमें यह दोष होत है इहां यह दोष यों रहो अ
पअसमर्थ दोय अर्थको सहज नहीं दोऊ अर्थ विख्यात वे तिन दूजो अर्थ थैं नहीं ⦿ असमर्थ २

निर्लज्जा

फुनरि

लषाकुन २० हेताभोपरदेसकौंतेरीसजनीकेतकैसैकेदिनबीतिहैंपुष्पसमयउजरोन २१ हे
नाकेहोयग्रंथमारनवालाग्रोज्ञानवालामारनवालाविषैंप्रसिद्धहैंबोलबैं पद्मनिरूपादि
यैंप्रसिद्धहैकवितामैंजानवालाविषैंप्रसिद्धनहीं हमारेकिंयोसभाप्रकासकोदोहावेसनयोंजो
वननयोनईलुनाईगातसंपरांहीग्रगुरागसरग्रानिउज्वलसोहात २२ संपरैसद्दइकेठाविषै
प्रसिद्धहैं ग्रोर्याटेसमैंह्रायवेमैंलोकप्रसिद्धहैकवितामैंप्रसिद्धनहींउज्वलसहूतोदोऊग्र यैं
मैंप्रसिद्धहैंजौनककमैलायुनललितग्रमसनियनितैवसफूलनफौनेपरपहहजेलमैंफुलसुके
म २३ कवितामैंनहायवेविषैंफूलबोप्रसिद्धनहींबोलबेमैंसपरिबोफूलबोप्रसिद्धहैंसेबाही
मैंहोनवस [ornament] कहानेरेसमैंहैसहूसवैहैसवितानितैपावैकहाकौलस २४ कौलसप्रसिद्धि
प्रसिद्धहैंकनामजलनाकोलेसकै निकाकहापावेयाग्रंथकोप्रमीतनहूसनेनहींहोतहैग्रै एक
पदमैंनहींकह्योयहप्राचीनउदाहरनग्रौकौनहींसुग्रपमेंदोषनहींग्रैसेपदबंदसौंदूषनोहूा
रमैंकहैहैं ग्रथनिहतार्थदोष ग्रंथकेसह्यकोग्रप्रसिद्धलेग्र थैप्रलितललु थैमिलवसोनहा
दूषननिहतार्थ २५ मोनलजेसबकोमिलीजोबातजेसबसंतनमहावीरयातेलियेग्रायोमंगल
सेत २६ महावीरमहासत्वमैंप्रसिद्धहैदेहमैंकोकिलकोगरुडकोवज्र कोभीकहैंहैंकौड
भ विश्रमेंहिमेंदियाजानतनाविषुग्रौरुषदाईहोयगोमानदिकोग्रभिधेयताकहोग्रभिधेया
कैनोहिसाईंमोननितजोनहिकोदेलीद्धहेरीकाहरीनोहिभलीमतिठाईंग्रेवानेकेनिकुर
व नेपदरैमेनरीकामसकलवदिषाई २७ प्रतिभूषनविप्रेमभसकौडाकैलहहैप्रेमर

वात

वय २ विसाम ४ इत्यादिक छ्येकों पंद विषयी सु विषय ग्रांसक नर । कामर मय १ इंद्रि
य ४ सकल ग्रमिधेगा सपथ ग्रो प रा न युंदेमेंमें का दली ज वती को नाम कनो भरनेवान १ वि
सिष २ रूप्र थक ३ पक विग्र सूग ध रूग्र जिह्ना ५ षग्र कले वपु इत्यादि ग्र प्रयुक्त भी कहे हैं गक
लेव ग्र मयुक्त है जो पक ग्रंथ को दोष गतत दोग्र प्रयु विषयी विषय में जो ग्रासक्त ता में प्रसिद्ध का
म विषे प्रसिद्ध विश्र भर द्दोवाक्य में भूतिक ट जानिए ग्रो वाक्य में ग्र प्रयुक्त भी कहे हैं के हैं गों ग्रो
वो थी लक में भग्रा प कम भी महानि के ज्ञान के लिये ग्रे में महा लिषे हैं दोहा किये तिलक पं हिरे
तिलक सो हतनि लक कपोल जीन निगनिक सिं धेनु का कर नय निकम न लोल । २८ श्रुति में
षनेनि लक तिलक । रत्न २ ग्रो गा तिल ३ ग्रादि य निक धना द्रु । पव २ धेनु का ३ भो । ग्रोपि त
२ तिलक तिलक में प्रसिद्ध ग्रे में वाक्य दोष जानिए जहां कुंज में उर्मि कोस इतबोल लिषे जा
ति है कनि का चलै सगनि का वाल २९ पु नि उर्मि का । स्वर षड्के वा । ग्र हमें गनाद २ ग्रांगुली
२ वीचो ४ लषक निका सुकान नि कुंभ षन ड चारे हैं कर वीच ग्रो गुली २ ग्रांवीज को स ३ कुंड्हनी ४
है हाथी ह्न के सं ६ ग्रग्र भाग ५ को विचार हैं गनि को ग्रु ३ भी २ वेस्या २ जेदी को ३ पिक्षा ने हैं सान
कुंभ के कुंभ सेजा के कुच को सोभ द ज वरनी सुवर्ण पानि में गविद स्त कुंज से ला भइ । कनो भरन
स्वने । सुवर्न २ कनक ३ हेम ४ हाटक ५ हे को रुपु निहिरन्य ६ ग्रे हसान कुंभ ८ इत्यादि उनु
वरनी हरदी को रंग त्र पा नो म लाज को ग्रा कु लहा कें सान कुंभ नो म दे श पापति को ग्रो हट कों उमा
कुसुम सो गान स्पिय उमा वरन सी नारि विरषन त्रानि को ३ माद ई उमा को वाणि २ । उमा ग्रतसी ३

माहरदीउमाकांनिउमापार्वतीकीतिकोभीनामउमाहैंमदांग्रद्रिपर्वग्रद्रिहैंदहैंग्रद्रिकोनापदी
रांगीहोंरापट्हरिरमैंदनिनिगिरियाप ३२ अद्रिपहार अद्रिप्रग्रइसूरयहीरानामश्रीकोग्रापिपी
लिकाकेमगिमेकेडकतापैथ्यापदेतिहैं वनवनमैंकामीसवदानिकेसमीरप्रकासमेसोमसोमसु
धिरमतहैचोरग्रंगपियपास ३३ वनगहनग्रोजलकामीपारा वनग्रोचकचांनिकसूरभिसा
मग्रप्रमतचोर नामसूगंधकोसुगंधहैग्रंगनाकोरसिकप्रिया भालगुहीगुनलालललटैंलट
केलटमोतिनिकीसुघटनीनादिविलोकनग्रारससोकरग्रारसोलेइकसारसनैनीकेसवस्याम
उरैहरमैपरसी ३४ नामसनिकोग्रानिपनीसूरजमंडलमैंससिमंडलमध्यपसीजउनादिद्रिवेनी
३५ सारंकोसमैकमलकोनामहै ग्रोपक्षीकोभीनामहैजाकोसुरवमैसदरसकहतहैं बोलवे
मैसारसकमलकोनामप्रसिद्धनहीग्रसमर्थेवोलिवेमैप्रसिद्धहोइकविनामैनहीप्रसिद्धहोयले
हनार्थेमैनोवोलवेमैप्रसिद्धजाग्रर्थेमैरटेकविनाहिग्रर्थेमैनहोइराषै ग्रप्रसिद्धग्रर्थमैग्राहैपतनां
स्तनसमभेदहै ग्रावनपवनग्रप्रसादकाग्रायोमासग्रप्रसादतोदिविधानामारिहेदेउसिलीमुषवार ३५
गोपग्रातमैजानदईमिलिनुमारेवनग्रारग्रनचितलामैलीनसजनीकुरनेजोर ३६ जोरसहवल
विषैप्रसिद्धहैसरवमेरजुविशेषकौकहितहैरहाप्रसिद्धमैनहीराष्यौजैसेसवरसहैदेतमैप्रसिद्ध
हैजलविषैनायहीदोषग्रवरनैपरेदेषासवरकीधारैहैवनमैरमैसिकारन्दमारेकेनएकसाय
केसोसरनिहनेकरेताकहै हूक ३७ माषामैसायकवांनकोनामप्रसिद्धहैतरवारकोनामप्रसि

५

कप्ले॰ ५

हन हो कोस मैं हमारो कियो सु निभूषन अनेकार्थन हो लिष्यो है विवेक॥ ए कांत। औ कियो वर
पुनि॥ सायक है सर। समसेर २२॥ ह कौंक विन विचारो है इक नाम पारसी में सअर को क विनि नैन।
हीं थ स्रप्यानें अप्रयुक्त अर्थ अनुचितार्थ उचित करै जहां अनुचित भासे अनुचितार्थ न हो सकाव
प्रकासे ३८ चितचंचल लखनो करै यहै लूरन हि तो हिकै है परनारि डिगसो विदल ल्ल है जो हि ३९ प
रत्नोपम उजु षकइत सर्वक मेवा ह्य यह सो विदल पद सो निंदा व्यक्त भई जाकी स्तुति कीनि चिंत ता।
की निंदा व्यक्त होय ऐसो अनुचितार्थ इहां जो निए यह काव्यप्रकास की टीका सारदीपिका नामें
लिष्यो है जो गनिकों जो गील लहै कवि नसमाधिलगा सुभो पसूत्र परन जन को सागनिल हीय
हाय ४॰ इहां व पदकाय रपना को व्यक्त कहै एक वेर मैं [illegible] परन हैं दोष दोय तिनि अनि
मानव औरज्ञ औरि से दानव द्रुनें पिछान ४१ दानें नाम दाना को नाको भी वेद दान व कहावें
इहां निहतार्थ भी भयो ऐ स्रोता रसन निके दलकों दले कौतुक करै अल्प परन मैं निस्चल यों रहे हो
प्रकाव को रूप ४० इहां कादर सो जड़ ताजो हि रहा निर्दै प्राचीन मति सी नल उपचारिक दि दे हद
सो कों जोयया की विरह दसा मिटै जो पियगद हा होय ४२ नायक कौवेद्युवह रावत निंदा व्यक्त
भई यह दोष है द्रमरा पद के संजोग विनो अनुचित भासै है विरुद्धमति क्रतनो पदो सके संजो
गसों होत है एतनो वीच अर्थ निरथंक हरै चरन नअर्थ जहां कवि अनुसम [illegible] लषा यन हि तो को औ
न हिले गे सुनिरर्थक यह भाय ४३ विहारी फलो फाली फूल सी फिरतिज्ज विमल विकास भोर ५

वि

नैरयाहोहिनेचलननोहिपियपास ४६ फालोनिरर्थकफालीकोवोरकामिनी किंवासंद्दवि
कहूनेसवैवारसवोलनिचालनैानदसीतहनापनकेगुनजोनलएसञ्चानकमे उनेला
गनिरेषिहरैवपरेसवगातन एतिनहुउवजेहोवडीलिपेंजायसयोनपनैासिषवेकोभएके
हिकैगाकरिषलनिजेएभटूअवषेलनिकेदिनेषलगाए ४७ सुअचानकइहांसूँदूचान
मरनार्थकनिरर्थकग्रथत्रिविधिअग्रीलेलाजन्नगुपाअसुभकोव्यंजकजेदूपरदेहायर
सविगारैश्रीतावियुषचयअसलीलहिजोय ४८ अथलज्जाव्यंजककरसश्रीचिउकादमन
साजोपरवसिंगारविहद्दसोकाटूविकरिकीजेजेकीरि ४९ इहांकारपरलज्जाकोव्यंजककै
हैं विहारीलगतसुभ गसीनलकिरननिसदिनसुषअवगाहि माहससोभ्रमसूरजोकेतु
वकोरीचाहि ५० सुभगपदलज्जाकेव्यंजककरनेहैयाहोनतहविदुसोलागतहैवरीजानिएअ
थञ्रानव्यंजकइमेनहोजीनेसमरपावनहैसवकाभएकवाचोलनहैंसुइहांगृदकोनामथ४
गुद्दकोतिकेयकोनामतासोग्लानिव्यंजकहोनहैविदारीरहोगुहो वैनोलषोगुहिवकोलोनार
लोगनैारहुवोवजेनीविसुकाम्वार ५० गुहीपाचीनरचीचाहिवेरूपवारवज्जतचनवरसुठिहुमावै
सकीसेषिमन्नकरतिअतिकलनहसमनवावकीगंधि ५१ वावकीगंधिअथअसेगालतुक
केतेइवेनकोधरतेहैंनवनैनेनपरैके वैसोरमनसवैसोहातसुत्र्येन ५२ मवपदअसेगालव्यंज
कविहारीमरोडभीकिटरीव्यथाकहापरीचलचाहिरहीकराहिकराहिअतिअवतुषनाहिनअ
हे ५३ सरोअसेगालव्यंजकतापलनवतूअवहीयहीग्रालवालेकिवालस्रीनमकुलदीपकुरफा

प

रवी

उमर

पाला

5

कवव
त्रम.
५
९६

विहारी सोरठा

विरहमिलननननकाल ५४ इहांप्रीतमकुलदीपकके आगें धुसें पदथहोस्थानमैंस्थितपदन
हीकुलदीपककैंमिलतहीकुं विरहग्रैसोहोतोतवदोषनहीं अवरवाकोकोपदअवरवाको
मैंयातैंदोषयहरसगहस्यहै अथअवाचकजाहिअर्थमैंजोपदआनैंकहैनतहिंसुअवाचकमा
नैं ५५ विहारीवहकिनइहिंवहिंनोपुलीजवतववीरविनोसवचैनवडीसवीलहूवीलहोस
वांमास ५६ सवीलसहयारसीसैराहवांवकहै उपायकोनहीकहतहैयानेंअवाचकजानो
औविनासमहअमेगलव्यंजकहैविरहसकाईदेहकियोअतिउदहउठोजैसेवरसैमेंहमैजवा
साजोजमें ५७ जोपदजरिकोवाचकनहींयाकोअर्थप्रगटप्रकासटीकामेंओरतवहकियोहैऐसो
अर्थकरैतोदोषजोनिषधोचीनजादिनतैंदेषीहगानैअलीअप्रवजोनदेष [ornament] दिनविनल
षैंनिसिनवतैंमोकोदोन ५८ जोनिविनांदेषैंनिसाहोनहैअथकारहोतहैयहअर्थदिनसहको
अर्थप्रकासनहींआपुकोकाटैहैपहदिनकोअर्थमुकतमालमुषमेंदियैंवहरहकदनिमराल
वरीअवदेषनिचेदावीजकुटासीवाल ५९ मग लसहमानवाचकनहींहैसवाहिएअवाचकमेंह
षतावीनलछूनमैंसण्होहैविवछिनअर्थकोअवाचक अथसंदिग्धनिश्चेहोयनअर्थको
जहांसंदेहलषायतहोकहैंसंदिग्धसवयहजोनोकविराय ६० सुषसोंसौंयसकोननिसिनहि
दिनमैंआरामतोसामिलवेकोनअलिआयसकोवसकाम ६१ हरकेकाजैकेवसकिंवाविरह
नीकोउक्तिकामदेवकेवसकै चाहतहैइह पदकेमपतिकोथानविषयकाहिनपमेंरहैसदा
षयथोन ६२ पयदूषकिवाजलतपस्यामैंदोऊअउझलहै योरोसंदेहमैंहोतहै अथअप्रती ५

न केवल सास्त्रहि मैं विख्यात अप्रतीत यह जो न सुवा न बढ़त विचारैं अर्थ ऐसे पावैं यह दूषन के देत क
होवैं ९३ भक्ति का द्रू के मिलन के उपजत है निर्वान सिद्धि कहि कै याउ उपजायहै कहे तन प्रेम कज्ञान ९४
तान सहू न प्रेम क व्याकरन प्रसिद्ध है विदारी जो गज्ज गात सिवस भलै मनो महा मुनि मैं न चाह तपि
य अहै न ना कान न सेवत नैन ९५ अहै वेदांत सास्त्र मैं प्रसिद्ध है चाहत पिय सों पकता ऐसो चा
टू पैनो मले इ सव जाम जो सैवे अवधि अनूप मिले विश्व हतराम सों है आराम को रूप ९६ आ
गमटिन किन व्याकरण प्रसिद्ध विश्व हत इ दो जे सैन क आमन अति आद रपेखो करत निपट जना
वन हैं न पंचम मग ते नेनी हे मैं पिय अवक्रेटके देन ९७ अवक्रेटक विसेषन न्याय प्रसिद्ध है अ
तिभूषन पंचम रुचिर सटक्क नर रावा भेद रू मानन सार ५ को इ पकदेसमै केमन ने लोगमै सा
केतिक को ईनाम वो थिरा छोरे सो सबू जहां क विना मे आवे ता को भी भाषा मे अप्रतीत कहत है
स नेनो विभोषन रूषहर न टसरध सुत महा रा जवालि विदारन मो यहे मे करे दोष है आज ९८ म
करे दास रूख मे केत ने लोग उपवास को कहत है ग्रेथान रसोई धीरज कहत है साई शवन को मरद है सा
नजाके हियैनाना आयैं याम ९९ मथुरा मैं के तने लो या ज्ञानादरिद्र को कहत है मे करे दोजाना सुहो
अवाचक दोष हू जानिए अप्र ग्राम्य राघव वचन सेवार को वम को है अपक पै अप्रवीन कहि को क
है ग्राम्य दोष है एवं १०० तो ही सो बिय वेधि रह्यो मति मान केकछु और मेरुडा को फेरै कदास चिको रहु ली
नोर १०१ मेह को मेह डावन जे सेन वारक हत है अनेगुता रू आयो लाल नकुल वाई मैं बाल सबै क ग्राम
विहा न तै वेय हू न मिलन के काल १०२ भरिहा हरव मे ग्रामीन को ऊ किवत नहीं रन हिय वन के नवेली

वानक गाम्य भैसास्कान

6

का० प्रि०
६

घेरी अकुलाय हरषी जु चमरू चषजव तें नगई विलाय २३ ऐसें होत जानि ए प्राचीन कहत सबै सो
बाल मिसि वन विहार कौ तातैं तन मन लोचन लाल के स्यों अंपुल कत जात २४ बाल यह अप्रा
स्य अर्थ नेयार्थ रूढ प्रयोजन नाहि है विन सक्ति दिपरकास करै जहां लक्षार्थ कौं तहां नेयार्थ वास
२५ रूढ न हो प्रयोजन नहीं यातें अस मक जो है पद ता सो लक्षार्थ करें लक्षना सो जो अर्थ निकरै ता
कौ प्रकास करै नेयक हिये पहूं चाय वेलाय कु ऐसो अर्थ न होय षेचिकै कोई नर हूं अर्थ करनों कवि
कौ प्रचुनसन्नि जानो जानि है सो तो विरस कसवनि है यह कारन दूषन देने मैं मुषक्ष विसास्सिधे पगाय वैं
कै जन विक्को ना की न हुग निदास क विधायकी मग लोचन पैं दोन २९ पाव धरे सो मुषक्षौ विचद मा
सों जो नोई हौंय पद दोष है है ग आदि एकवाक्य दोष है आलोचन मगा नेत्र निसोत्तीन यह अर्थ दुका
यवे मैं नेयार्थ रूढा रू र भी न हो आ प्रयोजन भी नहीं ऐसें सुंदर सिंगार चिलक्यो अव चाहत हैं जो
न सुंदर जोवन जोतिन की चिनगी चिनगी कहै लेस एक पद मैं दोष सो षेचिकै निकरै है दोष एक प
द मैं सवैया कहि ए किहि भो ति दसा सजनी अंतिनाती कथा रसना हि दहै अरु ज्यों दिय हीं मदि हूटि
रहौं तो इ षोजि ये कौ कर्नाटि सदै वन आनेद जानन कान करै चितके हित की किन कोऊ कहै ऊ
न ऊतर पाय लगी मेहै ही सकहां कैं रीथी रज हाथ रहे २२ उत्तर के पाव मैं मह दी लगी है उत्तर
कौं महावर दावनी ता कौं पाव वहरावनौं मूर्ति विनो पावन हीं होत है जो कोई पाव मैं मंहदी लगावै है
सो महदी छुटिवे के लिए वाहिर नहीं निकरै है या नाथि काक छूजवाहन हीदेति या अर्थ षैचि करनि
करै है ता सो नेयार्थ रूढो रूढि भी नहीं प्रयोजन भी नहीं ऐसौ हार लक्ष्मा कवनी कविजितदोषवि

हरीमानहु विधिननग्रकछ विसहराधिवेकाजहु गधगधी छनकौं करे भूषनपाग्रदाज ७८
ननकी सछता राघवे की उत्प्रेछा करिकें हगकों वाहीनरहवदरापभूषनसों सोभानहीं निंदता
थी ग्रनुचिता थी नेया थी ए पदकौ परिहरिनेकों सहन है विरुद्धमतिकृत ग्रविमृष्टविधेयांस क्लि
ष्ट तीनदोषपदके समूह ही मेंहोतहै ग्रथ विरुद्धमतिकृत ग्रनुचितार्थ है सो भेद दै है तो ग्नि
हसक विषकाम जहो विरुद्धमतिभास है विरुद्धमतिभास ७९ रुद्रानीवल्लभनृपतिकौ सदा
कल्यानसदान मैं ग्रैवार मनदेउग्रचलपनदान ८० रुद्रकी स्त्रिसो रुद्रानी ताको वल्लभप्रिय यह
कहै ग्रोर पतिजान्यो जातहै यहुविरुद्धमतिउपजावै है ग्रथे ग्रोर तव हहोयताभे विरुद्ध ग्रोरतव हह
भासै ग्रैवा भवानीको नाम ग्रो माताको भी नाम रुद्राभी विरुमतिहोतिहै कविताभेभवानीभवरुद्रा
नी रुद्रसर्वानी सर्वमृडानी मृड ईद्रानी ईद्रवरुनानीव नए दोनाम सौंजोगहोय एसव पुरुषकेनाम
सोनाम है लीनैं संगास्यानिकोंकोनैं विविधि वनावैवदिसलियेकरसै ललनकुषमारन चढिनाव
८१ कुषमारनहै कुकरमेकरतहै यहुविरुद्धमतिउपजावतिहै यह दोष सहकोपविहन्निकों नहीं सहैगो
ग्रोग्रन्वयविनाहोय जोन्योजातहै याते सहदोष है विहभीनर फुरसी ऊपर गरीकज्जल जल ... लिवेको
पृथियपानीविनहीलिषीवाचीविरहवलाय ८२ जोनीचैवरी ग्रसैं कहै विरुद्धमतिकृतनहीं मानी
विविराग फूलक न तनय सा कि धौंकामकेतु कौसे लगिउवेहै उवेनोके जोवननरसके चोगानके नि
सोनकि धौं श्रीफलनेसरसषिलैना फूलरोनाकै ग्रालमसुकविकधौ ... नेककलमकि धौं ग्रानंद
केकंदके मनोन्नरसहोनाके हाथनेहनेदयारी सेननकंचुकीमें फटिकके संपुटमें हैं सरोज सोनोकैं

कविप्रियाकुन वे प्रथमे

८३ इहां समपेसकौ उतली विधवा पहिरन है यह रतन प्रनीत होत है विदा रीके दोहा में दोष नहीं इत्यतिन
कुचविच के कुच कौ चुपरी सा दी से तं त्रुपरी कहै सोर सिक प्रियाय परै मनुहारकियें पल्लै का परपाव
दिएमप भौनै सोयगाई कहि कै सव के सैंहि कौ निहि कौ विकसो दनि कौनै माद मके मुष सोमुष कैं किन
मैं पियमा निसवैं सुषलीनै एक उ सा सद्कि उससें सिंगार ई से गंध विदा कवि दीनें ८४ इहां चोषी लक
मैं विविरुद्धमतिकृत कविकहत है सृंगार प्रधान रता मैं वीभत्स आवै है या तें अमत पर षै भी आ मे
है सुंदर सिंगार देषति नैनन के कौन हि लो ग्रथ रानहि मैं मुसक्यात कौ थानौ वालनि वाल सु केव
हिलौ चलतैं पग पैं नक हूं अरहसानो सुंदर कौ धन ही सपनें अरु जो भयो तौ मनहीं मैं विलानो मैं व
सुथाव स थाई सवै वलिया की सुथाई सुथाई दें जानो ८५ कोप नहीं इहां वीभत्स नहीं पदै दोष नहीं अरु
चिंता थे मैं ना की स्रुति की जिय ना की नि दानि कै ई इहां सुंदर कवि की निंदा निकै वेदे इति ना यि का
कौ दे सुंदरि ऐसो पाठ पढ़ै यहू दोष है यो त्र सुता अरु थरी है इहां विरुद्धमति कृत न आसमास में अ
नु चिंता थे भी दोष जानिय स मैं प्रपंच जन पीय ता ते जुद्ध दो लीना गि आस वचन कनि दा विकविषि
समानि वैरा वाति ८६ पंचजन कदै पांच पुरुष की प्रनीत य दृविरुद्धमति अप्रव विमृष्ट विधेया
मृष्ट अविमृष्ट विधेय सो जहां न साफ विधेय कहुं समास उदेश कहुं पी छै तहां लषि लेय ८७ विधे
यक हि निर्देश सो जहां प्रधान नहीं कहि ए समास में अप्रधान व्है कहूं विधेय पहिले कहें स
मास में देनृप दूजो काम सा हू जो वतिसीना रिके वान से मैनके तिय के ननि विचारि ८८ इहां
हूजो पद कौ काम सौं समास के यो काम कौ वियो सो न हीं चाहि ए हू जो निर्देश हे न पड दे श पै दे हू

जोकामप्रसिद्धनहीकामदजोहैसोनेयार्थसोउन्मेकाचाहिएग्रैसेग्रोर ग्रोसेमानिएजोग्रैसोलक्षन
कहियेजोपदपहिलेंकहनेकोहोयसोपीछेंकहिएतोऊ क्रममेंजायपरै ग्रथवाकोमेंकाव्यप्र
कासमेंनियमकियोहैक्लिष्टग्रादितीनदोषसमासहीमेंहोयनहीसमासमेंवाक्यभीलीजिएग्र
वनकेवचनकीभाषान्यकारजहैसोहियहसुनियतसुकुजकानइत्यादिहोवाक्यमेंसपूनेवा
क्यार्थवाचकजोयहपदसाउदेस्यसोपीछेहैविधेयन्यकारयहिलेहैग्रैसेवाक्यहिमेंहोयनहीस
मासभीलीजिएएकपदमेंनहीहोयप्रदपदइत्यादिमेंपतन्यकषग्रादिमेंसमासहीहै रसरहसोहै
ग्रयानयहसमुरुझसविकैविवरहैस्त्रविजोहैचदउदाभयेविनदेषैवदउवि १९ इहांयहउदेस्यसोपी
छेकह्योग्रोक्रियाभोपहिलेंकहिचाहिइहैश्रुतिनैनकोरहैनिरंतररामकानकहैतानिएसुजस
हगाकहदेषोधाम २० इहैपदकोयहग्रर्थकानकहैइत्यादिवाक्यकोग्रर्थसाउदेस्यहैग्रोचाहिति
येयहैचाहजोविधेयसोपहिलेकह्योग्राउदेस्यजोहैइहैपदसोपीछेकह्योसोहैवेनालपनेपवानि
करहैसहायमेनुचंदउरसोलियेकचिपीवग्रोहिलवाय २१ पहिलेउदेस्यकहिपीछेविधेयक
हिएग्रैसोसारदीपिकामैंवचनहैसोहैक्रियाहैसोवेनाकेग्रागेचाहिएक्रियाभोपहिलेनहीकहि
एसमुफैपहिलेविस्तरसलहैतोविनहोदोषग्रैसेदोषनिसोनहीरसकोहानग्रघोष २२ ग्रैसोदो
षकहिवेकोहेइहैवानिकैग्रसोचाहिएविहारीग्रायेग्रापभलीकरीमेटनमानमरोरहरकेरोय
हदेषिहैछलाक्किएनियोक्कार २३ ग्रापक्रियाहैसहकेपहिलैकहदोषपीछेकहैसोछुटैहै।

कॢ॰ ८

यातैंसहदोषअविमष्टविधेयमैंकविवेक्लिनजोविधेयताकोआकौनरदज्ञाननहींयहदूषक
तावीजअर्थक्लिष्टनहिवेंहाअर्थप्रतीतिनहोक्लिष्टहैयहरीति ९४ जहांव्यवधानसैंअर्थप्रतीत
होयभुवनजानसोजानिजोतासुसुतताअभिरामताकोपतिरक्षाकरौभूपतिआवोजाम ९५ भुवनजान
आदिपदकीप्रतीतभएपीछैंगनेसकीप्रतीतहोतिहैइहांसरस्वतीपतिकोपर्यायगनेसकहैंकठिनता
नहीहैकष्टार्थअरथषोचनेपरैहैनीमचरनमदिचलननदिआननैननछतीसचारभुजानप्रमानकी
नोत्रुषदेतअसीस ९६ इहांसूर्यकीप्रतीतिक्लिष्टविहारीपावसकठिनजुपीरअबलाक्योंकरिसंहिसं
कैंतेऊधरननधीररकतबीजसमऊनैतै ९७ इहांरकतबीजसमपदसोंनपुंसककीप्रतीतिवेगि
नहीहोनहैक्लिष्टमैंप्रतीतिकोमारथपैवेगप्रतीतिअर्थकीनहींहोययहदूषकतावीजविहहुमतिक्लि
नअविमष्टविधेयांसक्लिष्टप्रतीतिनदोषवाक्यमैंकहैजहांमारदृदोषकहै अथपदसमदमैंअतिकै
हाटहाटहैनीकोजहांवाहिनेकोनिहचाहटइत्यादिअंककककेसलधौंकनैविदहुनौंद ९८ विहारी
नागविविविविविलासनजिवसौगवेलिनिमोहिसदामैंगनवीकिनहेंउगादेअविलोहि
९९ श्रुतिकटुआदिसैंदोषजहांवाक्यमांहिज्योहोयचाहतपदसंजोगनहिएतोवीचसंजोय
१०० अथवाक्यमैंअप्रयुक्तकेलिकुसुमसहृदयधरकविनअन्दुवेअंगतेसीतहीजगतमैंलोच
नकामनिषेध ११ केलकुसुमकोकहोरत्नापयोधरकोनामहृदयधरअप्रयुक्तसालतहैनटमा
लसीक्योंहूनिकरतिनाहिंमनमथनेजानोकसौशुभीशुभीजियमोहि १२ मनमथकोधनुष

रामअवतारथी महितसूर्य

इत्यादिपदसंजोगसौंसौ
नहीहोतइतनोभेद

है ते जा औ ताकौ लोक अप्रयुक्त दूसरो अर्थ है तिप्रकाससी कामैं कियो है औ ते जाए नन्ता हूँ लेइ ले तो पद दो
ष औ पोछै निकुरंव कलेवर हे है अथ वाक्य मैं निहतार्थ गौरि वो विद्रुग वानपियलषि मकरध्वज ते
देष मे वैश्र सुमुष जो ति सो दोहा ह हिकहा ले ह १२ गौरी पार्वती मैं प्रसिद्ध भाषा मैं आवत रस की स्त्री मैं
प्रसिद्ध नहीं वानतो र प्रसिद्ध जिह्वा जनविषै कौ विनामैं प्रसिद्ध नहीं मकरध्वज कामसमुद्र नहीं अज वैक
मल प्रसिद्ध वेद नहीं ... किरन मैं प्रसिद्ध नहीं लोहू मैं आस मैं प्रसिद्ध है सुधा वीचि सुधी चित वर्षा
नवयै ... उ आपीयन्द्र रनी षगा म्हुव्यय निगिपिकौ वाचै जोय १४ ऐसें दूरनी षग वान अथ अनुचिता
र्थ वाक्य मैं अतिकरालदे कालतें जमवाहन दव जानतें ऐसे गजपै नृचढे स्वर्ग लिसनी नागन १५ ऐसें औ
रि भीजानिए एक पद मैं दोष है किंवा बहुत पद मैं पद देषि लेनें अथ पदांस मैं दोष तेरी हविकौ देषिकें
गेरन सकै वह रायें मिलन कामव सकामिनी जयैं नर्व आय १६ इहां च्युतिक ... है सो पद के अंस मैं है
विद्व भीर हसन सबै केरत नाहै नागर नाकौ नोनें गयो भगरवैगुन को सबै वसैगवारै गांव १७ नागर को नाम
एतनौ चाहिए नागरता मैं ताअधिक है किंवा ताको नाहि पुरुष को नागर नाम सुनिकैं हंसैं ऐसो अर्थ है ल
यो दोष नहीं कवित्त दूवौ वेहै प्यारे तुमैं ... है जे लगावतें है तुम सव साधन मैं सरस विसेषिए राति कैं जे आ
वतें है हो तनहैं वेचोर तुम आवत हो भोर याते सोहत नमैं लेषिए नैं न है न लाल औ महावर न भाल औ छवी
व का ते काजर की रेष है न रोछिए आरसी लो ४ निरमल रावरे को मुष लाम में सै चाहत चूनरी को आनि वि
वदेषिए १८ रावरे को इहां कोस हृपदांस मैं अनर्थ करावे याही में कोस हू को अर्थ है रावरो मुष वि
हारी एरावरी कुचालें रावरी या रसुमार परी है अथ पदांस मैं अवाचक पद हैं सो रवा लक्ष औ चालफगा सवैया

श्रृ. १ हे सखि होरी रची निज धाम मिनसों लिय न्यावि रहीं रैंग माचि रह्यो अति हो जउ वारि न मारि निसों कुचलें कैं
अबीर खला वन नाहिं लग्यो मन हाइ रवारि न सों उनडारत ॥ रूथ की धार व प्रस्तु गई है कुच की पिचका
रिनसों ९९ इहां गई है कुच की पिचकारिन कौ वाहि प सों जोहै सो कौ अर्थ कौ अवाचक दै ज्यो स्तभलै
कुच की पिचकारिन सों पढ़े तो दोष नहीं रुप्यादि सब दूषन पदा समें सस्कृत हीमैं अच्छीत रह्व नेहै के
तने दोष पद ही के कहै के तने पदवाक्य के कहै अवकं उक रवे के लियें सं छेप कीर लछन उदाहरन
कहतने ह छंध्य श्रुतिकटु कंकसन कहैं गयो संस्कार भलो नियं अप्रयुक्त नाहि कह्यो क विनसों वीज
मे हलिय अप्रसिद्ध मैं धरे द्व थे असमर्थ फूलैं जलापि वसंवर निहनार्थ बोल वे मैं न विदित भलेप
रिनारिपासके चुकि गुन्त्य उथ अज्ञोग अनुचितसुकहू पुनि है निरर्थक अस ली लवे लाज ज्ञ गसा
अस्र भवह १० श्रुतिगतिकटु कर्कस हह सो श्रुतिकटु खेलि ता सों सषी को उक्तिक कर्कस वचन नायक सों
मानिक है गयो है संस्कार लिंगवचन सोंगत संस्कृति च्युत संस्कृति भी नाम भलोनियकी अभलो
नियचाहि प लोगनि तैं कह्यो रहो वचन फूलैं जल न हाय वे को फूलिवो या देस में प्रसिद्ध है कवि
नामें नहीं सुनि रथ्यकहीं सुपद निरर्थ कहैं छंध्य लागनिसु भग वयार नो मसु दसो ग्रह लीजई मरी
कि मरिहै विरहनी सुरे कमज्जुप्रनी जइ कहैं अर्थ वदनो हि अवाचक प्रान न पति रवि सुत दे हस।
द्विप कर तप यपान सदा कवि सो अप्र तीत जो सास्त्र महि ष्यात वाल अहेत पिथहै गेयाम्य कहैं ग्रा
मीन नर खुडा सो अन्न कहैं नीतय ११ लागनि इति भग पद लज्जा व्यंजन कहै गुह नाम कार्त्तिकेय को है
कतो भरन ह मारो कियो को सहै कार्त्तिकेय १ षट्वदन २ अग्निभू ३ गुह ४ सेनानिय ५ महासेन

८ स्कंद ७ पार्वतीनंदन ९ जानिपकहिसरजन्मा ९ सिषिवाहन ९० तारकजित ११ शक्तिधर १२
पुनिबाहुलेय १३ षाविसाष १४ गांगेय स्वामिन १५ कुमार १६ नरप्रानतपतरविउ तिप्रातसहृद
हृयवाचीनहीं श्रोनपवोसंभवैनहीं पयसहृदूधको श्रोजलकोवाचकहै देवालनतेरोपियश्रहैतितैहै श्रो
सोहृसरोनहीं श्रहैतेवदोतसास्तुप्रसिद्धहै याकेभेदवडुनकोहि श्रायेहै क्षेपरूढप्रयोजननाहिंक
रेलक्षनेनयारथकेजविक्षोनोकरैनेननष्टदनसरयारथकेहृद्धानोवल्लभविरुद्धमतिकृतनबुद्धिसत॥
क्लिष्टविलेवप्रनीतिसंभुसिरभूषनसुषमते श्रविमष्टविधेयवषानिकविजहांविधेयनहिंसोफस
निहैभूपटसरोमदनसोतियहितोरतिसीजगुनि ।।१२ हृडिउनिजहां रहिभीनहीं श्रारप्रयोजनभीनहीं
नहांषंत्विकगिलक्षनाकरैंतेनहोनेयारथदोषहोयनेनपारथकेसरकोषूटतोहैनेनकोपावबुद्धमाव।
नोतामोषूटलहैनेचश्रछेहैपननोश्रर्थकेलियेसंभुसिरभूषनचंद्रमाभयोहै चाहियेहैविधेयहै उहां
वाक्यमैंहृसरोमदनप्रसिद्धनहीं इति श्रीहरिचरणदासकृतेकविवल्लभेपदपदांसदोषनिर्णयः।
श्रथकेवलवाक्यदूषनविरुद्धमतिकृत श्रविमष्टविधेयांसक्लिष्टएतीनदोषवाक्यकेकहे श्रवादूदा
षश्रोरिकहतहैं ।। कवित्त प्रतिकूलवर्न १ हतवृत्त २ न्यूनाधिकपद ४ कथितपद ५ पतितप्रकर्षहृ
वषांनेहै सप्तपुनरात्त २ श्राहीतैरेकवाचक है श्रभवन्मतजोग ४ नीरसतैंजानेहै श्रनभिहितवा
च्य ९ श्रपदस्थपद ११ समाप्त १२ संकीर्ण १३ गर्भित १४ प्रसिद्धहत १५ ठानेहै भग्नप्रक्रम १६ श्रोश्र
क्रम १७ श्रोश्रमतपरार्थ १८ येवाक्यदोषतेनथरेजेनहोनेहै १ श्रथप्रतिकूलवर्नतेजिहिरसकौत्ता
यकवरनेसोताथरतिहिठौरहैप्रतिकूलवरननहोदोषकहैकविमोरेकोमलवर्न श्रेगाररसकेहृममा

१०

कल्प॰

षाभूषनमैंकहेहैं उद्धतवर्नवीररसमैंबीदूवस वीभत्सरसमैं सांतरसमैंचाहिए नाकोजहांवरनमयकरैस्तु
तिकटुतासृंगारकोदोषहै निर्विसर्ग्घदिकैरंगसोंप्रगटनपुरवरनजानिकोदितदपटविचारिकनोचट
कीलीधुनिद्युति ३ विहारीसकुचसुरतआरंभहींविछुरीलाजलजायदरकिढोरवरिढिगभईडीवदि
ठोईआय ४ टवर्गवर्नवीररस आदिकेअनुकूलसृंगारकेप्रतिकूलरचैतरंगसुअरगामैंमपदकैनरहा
हमेदेखतभीकुंभकोचढतिदेगरनमोद ५ इहांसानुस्वारसृंगारकेअनुकूलवनेवीरकेप्रतिकूलश्रमैं
जानिएइपदहतविसर्गलुप्तविसर्गदोषहैं सोभाषामैंविसर्गनहींदोषकहांतेहोयजहांवडतेओकार
ओवैनहांअकोनहींलगैकहासहेरहोलहाअंसैजानिएओविसर्पिदोषहैभाषामैंसुधितनहींजहांअ
कारआगैवकारयकारआवैनहांओकारएकारपरायनहींतोछंदकोवेधअकोनहींलागैजैसेंमैंवी
मोवाधाहरोभववाधाअकैनहींलागैजेजैमीनवरादइत्यादि अथहतनहेतजहांजतिकेदोभंगतेंहेहतहत १८
प्रसंग ६ कविप्रियाहरिहरिकेसवमदनमोहनबनस्यामसुजांनज्योव्रजवासीहासिकानाएर दतनहि
नमांन ७ इहांजतिभंगतेंदोभंगदोऊहैं अथन्यूनपदजहांविनपदरोअर्थनभासैसोपदनहिंतदोन्यूनप्र
सवैया कासै ८ कहूंकेसेगहलीनवलीअजहूंकछुचेतनदेकेसवारेजादसकेथकेवदइतीअवसोरूपेरहन
माहिद्वारेलकविरानभईकविगगदसोदिसिवढिगएरघवारेरावनकेडषनावनकोसुरतीभरको
विननीकरिहारे ९ वदइतीललीकेभूमिग्रसोचाहिएरतीभरसोंजोंकहीचाहिएयातेन्यूनपदवि
हारीलसैंमुरासातियश्रवनयोंमुकतनिदुतिपायमानोपरसकपोलकेरहेस्वेदकनआय १० मुरासाजडा
वकोनामहैजडावकोकर्नफूलकिंवानरकोचाहिए अथअधिकपदजाहिकहेविनवगरेनांहोदेखि।

अधिकपदकवितमाहो ११ बिहारीवारननोउदउरजभरुभवनहनई बिकासवोफिलमोतिनकेदियैआव
नरुकीउसास १२ दुहाउरपदअधिकहैगयेकोतिनयअव स्यावरोधकेप्रसंगमेंकरैगेलपरीपङ्कपपरा
गपदसनीसदमकरंदआवतिनारिनवारलोसष दवाधुगतिमंद १३ पङ्कपकोरजसोपरागकहावति
हैयहप्रसिद्ध हैपरागकहैपङ्कपआवतेपङ्कप पदअधिकहैकिवापङ्कपओपरागजोहैपटनासोल
पटीजोअैसोअर्थकरिएतोमंदपवनसोफूलनहीउड़ैहै कवित्तइंद्रजिमिजंभपरवाडवज्योंअंभपरराव
नसदंभपररघुकुलराजहैपौनवारिवाहपरसंभुरतिनाहपरज्योंसहस्रवाहुपररामद्विजराजहैदावाडु
मदंडपरचीतामृगझुंडपरभूषनवितुंडपरजैसेमृगराजहैतेजतमअंसपरकान्हजिमिकंसपरत्योंम
लेछवंसपरसेरसिवराजहै १४ इहांदंडपदअधिकहैदुमकहैं [ornament] अरपौनसबआवनेतेजतमअंस
परइहांअंससबदसमूहकोअवाचकहैभागकोवाचकहैयातेअवाचकदोषभीजानिए पन्नवअरुकोति
लालनवअधरनवेलीबालवनस्वरूपसेस्यामनुवकेसदहकीचाल १५ इहांआकोतिसरूपपदहो
यवाचआयोहैयातेअधिकपदहोषवाक्यमेंभयो अथकथितपदहैएकसहहैहैवारपुनरुक्तिसोउदा
२ १६ नेरेमुखसोंचंदसबिलागतनमेदमूरीचपुधनेरोसोभैसषीहोघटपटकेबीच १७ मुषसषिपुनरु
क्तिएकवारकहिकैफेरकहै्यो इसमेंजाहीकोउरहाधिककरिनाहीदोनोभ्यागनेहूकियेगनिकाहूअ
वचलेयानेहूनजिभागि १८ मानानिवाहेयालागिछेसोकहेयोचाहिएमनेषणजोतिदिसानेवजायकैस्या
येकिजेगोहिमरुपतिभारीभूलिफरमायसवालकोआयसभंगभयोभयभारीलोयनलालकेलाल
कीओरलषीजवहीमनमेंरिसधारीभूपतिहेरदईअवनीतनऊंचीकैनारिननारिनिहारी १९

यातेवाक्य दोष

गई

दोहा

छंद

स्रौ

चंवेलीकोभीन

नेस्मान

ध्वनभारीश्रैसोकहोवाहीयैनएभारी ... मैमर्षपुनरुक्तदेतहैये

कल्प ११

इहांमृपतिभूपतिश्रुतहक्लिष्टएकितेगहिकैंन्दएभारीश्रैसेचाहिएअथपतत्प्रकर्षजोरचनाश्रा
रंभईसोनहिंसकैनिवाहिपतत्प्रकर्षसुदोषतहिंकविसवकहतसराहि २० श्रीभागवतप्रका
सहमारोकियोनहोकीकुंपैऊहमुखदलदैतमहुनहिंवुद्धिविचारियजेह हहूकरिप्रवलप्र
हारनिरूहवकारियकोटिकटककोगाढवहासमकेसजलीनडविपुप्रचंडसुविहिहिमुंडतोहिंद
उजदीनउपुनिविष्पकेजूषासहितरोषमोषहितअग्रकियतवभंजिभुजादंडचकसोंवानासु
रजियकाटिदिय २१ इहांजोअक्षरकीरचनालेचलेसोनहीनिवहीविहारीमीतननीतगलीतव्है
लैघमिपथनजोरिषाबैघरचैजोवचैतोजोरिएकवोरि २२ मीतननीतगलीतनीतिअनुप्रासकीरच
नोश्रागैनहींनिवाहीषायैघरचैषमसोंजुरैनजोरकरोविश्रेसेचाहिए अथसमाप्तपुनरात्तवाक
हिजहांपूरनकरैफेरिचाहिनरहायतहांसमाप्तपुनरात्तहैफेरिविसेषनलायर२३ तजपियकेमनमें पु ४
वसीतोसोंबोलिरिनवाले मानननजोविहरोसुमिलिगजगतिनेननविसाल २४ काव्यपूरनकियो
औकोसानरहीफेरविसेषनदियोपहिलेविसेषनदैकैवाक्यपूरनकरेनोयोसमाप्तपुनरात्त
कोअर्थपहिलेसमाप्तकियोकेश्रानकोअर्थमदनकियोपियकीरीवामतिकैरेसषितअ–भवो स्रवन्ना ५
भेरमाननजोहोसेवेमिलोअलीपदरंगअग्र २५ इहांभीश्रैसेजानिए अथअहीतवैकवाचकजोपद
जहांसचाहिएसोपदनदीन[illegible]होयश्रोविअहेसेदेषिएअहीतरैकवाचकजायर २६ कोईछंदमैंश्रो
विश्रायाकोपदश्रोरश्रायामैंश्रनबितसोहोयहवाइकोपदउनराइमेंकिंवाउनराइकोपदहवाईमें दोहा
जैहैमोदनमधुपुरीयहतेसुनोकिनोहिवानराहिनीचेदसंगसोंमोकोनसहोहि २७ यहवाननतैसु

सहीनरहीजायरै१

दुषी

नौकिनोदिं ऐसो चाहिए इहां वो है को पद उत्तरार्द्ध मैं है मतिकि लहू वोहै न सषी छनन हि छनन दिं
आदि विरहा सौं सतपत्र मृषियद उषकाहि एकाहि २८ विरहा सौं या पद को अन्वय कि लहू वा सौं
किं वा छन सौं अर्थ अभवन्मत जोग या को अर्थ ॥❀॥ अभवन वाहिए न हों होत है मत काहिए इहां
को जोग संबंध कवि वोछित ताि निकरै नहीं ऐसो पद को जोग अभवनमत तहां कहत है वडे वडे क
विलोग २९ जहां नछत्र मालाल सै अंवरभ लोलषायनासौं पिय को मन वंध्यो छनदा नोयसुहा
य ३० इहां चाहिए जहां सौं नहीं को संबंध दूलाजभूरी जोर लषे नो ॥❀॥ पियदो यनिहाल वंधि
है नौतवरूपसौं नवतन है वरवाल ३१ इहां जो को वोरस्यो न्लल पैं आगे तो पद है स्पो पद सौं तो
पद को संबंध है और देसो सो पद को संबंध है इहां कवि को चाह्यो अर्थ न ही निकरत है है वाल जो
नेरेरूप सौं वंधै गो सो वरनजै गो तव पदै ऐसे नहीं चाहिए जवन व संबंध है अंग निदु तिन पनीय सी
जोत मदेषी नोरि वृहनु मकौं आति चाह सौं मोद न रही निहारि ३२ सो पद मोदा हरा वंध्यो चाहिये वि
हारी मो हू सौं वा तनि लगै लगी जो भजो हिं जाय सोई लेउ रुलाइ ये लाल लगिय नपाय ३३ निहि
के नाम सौं जो भकरलगै निहि काम निउ वला ३ ए ऐसो चाहिए ७ ग्रंथ्यो न तर जहां पूर्व पर सो मेल न हो
हा य न होय हो दोष आगे जानै तैं पिय सौं राषति मान ने तौ सी औरहि ननमषि सुनि है चिन दै कान ३४
ऐसी कहैं न व मेल हो य मानर षै इजगमतनमें होति वडाइ जानि अथ अनभिहितवाच्य अनभिहित
को अर्थ न हीं कहैं है वाच्य को अर्थ अवश्यक हिवे को द्योतक पद जहां कहिवे जोग प जहां न हि क

कमल

तहा

केनम
निकाम

सेद्धि

कवि॰ १२
२

हैं न हो अनभिहित वाच्य कों लहैं ३५ थोरो गुन जामैं रहै न हि मानत सब कोय सिंजिनि बिन ज्यौं भास
कों सो काम सरै न हि कोय ३६ थोरो गुन जामैं रहै ताकों तो लोग मानत हैं औ बहुत गुन जामैं
रहैं ताकों लोग नहीं मानत हैं यह ग्रंथ निकरत है थोरो भी गुन ऐसो चाहिए दोष लेस पि
य कों नहीं ताहि का कियमान थोरो नाहिं मानत अली ऐसी है अनुमान ३७ पिय कैं दोष कों लेस
तो नहीं है पै बहुत दोष है यह भासत है यातें दोष लेस भी ऐसो चाहिए थोरो भी नाहिं मानत
हैं ऐसो चाहिए न्यून पद मैं वाचक पद कों कमती होइ द्योतक पद कों कमती तु मक है तुम
हू कहै हु द्योतक पद और नेंभी कह्यो एतनो अर्थ हू पद सो जान्यो जायो हु वाचक कहिए द्यो
तक ताको सो भिन्न सह ताकों कमती नहीं है एतनो भेद भाषा भूषन मैं सूधे हू पिय के कहै न कु
न मानति बाम ऐसो कह्यो चाहिए यह मोरो कियो मोहन लीला को कबित्त औ जमुना जी को स्तुति
जो के तीर वासी मन आनंदन कासी चिन छावन दुदासी विधि हू कौ राजधानी मैं रवि को कुमा
री ऐसी मोहन को प्यारी सब बस बिताते भारी जम सत्ता कों सुनि बानी मैं जाको धार होति नरवाहि कौ मै
वे थन को लागाँ तन वार भव पार जात ज्ञानी मैं कवे ने कुनीर पावै पुन्न कों सरीर पापरहै एकों मा
सो न बनाबा जे सैं पानी मैं ३८ इहाँ जो एको मौं सा कहै यातें दोष न हो भयो अथ अस्थानस्थपद
जहाँ पद चाहिए न तहाँ पर अस्थानस्थ ताबैलो य ३९ अहीं तरके वाचक मैं और आधा को पद और आ
धा मैं रहै अस्थानस्थ नो एक दो आधा मैं किंवा सत एन मैं विकाने क्यों इ क्यों इ पद रहै पीन दह

चिन्ह धन
नहीं
छेद
नहीं
दोहा

स्यव

मैं पटल सैं मढ़ गुणवंती नाद सुनैं लषै सषि होन है काम हू कौं उन्माद ५० देह मैं पीन पटल सैं गु
ण मढ़ गुनवंती नाद ऐसो चाहिए विहारी सवन ऊं न्हा या सु षद सीतल मंद समीर मन ह्वै जात ग्रजों
वट है वा जमुना को तीर ५१ मुनां के वा तीर ऐसें कहने तो पद स्थान पद राषवे कौं कवि कौ नीत हो क्या
सु कौं ग्रपो स्थित होतो सो नहीं है हमहि मकासही कामें ग्रौर ग्रर्थ कियो हे तहा दोषन हीं
ग्रथ ग्रस्थानस्य समासजह समासचाहिए न हिं करें ग्रस्थान स्य स्तदोष उचरें ५२ उगतिमो उभयवे
र ग्रजहू रमनि मानन करें गिलस धारि कुमुद को स ग्रलि ग्रावली ग्रसिलई निकारि ५३ ई दोऊ है सषि
को चंद्रमा की उकति मैं समास करे तो ग्रौ जग्रन पुह हो तो कवि की उकति मैं समास कियो छवि दोहा
ग्रजुलक्षे सोक वन मेसो लरै जुफेरि यह कहि कहि कानक वासु बरधा सामही हेरि ५४ इहां य
ह कहि के परसराम जी की उकति मैं समास चाहिए ग्रथ संकीर्न ग्रौर वाक्य को पद जहां ग्रौर वाक्य दोहा
मैं ग्राय सकीस्तन तहां दोष कौं कविजन देत वताय ५५ नजो नेहमी वन ज ग्रुषि मोन गहो ढिग कमल
केत विनतीतो सो करनि है ग्रायो समयवसंत ५६ नजो नहीं हो दोष कियाहै यानै दोष वाक्य है
एक कियासौं कैतना ऊ सहू लागे तो वाक्य मानवोत जोनेह कौं गहो ग्रैसो चाहिए ग्रथ गभित ग्र
स वाक्य मैं वाक्य ग्र टावे गर्भित दोष कहन मैं ग्रावे ५७ उ जनन ऊमतहहु भाव की संगति उ घ को
वासु दिनकरि तो सो कहत निहारो कहोन थपैं विसवास ५८ दिनकरि तो सो कहत हैं पथ ह वाक्य
के ग्रंत मैं चाहिए सो ग्रौर वाक्यनि के वीच मैं राष्यो कवित मोड वऊ जे न मने भूषन मयल सं निम

13

कल्ह
रे

हरसवेमेलौं पक्रवनौं परतहैं कोइया नैं तिलगानैं कारनारी फिरंगांनैं दंबसानैं हिमतकोह
हूहहरनहैं साहिकेसपूतमाहसीकवीरसिवराजको ईगरपलौधरापीरनपरतहैं वीजाप्रु
गोलकुंडाआगरेदिलीकेकोरवाजेवामेदिनदरवाजेउघरतहैं ४९ इहांमाडवसोलेपरावनो
परतहैं एकवाक्यहैताभैंभनेंभूषनआविवाक्यकस्योंरसिकप्रियाहूविचैदनपेकेजवेंदनके
चैनरोचनहूकोवचोंकहियेकिहिकाबनिकोइनलायककापरभामिनिभोहैंनचौंअनुमान
नहोंअयियांलषिलालपनोहिनगानिकेरोमरचौंतननेरे वियागानप्योनकचौंतिहिमांनहू मो
हियमांहिनचो ५० पहिलीनकआषिकोविसेषनहैताकेवीचमैंहमरीनकपरीअैसीलालमोहें
आंषिनाकोदेषिकैंअनुमानकरतहोअैसेजानिये अथप्रसिद्धदूतजोसपहिराषेजहांनहांप्र
सिद्धनदेयतहांप्रसिद्धहैंनहोयकोभाषनहैंसवकोय ५१ भैरीकोफेकारसुनिदुंदुभिकोटंकार ॥
मेंडलाअसौवेपिनपग्रपनेंकियाभयकारपाभैरीकोभंकारप्रसिद्धहैंफेकारअप्रसिद्धिकोदुंदभि
कोभंकारयनुषकोटंकारप्रसिद्धहैंयोंसायुं कारडकारनैं मानोंप्रमानवेयिवो सहूतीरवर
।कोविधिकिवाइदोकियाविहहैंकेमकिकरावानिसोफिरेसपुकेजेचैइहासकरमेंलियोसप्रिसि
सिसोनेजे ५२ कमकिवोमहस्रीकोवालविषहूटहैं विहारीप्रमानौंकमकफमकटहलेकरतिल
गीरहचटेवालौंअष्टभप्रापकमपदिलेजोआरंभइलानहिंसकेंनिवादिभआपकमकहनदेअैसे
कमकोचाहि ५४ विहारीकनलयपैटयतमोगारैसोनमुहीनिसिमैंनजिहिचैपकवरनोकिपगु

दोहा

लग्रनारंगनैंन ५५ सोगवामैंसोनन्रहीमैंहूसवेग्रर्थनिकस्योदोयग्रथेकेक्रमकोग्रारंभकि
योसोनहीनिवह्योचंपकगुलग्रनारकोहूसवेग्रथनहीनिकसोलग्योसुमनह्वैहैसुफल
क्रोध ग्रातपरोसनिवारिवारीवारीग्रावनीसीचिमुहदनावारि ५६ ग्रातपकेह्योफेरवासकुह्यो
ती नोग्रागेवारिसहूहनावाहिएघनतमकथमग्रक्रमकोरचनानहीनिवाहेग्रथग्रक्रमग्रक्र ७२
मसदोषजहोक्रमनहोयपदग्रर्थचितदेसुकविजाय ५७ विहारीवेंदीभालतेवालमुषसी
ससिमिलिमिलेवारद्गगग्राजेराजैंषरीएहीसहजसिंगार ५८ मुषतेवालद्रगग्राजेवेंदीभाल॥
सोससिमिलिमिलेवारयोंचाहियेकिवासीसवारवेंदीभालद्गगग्रोजेमुषतेवालग्रासायाहिएदे
वताकोवतेनपावकोग्रोरसोमनुष्यकोवर्नेनमाथोकोग्रारसोभग्रोपक्रममैंजोक्रमलेचलेसोन
निवाहेंग्रक्रमम्मैंजहोक्रमनहोवहेंपतनोभेदकोउभग्रोपक्रममैंग्रक्रमग्रोनरम्मतनकरेंदेंग्रससो
समुकरकुटिकाछनोकरमुरलीउरमाल३ हिवानिकमोमनसदावसोविहारीलाल॥ ५९ यहभी
इटरस ग्रक्रमजोनएग्रग्रग्रमतपराथप्रस्तुतरसकोहोनजहांरससुंविरोधीग्रारग्रमनपरायेसुदा
घनहोभावनकविसिरमोर ६० जोरसकोप्रसंगकरैंताकोविरोधीनहोहूसुरोरसरदेंग्रमत
ईवावाहीसर कहिएग्रनिष्टहेपरग्रोरग्रर्थजहोरामकाप्रसंगरसोहनोरेनचरोहियगमेलोहूचंदननेना
नम इंजीविनेसकेथोम ६१ इहांनाउकावीभत्सरंकोप्रथानग्रालेवनहैइहां श्रृंगारव्यंजकपद स
दोहा दियेंवीभत्सश्रृंगारकोविरोधी पानपीकसोनितपहोचदकोचूंडोहाउनोदकेहरीविरहगज
मारिकियोनववलाउ ६२ इहांश्रृंगारविरोधीवीभत्सवाक्यमैंहैयातेंप्रकासितविरुद्धनहीप्रा।

दोहा

वीनस्रेवमैंकरकीन्हरौद्रिकविहगग्रेजनथोयउरिधायौहैपियकामिनीसवैसिंगारउतारि ॥ ९३ ॥ इहां
आगतपतिदेषिसषीकौउक्तिमैंस्रृंगारकोविरोधीकरुनरसहैयातेंप्रकासितविरुद्धदोषनहींभयो
यहअठारैदोषवाक्यकेकहेअथरसविरोधकहतवीभत्सरुरौद्रभयवीरपांचनिरधारइनकेमि
लतरसनसतहैसुकविकहैस्रृंगार ९४ ए पांचस्रृंगारकेविरोधीहैंभयकरुनासोंनसतहैहा दोहा
सकरुनपुनिज्ञानहासओरस्रृंगारसोंविगरैनिरमान ९५ भयानकरससोंकरुनरससोंहा
सरसविगरतहैपेरहासरससोंस्रृंगाररससोंकरुनरसविगरतहैरौद्रहासस्रृंगारभयइनहिंवि दोहा
हरायुसांतभयानककेमिलतवीररसउहिजाय ९६ हासरससोंस्रृंगाररससोंभयानकसोंरौद्ररस
विगरतहैसांतरसकेमिलैंभयानकरसकेमिलैंवीररसविगरतहैहाससोंनसुचिवीरहूभयातें दोहा
भयकोंतासवीरहासरसविरोद्रभयइनसोंसांतविनास ९७ हासआदिपांचसोंभयानकरसवि
गरतहैऔवीरआदिपांचसोंसांतरसविगरैदोहासस्रृंगारहिकेमिलेवीरविभत्सरसुआयलहिदोस दोहा
भावकासमेंउदाहरनचितलाय ९८ जाहीसोंस्रृंगाररताहीसोंवीररतहाहादोषऔनायिकाकेदेषत
औरसोंलरैतनहींदोषतुहीऔसैंजानिएअद्भुतरससोंरौद्ररससोंवीररसकोंविरोधनहींऔस्रृंगारकों
अद्भुतसोंविरोधनहीं औभयानककोंवीभत्ससोंविरोधनहींपदचंउदासआदिकामतहैगोउसेव
रतिकीरीतिसोंदमसभावप्रकासमैंकह्योहैतहांवारहरसहैंसष्यरसऔहास्यरसऔवात्सल्यरस ॥
इनतीनोंसहित अथसंछेयतेंकछुरसप्रतिकूलवर्नं । निकटपटलपदिजऔवर्नस्तनपदरस
पदकंमीजराउकरनिसद्भावतनांहिंविगारैंचितकहैंअधिकपदइकुत्सुमपरागहिपेरकहेपुन

हति ४ मिलोपियप्रियमतत्यागहूं वचनाननिवाहतवनकीदोषसुपतमतपकर्षप्रगनिवेजोउदंडग्र
तिमुउमाषिफिवेस्तमेगयुग्रवंति १९ः रसइतिमिलोपियतहिंमतित्यागोग्रेसोचाहिएजेसीग्रछरकोरचना
लैचलैतेसोनहींनिवाहैसोपतत्प्रकर्षकेष्वैहैसमाप्तपुनरात्त ६ ग्रनकोदितविसेष नेवनविहारक
रिपियापीयरहिसोयललितनतनकोविवोकितनहिकहैंग्रभवन्मतजोग ७ सवाहतिलषीतालेजोवा
लईहैंतमकोग्रतिवाहतिग्रहोनरेकवाचक ८ सतोंग्रोरग्रहूपदग्रोरमहिंजेहैंसुपीयपरदेसमुनिग्रा
जवातनियललितनहिं ९ हूसमाप्तइति १० ग्रभवन्मतजोगकेउदाहरनमैइहैतसु कोंग्रतिवाहत
याकोरसोइतमकोग्रतिवाहतिग्रेसोचाहिएग्रहोतरेकवाचकजहांग्रा मिग्राथाकोपदग्रोरग्रायामेंदे
यइहांजहहैसुपीयपरदेसग्राजवातनहिग्रेसोचाहिएकेष्पकोहिवजोगपनकहैंग्रर्थग्रनभिहितवाच्य
९ इमिथ्यारीभोहनसोतिनाहतोजरतिसषीतिमिग्रस्थानस्थसुपद १० समाप्त ११ सोलसेग्रनन्वततूप
रगातमैहारपायवेहोललाहरियनिगभिन ।१२ सुवाक्यगतवाक्यजहांषलतिग्रदहनसुहेउषदजोहैन
सिग्रसिहहत ५ हूंदिनदयगमदेषवरहूजोवाक्यकह्योग्ररू ७ कहिवेइनिग्रनभिहितमैथोरीभी
भोहमतिमोरैग्रेसोचाहियेग्रहूग्रभितमेष [ornament] लजपदाईदेयातें [ornament]
होतियनहोहमतिरहैयह हूजोवाक्यकह्योग्ररू हहितसहूहायीकेगजिनमैप्रसिद्ग्रोदेषाग्रसकेवो
लिवेमैप्रसिद्कोसमैहैयातें इहांप्रसिद्हतग्रोग्रधिकपदभीहैकनीभरनहमारोकियोसुहूलिकासु ।
कहिकनेमलवाहिय । कुंभपरग्रवंहित । देगजनाद संधग्रासन । विचारिसयसुकिसोर । बाल
वामी । बहुरिवजवारग्रस्तार योडिनयहहेवा । सुग्रोरिदेखारसवदकासा । सुवाचकजानिलयकष्पेक

कं.ल. रैप्रथमअआरंभननिवंद्धमग्रउपक्रम ॥ १४ ॥ मोंहयनुषहगवांनलसैं नामासुअनूपमैं अनुक्रम ॥ १५ ॥ जा
१४ हांकमहांनलषेस्यकुदीकुचवाचलसैं है सो अमतपरार्थ ॥ १६ ॥ जहां इहां रसको रसं तियानिरयगेह
15 नमज्ञाननामानमांनिवनमैं विद्धमैं यें हूवावप दोषलवु करि कहैं केवकरनि दैं तसुकविद्दं
२२ करै इतिवनकी रचनाविनोवननोयामैं पनत्यकषसोंवी व मोंहयनुषहगवांन इहां हूवक
कियौ आगैंनहीं लिवस्या याते भग्रापक्रम गोद्दनिरयरु दो नायिकाश्रृंगारको आलंवनतहांते
वैद्दकरि सांनग्रक्रम दैयाते अमतपराथी भयो अपदस्थसमासजांननलीजै एइनिर्हेतुविचरणादास
हानेकविवक्षभेवाकादोषनि ताथ ॥ अथ अर्थदोष ॥ अपुष्ट १ कष्ट २ व्याहत ३ औ पुनरुक्त ४ श्रीई कवित्त
दुःक्रम ५ भी ग्राम्य ६ औ संदिग्ध ७ हूनथा रिषफेनिरहेत ८ प्रसिद्धविरुद्ध ९ विद्याविरुद्ध १० अन
हूतें वीकृत ११ नियम १२ अनियम १३ परिवृत्ति १४ विसेसमैं १५ अविशेषमैं १६ विशेषदेसाकांक्ष १७ अपद
मुक्तलीन असलील हूनकहिय तहवरमिश्र औ प्रकासितविरुद्धतिनोविध्यनुवाददानुक्त २०
२४ सोकृतनहोदि ॥ २५ ॥ एकवीस औ तेनि दोषकेनामया कवित्तमें कहे विरुद्धके भेद औरिभोहें अ
थअपुष्टार्थ ॥ लतअर्थ दि जहां नहिं पोषे तत्र अपुष्टार्थ ॥ तद्दोष ॥ ललावे केसमिसीदसनकों
लावे केशादि अभिसारको पुष्टनहीं करै ॥
नकेरयअभिसारके तो मगजोह्तेकुसमैकवकोनदकुमारे रहां लावेकेसमिसदसनपदपद अभि दोहा ॥ ३१ ॥
दोहा सारिकविवेकेउपयोगीनहीं कै आकै पाकरकितिकपोलमन सिहरनसभारयहविहारीकेदो सो
हामैजेपद है ते अभिसारके अर्थको पोषन हैं गोरवरन आजोन मृग लोचन चाह विसाल केपौनहो पदपदन अभिसारे पुष्ट करे है ॥
गोरवरन कवितको पुष्टनहीं करै ॥ यकविनानिपुनगरमैं मृगकामाल ॥ ३२ ॥ गोरवरन आदि पदकविना निपुनके अर्थकोपुष्टनहीं कर

हरकी भार्या हरनी पार्वती कहसोप्र तीत भई ८

पत्रनामवाहनको ... कहे सोर

औरमीको

नहै औरहू समताप्रपुनरात्रभी है ॥ अथ कवित्त ॥ अर्थ कहे केरी नानीऊं जाएँ से कहेर पदोष कहाय ॥ ५
मोगिनि सैं सेवित सदा है हरिनी को वास राजन नंदै है सिषि पत्र सो केवन नैके कैलास ६ जोगिनी जहां
रहति हैं पत्र पोष पत्र बाहन नन्द हरिनी सुदै रै हहीको भी ... नाम है पार्वती की प्रतीति कहे सो है ॥
रहे जन वे अर्थ की प्रतीति होति न लेह हूपत भा सै हैं जैसो है गै सह दोय पद्म पुं को कहत हैं तैसे ई कोई हूस
रोस हहे रहूं तौ भी हूष नन नहीं है नैनमी निदुविम्हन तनु नमो मैं गगन गंभि जो हूपाक पिनिषभवरके
मला सोहति दुगम ... गुवान के भीती नने चहे चरन नैं श्रीगंगाजी है कमला सुंदरी स्त्री को नाम हैं पा
र्वती की प्रतीति कहे सैं सरस्वती अमित पथ सो चलै वीच काव्य असमान सोहति हैं तुं स्वस्वती भाव
नि सकल नेदान ८ श्री गंगा मीती न पथ सो चलै हैं सरस्वती अमित पथ सो चलै हैं यह अथिको
ई सरस्वती नदी मात्र को नाम है श्रीगंगाजी की प्रतीति कहे सों थजलदी प्रभु दील सैं नीके नवीन सुनैन ॥
विहरत सषी वसंत ली हरि है हलस है प्रेनं ९ हलस काम को नाम नहीं है सो मारवा है काम की प्रतीति
कहे सो केवि प्रियारानी ववने न माता निमि पोषन पिता ओं प्रतिपाले केर प्रभु त्रिभि सासन कुपति
देवी हियसों भैया ओं सहाय करै देति है सषी ओं स्वगुरू ओं सिषावै सो षहैन जे रिजिय सो दासी
और टहल करै देवी औं प्रमत्र होय सुधारै परलोक नाही नेने काहू विषमों काके हैं अथा नमर क्षित
के किन कछे हैं और निसेनेह करै क्काड असी तिय सो १० जो दोयतनेक हथा लगावे नार सुभाव होय ॥
जीव मात्र सो हेत नेरिकें उन नीवन को माता पिता आदि जैसे पोषन पालन आदि करन है तैसे यह रा
नी जीव मात्र को पोषन पालन इत्यादि करति हैं यह अर्थ कहे सो निवरे हैं ॥ १५ ॥ सुवर सीना हू चरन है पग

दोहा

दोहा

क.प्रि.
२८

16

लछनभायरामचंदहोरादियोसीतारामसहाय ॥ वनमैं जायथे जहांरामजीपायधरतैं तहां।
श्रीसीताजीपावधरतीमैं धरतीयासों अर्थ लियाहोराकेआगिलेपावंपावसोंलगेहैं अरुहोरादोय
पावकरिकैं श्रीलछनजीकेसमानहै लछनजीउनकापावमेपावनहीं धरतेपावपैलायकैं
धरतेयातेहोराकेपीछलेपावफाटिकेपरेहैं असेहोराकोरामचंदहुतानेदियोयहअर्थक
हसोंनिकरैहैहोरानिकस्यातैं अर्थ व्याहृतंलतिनिंदापहिलेकोरकहैंअन्यथापेरिव्याहृत
हैइ वचनमहांकविवरनीकैहैं ॥ १२ पहिलेकोरपदर्थकीउतकर्षताकहैकि वान्यूनताकहैंताहीं
कोंपेरिअरतरहकहैं विहारीपियतियसोंहसिकेकह्योलषेदिठोनादीन चंदमुषीमुषचंदतैं
भलोचंदसमकोन १३ इहांनायकानेउक्तिनायिकासोंहै चंदमुषीचंद्रमासोंतेरोअरुचंदका
एकमुषहै इहांपहिलेंचंद्रमाकोउतकर्षकह्योभलोकोअर्थविपरीतलछनाकरिहीनता
कियोचंद्रमाकेसमानकियोइहांचंद्रमाकोअपकर्षकह्योव्तातिकोकिवानिंदाकोनिवाहनहीं
कियोहैरिसकामांमें आरअर्थकियोहै इहांबीवानीकहांकनामैनुकीनारियुहैमनकोमिनिज
तुहैवानिकोवातहांरि १४ इहांइहांनीआदिकीनिंदाकरीनायिकाकोव्तातिकेरीफिरतिकीउतक
र्षताकहीहैइहांअनुहारिकहैंव्याहतलेजेउसुरनहैं तेंअधिकतोकरकलपद्रुमसोंभजांहिलषैनहि
रहतहैंधनलैनेकोंभ ॥ सुरतरुकीनिंदाकरिपेरिउतकर्षकह्योइहांव्याहतंव्याहतकोअर्थप्रति
हतहूधनकोनामव्याहतहैरसरहस्यमें अव्याहतलिष्याहैएतनोभीसानतोहीदोहाजाहिसादर
कोजिएतातेजमकीचाहैताकीसोमनककहतहै अव्याहतकविनाह १५ अथअर्थपुनरुक्तिचैन

दोहा
दोहा
दोहा
दो ३
॥

चेतपैर मैं सो नायक जो मान करे तसवीर २ सो मोको नहीं दिषदा

चमूपति काम को जोग मैं फेरयौ आय मधु मैं रमसौं मान जो करैं न सो हिलषाय १ चेत को मधु को एक अ
र्थ नामें रम सो अरु सो चाहिए बिहारी लिखन वैठि जाको सिवी गाहि गाहे गरव गहैं भए न के तें जगत
के च ल रचि रतें रे हूर १८ गरव गाहत को एक अर्थ है मअरी भी अर्थ कियो है अरु कमँ ताहा आ
क ममा में नाही सोउ कम कवि को लपि जो ही १९ दीजे मो को लाष पने कैपन दई कोरी अरु सदे
इग जदे हू कैं नो सो करत निहार २० पहिले करी रमा गोपी कै लाष मागी थादि लेगज मागै गजबड़त
मोल को है पहुं अर्थ पी कै अरु सम मांगी अ मैं पसादे जू नहीं तो हम पी यादे जू नहीं ता मो दरद हैं रूपादि ना
निषे विहारी मान हूं दीने मोष जो अने क अर्थ मन निहारियो या वायें दी तो षतो वायो अपने गुननि २१
अपने गुननि सो वा यो तो मा रो गुनानुवाद करन रहो ष हूत वे सवनि के मन में गुक्ति सो भक्ति हू ले
भई मुक्ति केवल ज्ञान सो भो होन है अरु नो वश्र कानि के ताज सो भी होति है या ते पहिले भक्ति मागी वा
हि ए अरु थ आम लो गुनवार अर्थ जो भाव अरु मन तें वाहि अर्थ हि ए २२ विहारी विष मह पो दिन
को को नेन लाजे ए नेती द निवारि अपार अगाध नेलमा या मह पो षिये २३ मासों में दूपको पिआ
मीन को उक्ति है रहो मह आ मीन न नहीं है अरु ये हिये सदिये जे दह से रे दृ पद अर्थ हू पनै दोहा विहा
री कनो नेह कारमा हिय ने कुल पानन ताको विरहत वैरष स्याम अवरमें हू ड को सा अरु क २४ रहा
विरही को उक्ति है कि वा विरहिनी को उक्ति है यह संदेह भाय दृश्य ताइ समो जहां सपद ऊपदे नेच
न चांद की चादिने जरत तिक्ति ये म चत २५ रहा भी वेस जा नि ए है दो अर्थ पिक पदभी दई हो विभा
व को व्यक्ति कएसो काटे पनदो भामें पी कै संदेश पकह्यो है सो मह कोपरि हानि को नहीं सहैं मो

कल्प:
२ 17

प्रसंगसोंजान्योजायतोदोषनहीं ॥१८॥ अथनिर्हेतुकविकहतनहोनृहिंहेतुतेंनहांदोषहैनिरहेतु २२
सोभाहेदाविपनकीनखुनोनलग्रमिरामेंग्रेसाघ्रननिजिकैंसघीवामियेंग्रोरैंग्राम २९ इहांकुल
वधूकोधमैनहींनिवहैकिंवाधरकोकारनहूग्रैकुलमैंमनग्रासक्तरहतहैकिंवाव्रजमेंग्र
सुरकोउपद्रववढ्तहोतहैइत्यादिहेतुनहींकह्योननउतिलेनिंद्राभजीभूषभजीतजिदेहया
महोतहैंचाहतीवामहोतग्रकेहूर २९ ग्रोहासमथुरागापतवतेगहहेतुनहींकह्योग्रथ
प्रसिद्धविरुद्धग्रोविद्याविरुद्धजहांप्रसिद्धविरुद्धहै ॥ लोदेसालविरुद्धग्रोरोननहांविरुद्धहैग्र
सिद्ध ६ ग्रथप्रसिद्धविरुद्धकालेसरसीगैतकविपिग्रानंदकोफलग्रोवतिहेतिप्रगटहैनसो
करमैवुरकोफूल ३१ लोकमैजानेंगोग्रंथकोसाप्रसिद्धकहाचैनासांगोविरुद्धसालोकोवि
रुद्धवरकोफूललोकनहींजानेंतहैग्रोकविलोगनिनैनहींकेहूववरन्योंग्रोकेतनोवातलोक
प्रसिद्धिसोंविरुद्धहैग्रोकविवरनेंहैतहांदोषनहींसोग्रोभैंकहेंगेकेंतुकिंग्रोमेगाभोगिनीमहि
धावडनरमतजानीमेंडरतनेरेंहूदूनरपगरपग्रोतिविज ३२ सांपकोग्रोतिविनता ॥ लोकमें
प्रसिद्धनहींग्रोकविनिभीनहींवरनीसालेतिहिनदलालसौकेहूनिकरतिनोदिंमननमुनेना
नोकसीकोपुभोपुभोजियमोहि ३३ मनमथकोपुजषफलकोबानफूलकेमनचांमोरनिकीक
विवरनतहैंनेजाग्रादिग्रस्त्रकविनिनहींवरनेंहैयाकोग्रर्थविहारीकोहेकाहमैमकासतामें
ग्रोगिकियोहैरासिकप्रियामैंहललनीकेंडदाहरनसवदेहमइंउगपमइत्यादिकविनकेतीसरा
चरनेंग्रलिग्योंसलिनीनलितानजिकैंकरिनीकेंकपोलनिमेंडितनेमैंकरिनोहथनोकेकपो

न

लनिपेभोंरानहीं॥ वैठेलोकविरुद्धकौ॥ रीकेकपोलनिनीकै॥ ग्रीष्मकीभोतिर्योमोग्रंथेकतेंदोषनहीं॥
ग्रंथविद्याविरुद्धसपीग्रमावसरैनमैतियसंगकियोविहारनलमैनपंकजनयूथयमैद्दार्पनने घोरा
कुनिहार ३४ ग्रमावसमैरतिपमैसाम्वविरुद्धग्रंथपरमैनपंकजनकामसाम्वविरुद्धग्रंथग्रो।
तिविरुद्धफलेगलोकदेवदेकलेमहोगुलावचंपकमेगुंजनतमेवरनहृसमपिंचलोलेनाव ३७
करेवगुलावएकसमैमैनहींफलेंइहांकालविरोधहै॥ ग्रीचंपापैभौरनहींवैठैयहदकाविसेप्रतीं
यविरुद्धमलयरमेंभीडाकरेकलभमदलामदेधायमराकोमारततवानसौमुनिननमोदवडा
य ३८ मारवाडमैमरोवरवरनैइहांहैसविरुद्धकलभहाथीकेवचाताकेमदकहैइहांयुवा
स्याविरोधमुनिमृगकोमारेंहैइहांक्रियाविरुद्धकविताविकसतिम्यानतेमयंषमूलभानुकौ
सोफारेनमतोमैसमायुद्दतिकेमाननकौलावानिलपंकिवडवेलिदिलेकेनीतिविसौहदहांहैविका
वदेहरतिकौमालकोलालयूनेपालकवेसालरननरेगथीरकहोलोवकालकोनोनहीकरवा नहबारको
लकौमनिभदकटकेकदीलेकेनकादिकादिकालिकासीकिलेकिवलेवादेतिकोलकौ॥ ३९ किलकमारनी
किलिकिवोकिलकारीराजोहोयकहलाकरनेघनादमोनिरप्रमानप्रमीडुडीमूविपरायेव ठनतकरवारमें। रोठ
रमरहोप्रारेकिलकनेमानतकपोलोइहांकालोदेनवभजडेगोमेकिलकारीकियानहींमभ लपकनोनहीतिवे। सचेतरनमैहोतहै
वैगानेकियाविरोधग्रोलपाकेलागवौपहभौकियासचेतनहींमैसभवैहेलपि लागिवौलच
किलागिवोसभवैहैविहारीहाहावदनउघारिहैनसफलकैसवकौयंभजसोजनिकपो कमलकोनिवहमाजो
हेतीसमैकोहाय ३८ जोदिकालमैकमलफूलैहैताहिकालमेंचंदमाकीसोभानहीं॥ ग्रोजा एकसमेमेसोमानहै

केश्न
१८ 18

हि कालमें चंद्रमा की सोभा न होइ कमल की सोभा नहीं ईहां काल विरोध दरि प्रकास में औ द्विग्रंथि
कि यो दोष को उर्यो है कवित्त को नविला लागे गुमकान प्रेम पायो लाने लाज भरे बिलसत ला
यन अनेगनि भार परभुज कौ फूलावनि चलनि मंद औरं औ पउ [illegible] जनित उरज उतंग गति मति
समसेना वन पवन की झकोर आये बादल सरस संतत ललन रंग नेनां निपट अमल की फलक फल
क निलागी काई सी गाई है लरकाई कढि अंग तें १९ जोबन को कलकी सिंरतिक लकी क
के लाअनेगनि तन मन मोहनि बंधु रानतन उमगउ नेगो ॥ ५: मुग्धा के उरज उतंग अवस्था विरोध ॥
कवित्त है रोज ललन में कमल कली जुवद है अंग में उरज निउ दो मोहदेह गाई सी योग कहै सोपल सी
मदहाई वे मनन कहाई ने सोलसिका ई मांक मनललिपि पाई सी स्यामा के सलोने ननना में दिन द
कमां कफिरा ई बिदने मन मय को उद्दाई सो सेम लिलने से तुमन पाउ गनते सोसि तुला
में जोवन किलिसि [illegible] नेको ई सी ५१ सारदह वसन को सो मास्या मोसि अनुवती है ना में वयसंधिक
है अवस्था विरोध दोषजानि पओ उरजनि उरहो नी हे दशा ई सी ईहां उरपद अधिक है ताके कहे बि
नाविगारे न हो सो अधिकपद है कुच तो अहोवि ये होत है नो औ विडोर होत सोयतो उर विसेषन दी
जिए सेभव वहन [illegible] है रहत है रहे [illegible] व्यभिचारे न हो विशेषन सार्थ है कवि निकियो निरधार ५२ वि
शेषन कहि ए भेद के ना सो भेद जाति परे ने से कमल वद्ध तें रंग के है कमल विषे नील रंग को संभव
है नील रंग को कमल होत है औ नहीं भी होत है नील रंग सो कमल व्यभिचार है अंसे सनत लालयो जो
नीलकमल ल्यावो सित कमल ल्यावो अंसे विशेषन भेद कीरवे के लिए दीजिए है औ मधेर हर्य

कै ८
ली
रस
सी

स्यावै मपेट संष स्यावै अमो विमेषनन हीं दो तिपट्ट धमेष कौं मेनन ता सो विभि वारनहीं ह्व षमेषवे
नटो होन नहैं सुमनपरागा तें मैं इहां अयि कापदनहीं फल कोरज कौ सा तुं पराग पेज में फल में वडु
तेजा इरन नहीं हां शुजा दो ना में कदोष मेरदे तौ जा हरे हां श जहां कछु काम न सो होय तहां विरुद्ध दोषन
हीन सदन नन अथ अरि वृनि नि कौं आंसू वदन अथा गंठौ र वो र में देषि रामरूप पे रमादि तेज गो ५२
असें आरवो र भोजा नि ए अथ अनवी कृत एक अथ में वरनि पर चैन अरथ नवी न अनवी कृत नहैं
दोष है भाषत हैं परवी न ५४ सदान फल ते ता रे इ सदान को लेके से सदान मंग सदै ले आ सदान
वा नेवम ५५ इहां सदान सदान एक हीं एक हीं न रहे के सहमी बाका पुरन कियो न वी रचनन हीं
करी अनवीकृत को अर्थ जहां न यो नकियो जो असे कहै यह ललि षिमनो र नेसें तो सदान यह पदको
छोरि के औरै अर्थ कियो न हां दोष नहीं न सा को मरद कौं ने सफल ते फल तिन सो मानन मद है
ते मा जसुना ५८ मिलाप यसों मृतिमल अमो कहै दोष नहीं इहां नहीं रचना करी कृविते ध
व ताने वह है ति हि मान नो को निहिं देह पगी मृवगोपनहै पनरे दूग वे तु इंदरसें परसें कर वे नु म
हा यन हैं पन है कविता कुरंग मवदहैं ति हि अलैं ललौ मृगलो पूनिहैं पन है पनि तें पन ने औ दो
न तेजी हैं को पन मा नू पनो पन है ५७ इहां पन्न पद सो पुरन कियो तो असे कहै तो दोष नहीं पन न
है अलो न मिलो पिय सा ते ह था वलि हप आजो वचन है इहां हम रो अपके स्यो अम षमें सा हं ति हैं जा
दे इ मि का सो रैं तिलक अथा सा देति है ज हैं कनक हविसो है नित्य पओ वाग ५८ इमि का ओर
ठी अभं गनाद तिलक र अ आं अंग में तिल हा न तैं औ हं छोव सा प भी कनक सो नाओ चंप आ पन

काव्य
१५

तैहै यो अनेकार्थ में है सो इन नाम सों प्रगट कियौ मोह नि मन तिय वाग अं सो पर दोष न दोऊ हमारो कि
यो मोह न सी लागि यके का कवि तंत पके तो करौं घर नी में फिर सोच न कोन परो न गाको दिजे यौ ॥
सब देवतनि को हरि सेवन के मन मानन तो मोव रमो गि लियो गुरु ज्ञान गो है या है ध्यान रहै मु का
हा भयो मो गाय अनेक कि ओड़ल सै स्तुति मो न हि का क वषानु तो ता को पषान समान हियो
४९ कहा भयो या सों अनन्य सबको है ऐसो भी उदाहरन जानि ये पंडुल में इत्यादि ओर ग्रंथ
नि मो ता सों दोष न हीं अब नियम स्थल में आनियम से ता नियम को बाद करें न नियम तिवा
ह ५० चिंतामनि आभासक रिपत्थर को मनि की न नंदा कि यें रहि नाय गो पत्थर पनो अवी
न ५१ इहां आभास हो क हिम नि कियौ असो नियम चाहिए न होतो चिंतामनि के आति भो गु
न पत्थर में नाहिं ऐसे मेते राजा के आदर मो गुनी है पंडित नक विवाद वनहै आदर हो सो ऐसो
जानि एक सुजान रान वानि म के एहां नैन विसालति मह मेरो प्रिय सदा स एवं इन उदमाल ५२
इहां न मुख मेरो प्रिय असो नियम कियो चाहिए यै नहां अनियम कियो अनिह नियम सो अनिय
में विलम्बन मभी नाय कै वैठो स्तन धामे वरन त्ति रूप तकामिनी तो नम हा हृनो काम ५३ तम हीं
नाय कै अर्थ सो चाहिए पै विरुद्ध मति कृत्य वोइ होन हीं विरुद्ध मति कृत नहुं ज्ञानी वल्लभ इत्यादि में अर्थ अ
नियम को वार में नियम जहां है वार अनियम को नियम करें तहां दोष जहां विशेष अविशेष जो
करें न है हैम पोष ५४ आवर्तन वनामिहे नील सरोरुह नैनें में वलतरे के मुहं न्तम समी है ऐन
५५ आवृत्ति र हां जो रोका चाहै सो नियम करावे है एव शब्द के अर्थ में है अधिक पद है सो अर्थ

निर्मै

दूषन मैं बरनि लिष्यौ अधिकपद है मैं बरना की और ग्रंथ की विवक्षा न होय है है इ दोष हत है जो नाभी कू
पद हू और बातें ता समसे वर्नन को कहा बाय भयो मरसों मैं कूप भौ होत है [illegible] होइ है ते रावद नकमल
है नगापा नितनानै ते राल पद दिपय मनने वयातन आनि ५८ सासि होइ है इत्यादि नियमन है चाहिए अब
विशेष स्थल मैं अविशेष पहि है नीलनि बालनि यरविनोलम कोहम [illegible] मैं मैं नवसकरि
पियपै आनि यारे ५२ राति ता चोर नी भी कहा वे औ ग्रंथ रोभा कहा वे इहां अ पैपी रानि विशेष कह्यो
चाहिए इहां विशेष की वोर अविशेष कह्यो मिवसे पतिनी सो मि लो रहे । बाहू नाह अौन दोनो को कू
रावियर यौ कनक [illegible] को पान ५२ तेरो करय है विशेष कह्यो चाहिए ताको नाव जे मय [illegible] नैव
ह्यौ [illegible] कापूरको है मसपुनि दहते रपसोवकछनहूर ४९ तो सों कछु नहर अैसो विशेष कह्यो
चाहिए अथ विशेष स्थल मैं विशेष अविशेष स्थल मैं कहै को इतकोति विशेष चाहत है ते ग्रंथ को
सो काकौ दितरहै लष ८० कलो पायपवरहो न माषि रहत ननेकु सभार को है को त्यपरति है म वनन म
पनमार ८१ आनि शेषि कि बात है लषि अमा सामान्य कह्यो चाहिए करय है विशेष आनन हो क
ह्यो चाहिए कर ते रोसु रस है औ विश्राम हेत रन हो असा ग्रंथ भासे यानै विहारी विडे कहा वत अधुको
गरूव गोपीना यतो वदि हो जो पवि हो हाय निलषि मनहाय ८२ बाहि नि रषि अैसे चाहिए इहां न ।
षमिषवनन विनाक ह्यो पानै दोष गाव कहा एतो करै दमके पअया नरामक टकमै माविदे एकुतो
दिहनु मान ८३ इहां हेतु मान यह विशेष कह्यो न हो चाहिए एक कहु भय दलहि जान अैसे चाहिए अ
थसा का को विहारी लोभ लगे है निकपके करो मोर जुरि जाय हो इनवची वीच ही लोयन वगे वलाय ॥

कवि
२०

८४ हो विकी इन बीच हौं वे ची हमें सब मिन हौं ए तन नोन कहै तो होय हू परन हौं लगै मो को वे ची मो इन वे ची
ऐसो चाहिए हों कनौ है ॥ असी नैहो न कहौं पिय जाहु न वे पाव सम में परदेस हौं री फीलखिरी ॥
जिहा यथा तर युन चातक बरहीप हु तें कोकिल कीने मान सावन में मम रघ सम र अब न तजि के
संभोग ८५ कोने हो तजि भोन के संकी होर छंद के लिये कौ ॥ जैहो एतना पद की आकाछा
रहति है न एन पदसों मिलतो यह उदाहरन है औ बिरह एतना पद की चाह रहति है जहां ग्रंथ को चा
ह रहै सो सो को जे पद की चाह रहै सो न रहन पद एन नो भेद आयो कद का चलो पकै हटो कि सक्यो न दि को
यह आसागर सबो स को सहे डर पिअरि गोय ८६ इन सो कह सनी वचन एतना ग्रंथ को आकांका रह
ति है निहेत ने मेहेत न हो रहे अथ अपद गुक नहो ठिकानो तजन न को तु हातज म्या कोय वा क्या है थे ।
कौ हान न है अपद युक्त पद जोय ८७ जहा हरन क रानै न हौं सुवन को रे औरि ठौर करन हो यह दोष
पद कहिए स्यान अपद कहिए न हो स्यान न हो मुक्त कहिए को … लोम वद को बाद नी राजत
विविधि सनो … लीसगापिय के विरह हिन में चित न दे बीर ८८ विरह इहां ई वाक्यार्थ पूरो कियो चाहिए ॥
हिन में चित न है वो … अर्थ पाहि लेकसो चाहिए ए दिन में चित न दे बीर अलीसगापिय के विरह असी
चाप सम समाप्त पुनरोत भ … वाक्य परो को फिर वचनन को विसेषन दे … नो अजाग पद हा हरी ग्रंथ
राष नो यह भेद बिहारी के हेतु वचन … विरह विकल अ जला पति यन को अस आसहिन
स आगनि बोलत नाय ८९ स आगनि बोलत नायकि येन को अस आस हिन अ सो चाहिए पति बोला
को अर्थ ते बोल जे विरहहीनी नें कहै तो हन गोपि ललाट को गलमान वकसदा यमलो मम अभिसा

रको मषि चल दीलन लाय २० दीलन लायस विचल ग्रैसो चाहि एवी मलरी को हार सो मानव ग्रथलज्ञा
वंजनक ग्रर्थ ग्रसील ग्रकरुभस्यो किदृदि चहनमा रनकौंन सेकाय ग्रैसे उद्धतपरतदै तुरतनहीं उ
ठिजाय २१ रहा ग्रसी लुग्रर्थ भासै है ग्रथ सहचर भिन्न मेलबुरे को सगा सहचर भिन्न ग्रभेद २२ क
विनपानविन ग्रातनके मानविनदानानिग्यौं रागविनतानतनिदिवसविनधूप है जैसे विनानर
नैसैं करविनाथर जैसैं परविनापक्षी जैसें नारी विनहूपहै फासीविन वगारो सी विन वदपारजैसे
सैं राजो विनरीति ग्रह काजो मुष चूपहै विना धन दानी विनमूरता कृपो जैसैं पानी विन हू एसाव
धानी विन भपहै २३ सावधानी विना राजा की दीनता कहते कै गैसी फासी विन इत्यादि निंद
लोग कहते नेंन चाहि एसहचर कहि पंग नी सो भिन्न ग्रवरित रहे के रे दान भसा हन है व द सो विद्या सो
हिनरा जगनि को सोह तिलाजविन कुलतिय लसै सलाज २४ गनिका सहचर ग्रक्को न दोकवि
प्रियाँ चरन धरनविना कहै नीदसहात न सो रमुवरन को दु दनापि रै कुविविध चारी चोर २५ इहां चो
र विभिचारी ग्रक्कोन दोग्रथ प्रकासन विरुद्ध सुप्रकासनजु विरुद्ध है भासे ग्रर्थ विरुद्ध भासन कम
सैं न दि ग्रर्थ विधि ग्रज्ञ कनदि सु प २६ जैराजनृदिनो संपतिभाजे भूपसमाज कहन वालिभो
गवो बलाराति को राज २७ बलारातिके राज को भोगया सरीर सौं न हो संभवे यह विरुद्ध ग्रर्थ कवि
प्रकासित कियो ग्रमनु परार्थ शाहदो पहै सह सो निकवे है यह ग्रर्थ सो निकरे है एतना बोचते गोवक
सीदा मगरद वसो रहि ग्रा घतो सतराजो भूपत्र बकेच काहे को पाय २८ ग्रथादो दामेत्तमसो लुद्मी
जानरदो यह विरुद्ध ग्रर्थ भासैहै राजाजो बलसुत कछन दो चलेपर ग्रायो वोदरे न विरुद्ध ग्रर्थ नि क

प्रसन्नता

वि छोलि... नहीजा

गनिका सहचर ... कहां ...

जुद्ध के

पितासहजे ... पैं

कवि०
२१ ३१

सौंधें यौ नरदमन घुति पीक की लीक यो लघ्र लोल नभ सो धर कान्हु दियो लल चौहें सेनैन लजौहें
मै वैनउ गौतुर छीन व रूप कि पोर ज लागी हगान मनावत कैं हौं न प्यसि आनादि रूप दियो जगपो
लालन नाही कौं भाग जदौ हौं चु सौं रसिकें रमरंग गयियो ७९ इहां अर्थ करनमें नायमें नायिका कौ
रूप भासत है ऐसौं वेरही वनदौ भाषा मूषणा जाड्द ई सुरिजन म दैचले दैसन म जादि ग्रथ विधि
अनक सो टानि चाह लल लोनि का म पूकी मुक विषानि लोचनसौं चिगु लावसौं सोइनि यमुष दानि ८०
सौं घटु ठौ गुलाव सौं लोचनसौं चं अ सौं विधि वादि एजो हीरा कौ हार ना भी नाइ हौय सो लल नि का
मौति कौ जाल लेति कानाकौ नाम मक्कि कौ हार के ठके वीसनै मुच के ठहूगा वा लो चंदन लायन २
हाय च लित इहि वौ लन नंदलाल ८१ इहां ये कैं चंदन लावैं है च हू टि म दम के दामि नी वा लन मो रस्र
के है तिय वैवी ग्रनुलानि पियें करनवि सारसनेर ८२ सनेह कमि के विसारत है ऐसो चाहि येत हा
उलटो कह्यौ विसारि कैं सनेह करत हैं भाजन कमि दोतिनि कियो धायें कै देव पूजन नहीं ते नाकियौ अ
सैं जानि पंच प्रपंच ज्ञ वाद अज्ञ न कौं नहां विसेषन हीं न है इल्लिन अर्थ विरुद्ध है अनु वाद अज्ञ कौ भाष
न कवि कुल सहू ८३ विषसौं दैरचे षहदकै मसि वाडवे सन वास मनि मारें अवला निकौ जा कें पियतु
हिपास ८४ इहां प्रस्तनअर्थ विरह हिनौं जो अवलानि कौं मतिमारैं नदौ च हू मा कौ विसेषन कह्यौ विष
सो दर आदि अनुशारके हिये कहनौ सो अज्ञकहे औ पूथीनकौ सौ चैंद इत्यादि कहनौ जो गायौ॥
जो निरूप जगरैं सदा तिनरंगु नौ विषयनि विहीन अन तनु तापवति नानि को दहे करो सुपलौन ८५
जो निरूप निरगुन विषय विहीन कहिकें अनतनताप हरौ यह कह्यौ सो अज्ञकै मोहन मरनि कहनौ

रजाको वचन

मोहती गुलाबसौं ही चलोनहीं वते पहरि लिंडके हैं ॥ ५

[illegible]

श्री ॥ जोगप यौं ग्रंथ संपूरन कीौ हूत न बरनि तिन जे बरनै पुनि जु होंय स कपुन सो हूत तहै तहां ॥ ८६ ॥ पर पति देव
न ज गत न मेल दै कलं क सु नारि देय सा चा तो सो क है स ता ना दि त निवारि ॥ ८ ॥ पर पति को दे पत
कलं क लागत है यह वा निके क्को इदिपी फारि बा हा का ग्रह न कि यो म दा ना दि हेतु निवारि कौ न
का म कौ रूप है जो सिर भो गन होय वह देभ ये गुन सील मोरीक तदै सब को ग्र ॥ ८९ ॥ जो सिर भो गत
होय ते रूप न क माहै यह ब र नि के को ग्रा फ मे ग्रह न कि यौ वह भये ग्रम जानि ए ग्रंथ से क पतै
ग्र यं दो ष क्क ये पो षे ग्रंथ न ज हां ग्र पुष्ट ग्र थै है ह ष न बित त ब्या म मे दोष ३ ॥ मति मान क हे कौन
कै एक हु सो ल ये संग क मैला ह ह या कपि नि दा स्तति क स क है ग्र न या व्य द त है दे ग्र पि ज ३
दे न न ये तिकु कल पन हुँ जि नो है तिक ल पन सु पुन रुक्त ४ निप क ज ॥ चर न सम मति के ज्ञा दि ३ पु मा
न क रू ॥ ९५ ॥ या वर नि ३ हा बित न स है मान का श्रि व कोउ ए कारनहो करहो ग्रथि क पद दोष को
न हो य कुसुमप रा ग ३ हा कु सुमको प रा गको ग्र ये ना न्या न व हो दो ष को ज्ञान भ यौ ३ हा नाज वग्र
छो कि यौ बित त व्या म मे ३ ३ दो षि मान को उ दि त व दो ष को ज्ञान भ यौ न हो न्हे र न ना न्यो ज यं स ग्र
धि क पद नहै ग्रो वि ल व सो जा न्यो ना य सो ग्र पुष्ट ये त नो भेद है बित त को दो र वि स्तर भी क है दो ष
न हीं व र पाते ग्र थ दो ष क मैला सुदरी सौ को नाम है पार्वती को प्रतीति क ए सौ स्तुति क विनि दा क
रे कि वा निदा का गे स्तुति कै जे न हो व्या द त ३ हा निंदा क रि ता ही को उत्कर्ष क यो मा ति ने है न्ते उप
मान क मि श्र सो या हू प कु ये ह क म प म है क मना दि श्राम दो जे कि है मह रि ते वा जा ने मा व ग्रा म
ली लो न्नपा यि कर्वि न तन स म प मो दिय ॥ ७ ॥ निमा कर कि र न न भा व न नंदि का र न निर है त ॥ ८ ॥

[illegible]

२

[illegible]

कवि
२२

ज्ञानजेमुनां सुहावतेसु प्रसिद्ध विरुद्ध ९ विरुद्ध जगगुरुपाक द्रिषियवति करडै विद्याविरुद्ध ९
रजनीश्रुषथको मिसनाननआयेमंडड्ड हमहति पदिलेवडुनपैदाउसिकोनोदससोमोतियोके
श्राममोगैयातनरदनकाश्योलोतेउ हुमेनरवा ज्ञानेइस्यादिषदेकाविनामेंश्रावेनोश्रथग्राम ॥
निसाकवाकिरननभावतेहेदाग्रुषकोउसिके हीकोयदसंदेहे ज्ञानजेमुनानसुहावनइदा
श्रीहुसवस्वदरतनेहैयदहेनेनहोकयो श्रहैगाविकोजलमेंपैठिस्नानवेनकारनेशाश्वविरु
हुकेपपकश्रुयेमोगुरेवाक्यश्रनवेहित ११ हूथनेवजेमासवरपकैथनेसेनियुमसेवायश्रनिय
म १२ करेमेगालमहूपनिंयलश्रनियमकोनिषम १३ करेउपषचेदेनश्रनिसवृविसेपमाहिद्र
विशेष १४ जहांहसतिनोरिमनहुनद्रतियश्रविशेषवरजुविशेष १५ नेश्रहूापदेषिवसुहा
नमिय ॥ १६ एकरानिवडोसहमोवाक्यसनाकियोपातेश्रनवोहतवमहीपति श्रसानियमचा
दियंनहांहूपदश्रनियमकह्योहैरतननारइहांकोईश्रापनोनियामाकहतदेहहांतमसनको
स्यातहोयहेविशेषकह्यो चाहिएलवहापदेषेहोहायधदविशेषनहोकह्यो चाहिदियग्रेग
कह्यो चाहिएंहायसंदरहेश्रोगेश्रननहींश्रमहोहायनिनेशषेष्याचोहायानिविकायहोइस्या
टिकेपसाकोउ १८ सनुहंचाहकहा केसेविनिहादिनेश्रपरषुलु १९ जहांवारपुरनकोपुर
नेश्रननवनेमानद्द पदेनजिनादसंगाति हूगे चितहितरषश्रथमराहकरनोश्रसहालगेश्रसलो
ले ९ लघुसहचरहुपअ १४ सगोश्रमिलाहितनसकरनिजगुनलसतेउपकासितजुविरुद्ध
२० लयमूर्मिजीतिसेउरचहल ॥ ४४ साकोकइंनिकेसाविनदेदिनरहो विगहेको

प्रथवीकोजीतकेसरदपरमहिमानहीं जीतेजात
मतयपेग्रापूरेतेनै, पातेदोष १

द्विजकेहंग तमकाह्योकेवरनन
नहिवनेदकमयो

कीउक्ति नमें बिना एता ग्रंथ की चाह रहे है याते भाको कजे हों प्रसन करि बे कों गेरन होन नहीं करैय्य
न्यवकैं विद होंउ होइ प्रसन करनौ यातें ग्रोरि स्वइच्छ पविधि भुजंगक २१ हे वृक्ष कन्याय कारिकरन
दीनिव निंद ग्रनुवाद ग्रजंगक २२ जहां प्रस्तुति निविहृद भनिमेर डुब फें हे दोउ ग्रसव लोक सवार
नेमकृ पुनः सोहृतन २३ सवनें त्यागें वरनें जन मति करों एनवी एनदू रोसाचक हृतें सवका।
लतजं सेकैप नोहिं हरि कविकस्याम सैवेन्यागि गोविंदभज २४ विधिरनिउ षहरोवे मेंउ ग्रग्रादि।
कोग्रनुवाद कहिये कथन सो ग्रजंगक जाहो ग्रंथ को त्याग करै नाहों ग्रंथ को वनन करै सोभ्यकृ
नः सोहृत तनें होसाचक हृतें निपनता हूवाहिए फोर सोकाय कियो सवथा एनमति करे ग्रपद पुनः
सोभोरदह रसनिहारि चरणारा समहृतें कविवल्लभ ग्रंथ दोषनिर्णयः ग्रथ साकांते दसदोष सवेण।
नावथे रसल कों ग्रनिचारि कों यारें हृ कों तहो दोष कहावें जो ग्रनुभाव विभाव इत्यादि कहोते जेदा
ग्रमसोन हिमावैं दोष कहू मतिकूल विभावादि ग्रोदिन होकवि कों सहावें ग्रोरि दह दोष जे ग्रंथ
निके सुलो ग्रंथ कहृतें न होंकवि ग्रावे २ सको नाम न होंयमिप ग्रोरस वाचक शृंगार वीर रस्यादि
नाम नहों यतिप शृंगार ग्रादि जहां थनिमें निकोरत होगनरस ज्या रसको कहें ग्रो शृंगार ग्रादि
कों कहृते ता दोष मुरस रसिक इत्यादि में दोष नहोइ हाउ रूपका कहू नहें सवेया नोनामिल्यावड
नेंहदेन नेंचह जासों मिलाइ भयो होगली कों वीवोहि वायरहीक समसेर समेंहु भईन अजादकः।
लोकों जानि पसो समयो रतिरंग कों हरगयो सरसंग ग्रली कों मोहन जो अइ ग्रावइ वारनछंद
नन्यो किलिका कहली कों रहें हो रसको ग्रंथ ग्रनुरागरहा रति कों डायातें दोष नहों शृंगार कों

रामजनीकवनी

३

ग्रौशृंगारग्रादि

२ रसशब्दतेसमनहा

बीबीवासनादेर
मोकोनाक्षोडे

कल्प० २२

ग्रंथ जद्दो भूषन वस्त्र पहिरवे नो होय तद्दों दोषन हीं भगवान मैं रति होइ ऽ रद्दो स्याइ कहैं दोषन हीं र
हो रति प्रीति कों कहत हैं शृंगार को स्थाई भाव मधुरा रति है जो संभोग को चाहै सो मधुरा रति सो
रहो नहीं है सभाय का सहमारो वनायो ग्रंथ है नहो रस ध्वनि भाव ध्वनि मैं यह वात नेकहो
है विकुरि मिले पिय को तियहि भयो जे रस सव भोनि कुंजोन मोदि शृंगार भो श्रुपिक प्रीति उ
फना निरद्दार सश्रो शृंगार नहीं कह्यो चाहिए नो रस शृंगार श्रादि कों कहै नो दोष श्रो श्येपा वि
षकां वाजे को पन कोदृष्य को राग को कहै नो दोष नहीं श्रो शृंगार रस को कहै नो दोष श्रुति भूषन
श्रनेकार्थ हमारो कियानहो को शृंगार स्तवन ॰ रसभेद राग्रह मैं ऽ २ लोग ष सखन नेप फिरि मै
वारी के नाम कहैं होष श्रुषचैवना तिय को पिया भई जु लाज सुशृंग प्रीति भई प्रसरीति सो वाश्रा
धिकउमेग रसुव पे पिर हो कि वाकुं कुलिननने भए लाज सों श्रो सो कह्यो चाहिए नहो कावजको
न होय नहो दोषन हीं मकुं लिननेन वहो नो का जे लाज कावन यातें दोषन हीं रहो लाज से चारी ता
को नाम कह्यो यातें दोष याहो नरह प्रीति स्याइ ताको प्रतीति हो तो जो पति में प्रीति वसी हे तो मिले
हे नाम कह्यो सो दोष श्रो जद्दो कहे सो श्रनुभाव विभाव को व्यक्ति होय सो पन हो जानि परे तहो दो
ष श्रपक कहे सो श्रनुभाव को व्यक्ति विरहा प्रसनु तापय निभिषि फल चलावनि हो रतिरछौ चित
वनि वन हग का प्रसव प्रश्रनहारि ष तिरछौ चितवनि जामें रहे सो तिरछौ चितवनि हगा तेरछौ
चितवनि वंत हग के विशेषन कमैना पका के विशेषन किये तिरछौ चितवहश्र सो नहीं फू
ल चलाव नो तिरछौ चितवनि श्रनुभाव है सो जद्दो नहीं कह्यो नायिका विभाव ना सो जद्दो कहे

रसकके दोसभयो

स्मरणकहे दोसभयो

ताजसचारीहैताको नामकह्योतेदोस

एकचित

[illegible]

प्रीतिस्याइताकोना मकह्यो याते दोस

पियके संग [illegible] लत है [illegible]

चित

कहै

अथ भाव कौ गानु नौ यह कहै कल्पना कविन्न आली से राजा तल मे लोचन जं पान के सखि के रंग गा
त सो है स्याम सारी है लाल कर चरन मे लाल से मउ ल वा है ना है अरु फूल को फेंक निहारि ना
मे है घुघ करे म धूप वा है वो कि न चकोर है यो सहू मे सो चपर चकवा को भो गी है मद हास वारी अरु
कुटिल कटाक्ष वारी वारी बैस वारी लालियि री के वन वा गी है ५ इहां भी फूल को फेंक निहारि आदि
अथ भाव सो विभाव को विसेषन कियो अनुराग अनुभाव कौ न दीहौ कि यो फूल वचलाव है अरु सन दीक
यो राग इ अरु कल्यान इति पियप निय यहै यहा मे सेन वताने निहारि इक भाद चदा वनि हारि ६
इहां भी अनुभाव विभाव को विसेषन है गाह नील मनि कल्यान है अरु मे सा नाको भी नाम है अथ यके
ए सो विभाव की वकतनो विहारी गन नीना गविवतै न रहे के तह यके न समान ए सखि पै ति यि अरु
लो पर रहो न न प्रान ७ इहां नायिका को अंकि होय सपी सो नायिका को रुनरस को आलंबन वि
भाव जो प्रोषितपतिका को अंकि सपी सो ना सृंगार को विभाव प्रकरन सों जानो जा य ए लोनि सग
दिव है नी विवहि नहि के पाल वट सान अरु सु आप रि कोनि आकि न क रुन कुना य कि पिजात ८
इहां भी करुनरस को विभाव भास है प्रकरनक रि सृंगार को विभाव जानि परे है कोनि आपद सो
यह कह कल्पना नाकु न हो जानि पर अथ प्रतिकूल विभाव है यह न पिय नरो विन ली के वे आ
यो है निहारि यो रहि ने को जीवनो मानक है मति नारि ९ यह सृंगार रा विवस सृंगार को प्रतिकूल
नो सान नता को विभाव को उदाह रन है इहां जीवन को आलंबन रूप प्रकास न सो भयो विभाव को
अथ येनोरस कौ विशेषक रिउ पत्ता वसो विभाव सो निर्वेद संचारी भयो आदि पद सो निर्वेद संचा

रोभी सुंगार कों प्रतिकूल जानि पं॥ अमत परोपसों भेद है॥ अमत परवश्यं में कामरेनचरी जीविते
सपदसों सुंगार घक होत है॥ २॥ दो॥ ओवन को अल्प नहपा विभावना सों याते अथ्य दोष भी नहीं॥ अ
थप्रवेपदोष॥ अकांडमें कथन॥ अकांड कौ अर्थ अप्रकरन कांड नाम प्रकरन को ओरितरहे
के प्रकरन में ओसिनरद कों वरनेन करै सो अकांड प्रकथन वैनी संवरन नाटक में हुतो य ओक
में अनेक को संहारभ एउ जो थनको मानु मनो महिलनि विहार वरनेननहो यह दोष॥ अथ अको
३ छेदके॥ कों अथकोट नो ३॥ दो॥ कोउ देनो जानि पं जहां जो वनेनक रतो आवे ओजदां जो वनेन
को उवेको ओवनेदोन हो॥ को उदे य॥ ओरि अप्रस्तुत वरनै सो अकांड छेद वीरचरित्र नाटक मे
श्रीराम जो सो परसुराम सों युद्ध उपस्थित भयो है तहां श्रीराम लोक सुंमें कंकन छोउवे जात
दोयाते यामें या दान करै दोष॥ अंगांग अप्रधान को अति विस्तार दोष॥ अंगी को विशेष कहि न होवरनै अंगा अ
प्रधाननि को विस्तार वरनै सो अंग विस्तारे जैसे प्रसंग कसु राजा को नदी वरननं षवा संवाद व
रनै नायिका को प्रसंग कहि हूती को सिषन ष वरनै॥ अथ प्रकृति विपर्जै दोष॥ प्रकृति जो पंच मकों
ओलेवनाव भावनाकों ओर निरह वरनै सो प्रकृति विपर्जै॥ दिव्य अदिव्य दिव्यादिव्य का विषं धी
रोदात्त आदि में हूदिव्य वासवादि दिव्य अदिव्य मनुष्यादि दिव्यादिव्य अर्जुन आदि वीरादि में प्रधान धी
रोदात्त महासत्व ओरकू सावा न अविकल्पन ओरामचन्द्र आदि धीरोद्ध प्रधान धीरोद्धत सुंगार प्रधा
न धीरललित न संत प्रधान धीर शांत फेर उत्तम आदि अनुकूल आदि जो जसो है तहां तैसो न वर
नै तौ दोष॥ श्रीरामजी सदा अनुकूल नाकों दक्षिन आदिक है दोष॥ में सओर भी जानि एउत्तमदेव

नाना को श्रृंगार वरनैं तो दोष जैसें कुमारकाव्य के अष्टवें सर्ग मैं पार्वती सिव को रति वरनी है
सो दोष अरु श्रीवृंदावन के श्रृंगार वरनैं दोष नहीं अरु भागवत में पंचाध्याई के अंत में कह्यो
है अरु रस के दोष रति कष्ट विभाव अनुभाव सात्विक संचारी कहिवा को लक्षन उदाहर
न नहीं दिये कै तो विभावादिक कहनें नहीं यों कहैं तो उदाहरन दैनें यें उदाहरन वही दियें
सो का ईवात कहनें को आरंभ करैं ताको समाप्ति नहीं होय अरु मैं ही कछु कहिवे लागें तहां के
दोष लक्षन उदाहरन नहीं कि यों बीच में हाव कहिवे लगे यह के दोष है हाव स्त्री को बिलास
है न हो नायिका कहीत हां कहनें यें विभावादिक आगें कहें अंकोइ प्रकथन भी विना प्रक
रन कह्यो या तें अप्रस्तुतः वृत्तः दोष जैसें कुमारकाव्य में रति विलाप में वारंवार कहे रस
दोष कौ मकासन नहीं यह दोष अरु प्रस्तुत नायिका को विसरि तिजो रस को उपकारक नहीं कहै सो अंगनेगक
हावेंना को जहां कहनो होय सो अनंगाभिधान अनंग को अभिधान कहिये कहनो यह अर्थ
सवैया पावक तो तिन्हि मूढ़ा वृनी में लमवो विरहनि सौं फूल वारि न सौं थर सारौ दिपन तीरीक
ना सैं सो ना रिनें फूलें तो रमैं रोवरैं नेहन हौ उमहौं नि ज नाह विलोकन सौं चाके यो चित में उर
कौ रिग हहै औरे को नासिद ली मैं दियौ नें किवार उधारन औज् १० दिउ सावनें नम कै कोई शहू
रस को अनुपयोगी कह्यो याते यह दोष अप्रस्तुत विसारन कहैं को कारन नहें अनुचित वरनें नहीं
ते जहां रस के प्रमान सो वचायक को निए भाषत सवहु जान ११ विहारी अरु रसि वेद हमवीद २
सो निगावति भरे डकाढ़नहौवहूल घो फिरें कौ देवर के आहें १२ देवस्तो अगत किप्रस्तु चिन

[illegible]

वि

याकौ अर्थ कि यौ है ता मैं दोष नहीं कहै है विहि डोरे नभानन में पड़ी परी सी हूँ दिय री धाय पिय बीच
हीं करी परी सलूदै २२ इहां बीच हीं धाय परी यह अउचित है यहां अनुचितको अर्थ जो कहिवे जो
ग्य न हो किंवा विरुद्ध मति कृत तहूं है रसिक प्रिया में नायिका कौ वीर रस आदि वरनन अनुचित अर्थ में
जानिए अथ अनेतार्थ दोषजाति १ सुखो रिप मसानर्तें न्यून अधिक नाहोष उपमा में दोष क
विकहै है तातें नरस को पोष २४ अथ उपमा में जाति तें न्यूनता कहिगो धाधिविधिलै यनु र्थिक में रक
वा लसतु निकैं संग्राम में मारन जो चंडाल २५ इहां राजा की स्तुति करने चंडाल कौ उपमा दीनी र
हो जाति करि उपमा दोष तें वी च विसोवसभ यो भावैक छ नआनच्छादियामनो मंगा रौपि अ
लकै माजान २६ इहां भी अलकै जातिकरि न्यूनता मातर सआदि मैं दोष नहीं अथ प्रमाननतें न्यून
ता मैं विपर्विजना सालमै विधुज्योचूरक वोयिदल मोलमेकदुनस वैकाविफरु २७
इहां प्रमानतें न्यूनता अथ उपमा में जातितें अधिकता यह अग्र वल वानद दिवाज मोतन जाति अथ
उपमा में प्रमानतें अधिकता फटिक अद्रि के सिखर से या केदसन वखानि २९ जहां असंभव होत है
सो मनाको सुअ भाव भिन्न लिंग अरु वचन तहू दोष कहै कविराव ३० अथ असंभवतें उपमा दो
ष वरनत नीरको धार सौ तेरो छवि को भार अथ असा पतेलोचन तअवटलकेकटमेलाषि मन हो
ते डुलाय २० आन इहां उपमान उपमेय भाव भासै न हां ईरूपक अलंकार होय तहांनाए दूषन कहो
न है लेक न भी औ मो है उपमान उपमेय को अभेद किंवा नाद्रूप सो रूपक अमा हप्पको उदाहर
न साहित्यदर्पन में उपमादोष मैं रूपकको दियो है ना की भाषा कावर्इ मैं मध्यतहां अर्थ से लिख्यो

जहां समता कौ संभव नाहोय तहां उपमा में असंभवते दोष॥ जहां समता कौ अभाव होय तहां उपमा मैं स्यात् दोष॥
जहां भिन्नलिंग होय तहां उपमा मैं भिन्नलिंगते दोष॥ औ जहां वचन भिन्न होय तहां उपमा भिन्न वचनते दोष॥ ५

बिनाश बिस्तार सो जो है अथ ये भ्रम मिकिरन [illegible] का ग्रम सो उ इसो [illegible] अथ थै सर सि
सो उपमा नो पमे पुनहो सु भवे याने रूपक मे अप्रसाद श्यक विनपाटल विमल को कनद के मदल
होऊ बलभ पूरा मरउ नो हो है पी वा लगे मो भाके मघुदमा दिवाउ वा को आभा कियो देव धुनोभार
नो सुमिलो पुमका लमे का म के वै मे कि थो ना सि का उ इ प वे आ षल न मि का स्तह नी कमु षना
ल मै मि ना सिन लोचन मै लो हित लकी र कि थों वे ये जु गमी न लाल रे समक जाल मे २२ इहां नासि
का सो उ दुय सो रूपक कियो उ प [illegible] मानो पमे यभाव नहीं आ को लागै याते इहां हू रूपक मे अप्रसाद श्य
नै दोष फ टिक अ [illegible] दूषित म मान लुन अधिक को उदा दन हिया रे कुच ते रे आग सह न दे इहां हू कु
च की उपमा के उक की बील की ताल फल की चाही ए नाहीं नाउपमा मे अधिकता दोष आवै विहा
री कुच मि सि च टि [illegible] न दे सा दि का वि [illegible] अब नो अप्रसाद श्य मानाधिकाउदादिन ही वि
चा रन [illegible] हे कु वा ता उप्रना इत्या दि गुन लके रूपक करने हू सा इन के मत मे दोष है हे अथ भि
न लिंग ते कल पत ना सो पी ये नो [illegible] सुवनह सो अथ वचन सो उपमा मे दोष [illegible]
[illegible] इंदीवर सो नेन नहूं या को लष्य बिहारी २२ इहां इंदी वर मे चाहि ए अथ उप्रय को भेग्र
वा व नै दोष सो त्रिमान मू गार ज्ञि मि ति यस ग कर न विहार सो वन उ कज्या वन नहीं है लागत च
लि के मिय्या ते २२ इहां जि मि उपमा वाचक है [illegible] उमे का वाचक नहीं जो उमे ज्ञिन
अर्थ का सर्थ न्नास क रि कै नो हू षन ह वा भो त सो ह मि न मै न म को रषे प हार इहै वजाइ व
उनको कैन्नपर उपकार २४ दिन मो इर पिके अपकार ह [illegible] रोमै नहीं आ यो ज उहै यह संभाव

नाकरिएहैं नाकोअर्थ्यौ नरसौं समर्थन करनौ दोषसंभावना जानौ रहै तियकेनेन निमेव
सेंकि पौ कामकेबान विधिकी रचना कोकहै जलमैंधरेकुमान २५ कामकेबानकी तिउ
वेकिन अर्थ है नाकौं अर्थ्यौ नरसौं समर्थन अनुचितलो निवरनमैं जमकएकचरनमैं नहीं निवहै
सोभीदोषलसै नेहिनी सीसषीबालनेहि नीनीरने हमशीपियकौलषै हीरहारकुचहीर२८ श्री
सोजमक किनहू कियो श्रौ जो उपक्रमलियासो निबहो न ही अतिभूषन सदन० सु० मोटि
रा नीरर भवन० लेष० लोक। सुध नीर२ हिर सेना० कोची। जीभर श्री रिस सदन ०रथ। जलर
लेहि भाजन० गोप रू० पात्र२ सु० कानन० जानहु वन। घेर२ नदी। वाहिनी० फौज२ नेहिनी०
गेगा। अगर२ वरलषि० अस्तु भ२ पापरै निष्फल कर म२ मगयाहिकध अरु० है० विपति ५ फल
है अनिष्ट जो कमैं वस ८ सोभीवसन० स्नेनी सुमति२ यहहूमारी कियो अतिभूषनहै है मीमे
होरनाम वज्र कौ वज्र वाची शरूसव हीराकौ नाम श्री महादेव श्री सर्पहि बिविटपके विटपमेलसै
बाहु नग पानि कौ ननके कौ ननमें हीवेठी तियसुषदानि २८ इहौ हितीयचरनथे चरनमैं जमकभै
गा अतिभूषण विटप० कहैं विस्तार। पेड़२ अरु० साषा२ पल्लव ध कानन पाई है लरू सौं लषौ
सिनेहोए कमैं अगगस्तन दो रंगा वेध नैन विहरै पियके संग २९ इहौ भी चरनथै चरनमैं अतिभू
षन सवेया नेरकौ नेरन । श्री सिहह सानि रनाहि गो विटक विहरउचारे गाहु निकेअथिकामि
निकौं २ अवसादर्द्ध श्री नेह । वनसरवयारै जो उपजे सरदैमाहि३ श्री रिसुने दो गोरोचन । अंगनार
दोरैं पोउर । वाकरस० है० विसहै० पुनिगेप । रू० हर्षर आमोद० उचारे ३ संनिधिहै मसक । नजी
हौ

करसुवंदित १ देवरसुरैहै विबुधै० गनभूषित २ धानरप्रसिद्ध० कहै सुआवेष० रूधृषत । प्रेमहर
हवेधृनर ३ स्यादि अथ उपमा अधिक पद दोष लसे रसाथर सुतासो संभुभूतितिसिन अंगसदनल
हस्यो वीज सोलि पंरै हूधनु संग ३१ चरन थंचरन अधिक पद कोई कोउ पमान नही रसानाम भूमि।
कोरसाधर पर्वत ह मारो किधोक नोभरनभूमि १ भरस्त अचला २ स्नुजानि० रूअनंतनाथ धरनी पर
सा ८ धपतिञी ७ धरा ८ फेनिकाहि [illegible] रा ९ सुवरनीकोनी १० अहविश्वंभरा ११ सु० मा १२ कासपि १३
आक्षिति १४ वसुधा १५ औ सर्वसहा १६ सु० उर्वी १७ लघ० वसुमति १८ कौदिमेदिनी १९ रूइरा
२० सुकवि० पृथिवी २१ ओगि० वसुधर २२ हिंङ्क २३ मा २४ सुमही २५ गोत्रा २६ अवनि २७ भूत
धात्रि २८ विपुला २९ सुलेह्नि ३० अथ उपमामे न्यून पद राजत विधुराधा सहित थरे पीत पट गात तेजे
से विधुराधा सहित अति सोभा उफनात ३३ इहा पीत पट को उपमान नही आउ पत नील सुन नील अथ उप
मामे कालभेद सो दोष सोहत नभो धनभूप भीलीन विद्युत समाज अवरे सेउ उगन सहित नभो सूर
नदिजराज ३४ इसनहि जराजको सोभा दोयन दीउ कौद अवभी होत है जसे सुनु पिहि समादिस
प [illegible] साचा दिप अधिक फल चन मास सो अधु हाधे दोष सा सरस सवा के कहि चहिर गोहि है रोग
मनिरम कोरनर नककादि चढि दि हरव ववलि संग ३५ रन रन कको अर्थ उनके रहरहो चन्द पास सोच
मनकुलेअथ पेनही पुहुभयौ या ते अधुहार्थ अपसमासो क्रिया विवै अपपुनरुक्ति सा धक लाधर केनि
साकुम रिनि विनि हूं अथ प्रत पजनेन लिपिवे ले नि वधू सोभा प ३६ इहा साधकलाधर पर सोवधू को

रस. २१

प्रनीतिपे मिवयूपदशन हुके ॥ अथ अनुप्रासविषे प्रसिद्ध विरुद्ध नामक कैसें व्यास को निरेषि निसा
कर भास हासौवला मद्दला सज्जु नेर मैं गने समनुप्रास १७ गने स कौरास क्रीडा को ई छवान में काव्य मैं
नहीं के हैं जो को ईम स्त्र क रैपौच प्रकार दोष कहे ते कौ प्रकार कौं नहीं कहे है। ताको है जमपच प्र
काम मैं दोषन के ठौ प्रकार इनहीं मैं पदोष सबनि कर नहैं लेश थार १८ श्रौ विज्ञानि लौज्ञिप्रनि दृरि
चरनदास कौ नेहदास विवल्लभे सार्थ दोष निर्णयः ४ कविवल्लभ मैं ग्रंथ को कौ नेच वादेन
मम्मट हूति पाठी नसौं क रिहै वाद सवेत १ भाषा ग्रंथन कौं क ब्रु नहिं गननाकी वाद हूउतज
हां पहास सवामनवाद न पाहस ग्रंथ मम्म के छपे कहयद्द वा कहु अर्थ दोष कोल कुन भिन्न 2
भिन्न पदपैर मिरिनायन हीन यार घमे फ्रन वाक्यदोष पद मिले नहीं क्रादादिक मांहि यानिय
२ दोषल छे नविवारिक एलूषि जाहि य ॥ अ सनप ननहि परवाक्य महि अमपल निहनाथतज
नकरा कौं निहनारण अस सप्थ मांहि भेद किसाको विकुल जल जनइ नित्य दोष सौ जागुन न दौ होय ज्यौ अ
सौलक्षन कौ जिपनो अनुकरन में सब दोष गुन होनदे यानें श्री रिकुरनो छपे अवविताय को
भेदा वहय मनिसाको विको जरलज्ञाव्यंजक कैसा अर्थ महिपके दोजा लूनपद हय नमिदिन 2
वाक्य मैं भेद किनोक दश्रनिपमठार नेनियमक दोको दोष ह्वाय हय को हि अ पर मनकसो भेद ह
सिफिसे समाप्त गुन राजमद है सानेद उलि मैं न्यून गुन अधिक जु पद गुन कैसो न तहै ४ उदरकमम रस
नीजो रषे कोऊ नहिं नवन्याय जो पर्टै सो उपम हीं अ सो अलप लषाय ५ रहा ज्ञानिभा सैहैया २१

नैविरुद्धमतिकृतननहीं अैसें भी संभवैहै अमंगलवचनकतौ प्रकासितविरुद्धसोंमिलेहैहोहादोष
सोयेगुनहोतहैलषिअनुकूलतिकेमाहिरसोंमत्तोक्तिप्रलापमेंसुप्रवीचकैयांनहिंहै मत्तोक्तिआदि
अनुकरनमैअनभूतहोयगो मत्तोक्तिमैंजथातहैकैहैथाअैसेंजानिए पतनातौहमलिष्योअै
सोहमारेअैयतेअैविदअर्थमैंबीचसोरअंअअयरससहसमैंहैहै कुपैउहाहरनअसमर्थमा
हिमोहिपेयाकेलेसहैंअसभैआगेपदजोगमिलतपदवाकअचरिमहैपदसंग्रहिपेहोतले
पौक्लिष्टदोषहोयपदवाक्यदुमहैहोतन्नहोनतेलिषेनभेदकयपुनिसुमनवायकोगयियै
दलानिसुवाक्यहिमिलसतअनिसोस्थानसोअैविवाअप्रतीतजाना
अस्तत २ उदाहरनइतिपदहिलेंपददोषकहेनेंलगेएकसहमैंजहांदोषतहांअसमर्थकोउदाहरन
दियोकलेसनहांकोहोहांसेवाहीतेहोतवसकहामैहेसनेरससहिरिहैसमैंनौनितैपावैकहांको
लेस ८ असमर्थदोषहोयअर्थकेसहमैंहोतहैएकसहदोयअर्थकोहायपदविभागकरैविना
हुसराअर्थकोकहेनाहेअर्थदीजिपनहोनाकोसकिनहोयहैतासहदोयअर्थकोहैपैजानवा
लाकोनहीकहेकिनहूकहूयोनदीयातेजोभीपदतिनाअर्थतांहिविषैगमनार्थकोकहतहैअैसेंक
लेससहहोयअर्थकोनहीकनामजलनाको लेसअैसोपदविभागकिऐहोतहैसोअनुक्रहान
लकनकोयवहिनप्रतीतहोतहैएकोकरसोकनामजलनाकोज्ञाननौइहांसमासमेंक्लिष्टभयो
हमकूलिवौस्थानमैंसेपविवोस्थानमैदियोहैअसभइतिअसभइदाहरनदियोहै दो हातापतचीत

विरकरके

28

कस्र. २८

अव दोरहो आलवाल वकिवाल प्रीतम कुलदीपक तुम्हौ विरह मिलतनकाल ४ मुख्य उदाहरन
अहीं तरैक वाचक को है जो पद जहां स चाहिए सो पद तहां न होय प्रीतम कुलदीपक के आसे मिल
त पद चाहिए सो औरमि ठौर है दीपक सो तुरत सौं जोगा भए दोष भयो सो वाक्य दोष पद दोष वाक्य दोष
~~[illegible]~~ अर्थ दोष को लछन नहीं या ग्रंथ में तासों भ्रम भयो है आगि मिं जोग विना तुरत भ्रम गलन
हो मेरे मन की वात सव तम तुरत नहीं नाद है हो दोष नहीं तुरत के सव तू फिगदी ज्यों ? न्यादि भ्रम
गल मैं दोष अर्थ ही को सहृदय पदनै टीका ओ काव्यप्रकाश में पद दोष में विन्यास सह दियो है
पद संयुत अंतिक्लिष्ट आदि तीनों ए दोष पद के समस्त ही में होत है एक सष्ट में नहीं होत हैं अथ क्लिष्ट वा
क्य मैं औ समास में तुरंग को अरि जो निमा ह अरि ताको लल नज प्रान हर भषन भष सषगेजु दत नक्षि
करो कल्यान १० हर भषन ताग नाको भष पव न ताको सषा अग्नि ताको रिपु जल ताको दाता मेघ
इहां समास है है काव्यप्रकास में वाक्य में आक दियो है ताको भाषा न्यकार जप होइ मैं तू मैं सत्रुवि
ज कान एनी नि दोष छांडि श्रुतिकटु आदि दोष एक सष्ट में भी होत है औ पद समस्त में भी होत है य
ह भेद है सो भेद नहीं कियो क्लिष्ट के आगे आस दोष लिख्यो यह कमतो काव्यप्रकाश मे भी नहीं
साहित्यदर्पन मैं भी नहीं इन दोकों दोहा कहत सषी सो या तिमिम वन विहार की वात तन मन
लोचन लाल के न्यों न्यों धलकत जात ११ हालि आ ध्य एक सष्ट में दोष सुमन वाय की गोपि इहां वा
क्य में भाषा में पदांतर संजोग विना वाय सष्ट अश्लील नहीं वा व वहै लहलहीवे लिनि उनैं डने आ

२८.

मेरी कोठमड़ी गहरी बरसत है की बाय इत्यादि अनिसा अवर तिअ प्रतीत
को सस न है कै शब्द कोई सा स्त्री में १

यवाय ग्रंथ चल उड़ाय गयौं नाहीं बिन वाके हिय रामें प्रसिद्ध होय सो जहां क बिनामें थरै न हां दोष पंच
ममगौं नैनी ह मैं पियग्रवच्छेदक देन अवच्छेदक को बिसेषन को नाम न्याय प्रसिद्ध नि ता ना लिष्यौ ता
नोकिन है सो केतिक सष्टा कै यो दोतिय को असोइ दोनहीं लेनहै इहां अवाचक जानिए छंद्य
अभवन्मत नो गरहां हूषन पदो सलयहै षिसमें सेदिग्ध इहां न विभाव यलसव केमिश्र यको वि
भावना हिइह जानि संदेह हिय यह अपद मतन नहि लोकलाज पुनरुक्त अर्थ कियगु निहूषन हूषन सौं कि
ने भेद लिष्यौ नहिं सा फकरि अनिकद्दुहु वाक्य में पद मद्दीको न भै ... २२ नमस्ति
नमयद्द वा शीन कौ आदि लिष्यौ जामें दोषका ग्रोदे कौ विन यो वियमयो रात तुओ गमन चाहहि त ।
हित कौ भो व रिसवु भांतिव नो ठ गो है नागरि नवलौ अल वलो लपरामि के लौ मुखुति सहलो मगर
नी है वसेपसि तारवा रपे यनन वात है को वासो नेह अ सोकाहु चलिवो नोअ नीदेन मनोले याउ वाहे
रहे यदा लोगी जके कैसे केल आवो वो हिफ नीसी समनो है २३ यहलिष्यौ हो न मारेना ल्याउ ल्याउ ला
गोये हैं नजक असोकहै कवि के [illegible]
हूह पको अर्थ लिकै याते अभवन्मत नोग नुमारे को वासनमलिष्यौ है इहां बहीको वाव प्रथमा लि
ष्यौ है सो सबंध को अवाचक पद के असविषे है जो आयो वदगयो इहांसो गयो असो चाहिए हाय पद
के सबंध विषै यह दोष है असो वोर मेन होत मारो थन को वासन मथन अप्यादि में पदांसो विषै अवाच
क जानिए है षति सांख्यको उदाहरन दियो तदो विभावक एसो निकरै है दोष समें यह दोहा को आ
दि दोहा दे षिसमैं जियगासनिज करिले बुद्धि विचार वचन सगुफि हित अहितके गहिले सबको सा

क्रोध

बुद्धि विचारलै

स्याको सारपकडले

हेमनग

29

कल्प॰ २९

र ७४ ताके आगे लिष्यो है यह वचन स्रृंगार पर कै सांत पर यह संदेह कि यो सो आ जो गए हो गुरु षि
ष्य कों उपदेस करै है तो हि जब वैराग्य सिषावै होत वन्है रोस करै है तो वन ते रोग यो जो तो हि विषय
मैं आसक्ति सिषावै है ताको वचन भलो कै है मारो वचन भलो सब को सार भगवद्भजन किंवा भा
मी नायक कों सषी मनावै है सभै वसंत आदि वै मीतो हि न हीं मिलेगी सब को सार प्रेम रहै तासै दि
ग्य रोष न हीं है सांत को विभाव सिष्य है किंवा स्रृंगार को विभाव नायक है तहां विभाव व्यक्त न हीं है
जहां होय सब भी सैंन हाय यह दोष लागै है कै सह रति रहे विभाव को यालि में संदेह दोहा के से है
कै जन न नैंसौं तन मन सरवस लाय तव हीं दियो सिराय जवद रसन कौं जैनाय ७५ ताके आगे लि
ष्यो है इहा वचन रूप अनुभाव तैं आलंबन नायक किंधों नायिका यह प्रतीति कष्ट सौं होति है तो आ
गै टीका न लिषतें तो यह दोहा स्रृंगार पक्ष भी लागतो ओ सांत पक्ष भी लागतो स्त्री को दुरमन किं
वा कासी विस्वनाथ आदि को दरसन इन तें एक स्रृंगार हीं में नायक नायिका को द्योतन होत सो दिएभ
यो एक रस में विभाव की कष्ट कल्पना न ही होय जहां दोष रस होय तहां होत है यहै कौंन रस को वि
भाव है न तहां कष्ट कल्पना ओ अनुभाव की व्यक्ति जहां कष्ट कल्पना सो निकारी है तहां भी विभाव की
व्यक्ति कष्ट सौं नि [illegible] करति है दोहा बरन बरन नवनेहु सोडि कैं हि बिआए वड्ड ओर सी यि आवे
सषपा छि लो सुनि वन वोलत मोर ७६ इहां भी स्रृंगार को विभाव किंवा करुन रस को विभाव अ
नुभाव की कष्ट कल्पना जहां अनुभाव जदो कहि न हीं कहै विभाव को विशेषन करै तहां जानि
ए फूल वलाव निदार यह मोह मैरा रंगि दारि कुंजभवन कै सेन कों सेन वता वनि हारि ७७ इहां

इनको करन न कौ जानी स॥ अनुभावयों को आवेत हैं इन्हें जानो
इहां अनुभाव की व्यक्तता कष्ट सो॥

नायक को

फल वलाइवो इत्यादि अनुभाव सो जे दोक विनहीं क दौ विभाव को विसेषन कियो अपरमुक्तार
निलो कलाज इत्यादि रस रहस्य को दोहा दोहा लोकलाज कुलकानि डर मोहि रहे दिपन तुताय मैं
वह मोहन हो य न हि मन दोरे लेन अनुभाय १८ याके आगे लिष्यो है जो वह मोहन हो य न हो या दी
ठौर हू वन करनो या मन दीले नैको प्रतीति तो मोहन सह दी सो होनी इदोउ नके कहे अपि पुनरु
क्ति को दोष अपरमुक्त नहीं होय औ लछन कियो है एरनकी जे ठौर तजि सो पद मुक्त कहाय दोष को नाम
अपरमुक्त है अपद मुक्त सु कहाय औ सो चाहिए एवं निरूपन इति केन नैर एवन सो कोतन हूषन मिलत से
हैंता के भेद न दीलिये जे से अनुचितार्थ औ विहत मति हत भग्न प्रक्रम औ अक्रम औ से जानिए श्रुति कु
हृतिश्रुति कटु दोष वाक्य में पद में लिष्यो है तहां को न भेद राष्यो है इहां पद में भयो इहां वाक्य में भयो
काव्यप्रकाश में लिष्यो है तन्वी सो आलिगिन नायक को तो अपावे है कठोर वरन फेरि सजोगी होय सो
श्रुतिकटु इहां कानो ष्यो एक पद में श्रुतिकटु भयो रस रहस्य में श्रुति कटु को उदाहरन दियो है कवि
त्व सिकर सालाकियो कावनै केवो वादियो अव के सजात जिपो दषे हालरा वर्वे इदवग एवं द्वदे
न वज बालनि को वैरी हू के दीजिए नलीन पर्यो वेरगायि न को एतना सदे सो जायक दोष्यलि सव
सुधि भूली काऊ भए एक दोवा वे वे ब्रह्म हू में चितद को निरगुन पायहु पेएक वार आय वेस भूली वजा
यरे १९ ताके आगे लिष्यो है इहां काठ के वेगोड दव बुद्धि भ्रम एपर दवि योव में विहत हूहे हा एक ब्रह्म
पद श्रुति कटु है औ भिति हलव वनै दे श्रुति कटु न हीं है यथ वाक्य में वा दउ कट कौ नैन नैन हू है ज
कजको भ्रान्ति कहाइको सुदोष कवि औ यदु टोरे है नेरे हु द आ सुनि के दसरे तनल फ निडोर होय कि

भई अर्थपुनरुक्त

अब आवेगो

प्रगीकुलवतीको उदाहरन है

वहु तरह नकर

कव्य.
३०

नहे कौंपायदै बुटा बुहरायन्यौं त्यौउवै भयरायदूव केमैं वहराय पस्यौ मदन को दायदै भटकी फि
रतिनिनटनागरविरह अव वदन वटनतनन प्रान हू वदायदै २० पददोषके कवित्त मैं और पदवा
क्य दोषके कवित्त मैं केतने नो भेद है प्रतिकूलवर्न इहां भी है प्रतिकूलवर्न उहां भी है यद्द रसर हस
पवन वाले सौ म स्त उन रइहो टारै नटरे इत्यादि क्रिया मैं भी है औ सह मैं भी है याते वाक्य दोष कौ इ भाषा
ग्रंथ दोष रसर हस बनायो है हम थोरो लिष्यो है और भी कवि विचारि लेहिंगे अथ भ्रांति भजनो नाम
सैदे इहां भ्रांति भजनो को नुम भ्रांति न सकौं गनायदै विसर्ग उपहत जहां उपहत लिषा बनाय २
१ कामकलाधिक यहां दियो उदाहरन तिहि गोरे नहिं विसर्ग भाषा मै इहां लिषि है का विधि वमोर २२ औ
निहितिउपहत विसर्ग और लुप्त विसर्ग दोष है उपहत विसर्ग को अर्थ विसर्ग को ठौर उकार करि एदे
षै विओ कारक रिएहु ओकार के अनुप्रास सो कोद अक्षोनहि लागे भाषा मैं विसर्ग नहीं दोष कहा
नै होय यह पीछे भी लिष्यो है इन उपहत दोष लिष्यो नाम दोकौ बीक नहीं लक्षन कियो सयि किये
नैसहू मैं आयर अविना हिरडीविषिहू पतु दोषिकै उपहत कहिए ताहि २३ उदाहरन कामकला
धिकराधिका आधिक मानिलो काम की केलि बनाई कामसे का न्र सोचरदे करहै कुच है रतिकाम।
कीनाई अक्ष जराव की मुद्रिका है कसबीच अभिलाषन देषन धाई दे षन को पियको तियको दिय
को अषियाजनु वादि रआई २४ लिष्यो है इहां कामकलाधिक मैं अकार संधि कियै आवै है यह उप
हत सो यह निर्मल अधिक पद जरूषत जहां अधिकवर्न नहीं भाषित है इत हत मप्रसिद्ध लषि है
कविसु अभिलाषि २५ आपस मैं विद सै रमदीं रस षेल भयो उलदो अरूनाई उतै औ कवारिकी दोरि

दोहा
कामकी कला तें अधिक जो राधिका वा कामकला तें अधिक जो राधिका

गोदी मैं

३०

बरीहूतमेंडनलालकोलाग्यो छलाहै जीतिकोदावपर्यो पियकौ सखनीनिकहीकिहमारीविहाहै
लालरहेहैं अरिनिग्रांनननचाहैति यामुखवयापदियातननचाहै २८ अधिकबनेकौनग्रंथमेंकहूहै
हहांत्यालहूतहोयजानिपैंअधिकपदनोफूलनिकेमकरंदइत्यादिमेंछ्लेषअयुक्त १ नहिंचंद
मारुदेसमें० मैंबोचिकचंदनहै असमर्थसंतहांसुअबाचककहैंदेनिकनिहनारथ ४ दियकै
लानहांललघुकोगुरुकमितकहैअवाचक ५ वैरहीसुनदिं अथनिरर्थकौदिपज्ञानिसुवादिरवैवि
वोपदसंयोगनेवाकरगतसुतिअमंगल ०अरुचितिसुकहिंपैनग्राम्य ८ नपरोतमनरु अप्रयु
क्तति अप्रयुक्तमेंचंदमादियाचंद्रमातोवड्तठौरआवैहै वाकिकोमुनआंआनकोआँषिअमा
वसकोनिसचंद्रमादेषतेसोइसनमुषअमलचंदमाइत्यादिपदहेश्रो० जौवात्रिक० असेपदका
दिए चंदनरातिचंदनसहूएकाथहैरक्तचंदनकोअवाचकजानिएहूचिपंकजचंदनचंदनकेचनइ
त्यादिरासेकप्रियाकेकोविनमेंनिहतार्थइतिआगुसमेंविहसैरसहैइत्यादिछलकाकलानुको
नकैयेद्रुसकौहोवे कियापिंगलमेंकह्योहैलघुगुरुगुरुलाघुहोतहैनिजइछाअनुसार
वादरकोवदशाकियोविहमीष्वदरावदशाहैआंषरकोअषरांअरुआनिकरेअषरानिकेसाथरे
हिसकअरुसवहोपिआयहभाषामेपतहैयअथकेसहमेंयहदोषहोतहैकलासहै दोषअर्थ
कोनहीयानेइहां नहींकोलकननदीलगेपामहावीरइत्यादिसहचाहिएइनकोलछ नेकोडअ
र्थप्रसिद्धकौअप्रसिद्धकोभोषितिदैसुतिगुहोनेकरेकरावोलीनेकविनकरकोतिनेकुकुम
निकेरांकहीमोकरहीदलनाविलचिवरवेहीडरजनमसिद्धजहांनहोदाहनहधिस्यारषैंवहीहरहर

इमतनमभरहरहेसिहे विनीलकंठभांतिभांतिभूनपोतिवरही आले आलेऊषनिकी आलिकावरनि
परैकालिकाके आगेदीपमालिकासीभैरही ॥ ८ याके आगेलिष्योहै इहांवैरहीपदसो अवाचक
याको अर्थ नहीं जाकौ अर्थ नहीं सो निरर्थक कहावै अवाचक नहीं कहावै अवाचकतो जादि अर्थमैं
पदवाचैताहि अर्थकौं नहीं कहै पदतो सार्थक होय दियातिवादि रवविवोवाको दोषमैं चाहिए
इपदके संजोगसौ दोषहो तहे नकवादिरवविन देहवाय रलेशीदेह विहवला यथा ने वायगीनो
घायगी मृनि अमेगलइतिलगै जादि प्रेतनाहिके नाउ पदेतमादिजीवत लष्योहैतानें अधिक अर्थी
रहै पसीमेरीवीरमेरी छातीपरपीरहै सजवहीं मिटैगी जब छाती लपैपोपीरहै प्रमकी अधिकाई सोऊष
की अधिकताता मैं प्रेतकोहृदैतारहै यामैं वृत्तिन है स्तुतिकरत निंदा निकरोइहां अलंकारदोषम
रौतरी अैसो पददोषचाहिए अग्राम्यतनपरीपरीतनमयुग्राम्पनहीं क्रमभाषाच्युतमतकौ नकोक
दियपेचकमेचकपादेलूकहनौ जोगकहै मैकैम्र विमयुकेदेउ लाषयतनकै करोगेऊकृममेप
रइयदा पतनपतनाप्रकरहोको मनअउमरदयमइहांतरेकवाचकवतौ अर्थमिलेजदयरथअन
तोलकनलक सौप्रेयसौमिलेतादिदूपनमुगन २८ भाषाइतिउमग्रो अमितदलहयगाधपयद
लकिनिपरयवकमरहयथा यरीसीकहैकविगोमामहुमवय्यहो अटमवकी नेमाविचटपरीलागी
भमिचमोपचकउदितमनमेचकदसहूदिसमेचकमेचक भूविडनिसिपरीसौमवैकहैवारवारदो
स्योमादिदलिपालहृद्रमानिजायजमीवरियारचरीसी ३० आगेलिष्योपेचकमेचकपदसंस्कृत
हैभाषाच्युतककौन ग्रंथकोमतइहां अप्रयुक्तलिष्योचाहिए जान केलियेंअैसै मयुकावेले आ

उपमादोष

मैचक मेचक मै चक चक चकेवै है
छिंवा चकमेचकवेमरा ३

मैनहीभाषा

ते ना को नियकरके ... है ॥ ... रूप बाजते हैं ॥ ... सो ... कंचुकी है ॥ ... ते मन है
... सो ... है ॥ ... है ॥ ...
... है ॥ ... पतत्प्रकर्ष को ... है ॥
... ने सेता है ॥

बत है सो पीछे लिष्यो है पहिलें र निकट्ठान पीछें चाहिए सो पहिलें ज्यों होय अविमृष्टविधेयांस सो
कहै कवी सरलैय ३१ ऐसो के रुपया जे सुंदि के मुंदि मोहर देडु पद डुक्र मके उदाहरन मैं लषो अ
मृष्टविधेयांस कहै नहीं लगै होय ३ तिपतत्प्रकर्ष को लछन कियो है सहृद्ध नत नामक जे कोन दि
पजै उत्कर्ष घटै सो दूषन कविं में कहियत पतत्प्रकर्ष ३२ उदाहरन बाजै नूपर बाजै कौं चकें चु
कीन्ह सो जंघे वर षवमन राजे घरराची का सो फुरै विविध कटाछ के वरू ह्रक वान चंद्रवान बाँन अव
लोक बोले विक्रम भौरे मृदेस्व सीए बदाइ रकौं आवे अनी बनी बनी हाके इंदु जाति चनी फहरा दिकौं
मुरजे से नव वधू स्तन पति को वचन हार आगननत भानि भेसिना व भोने मे डुरे ३३ इहां नूपर की समता
सो नगारे के उत्कर्ष नहीं कंचुकी समता सों कुव च को उत्कर्ष नहीं यह कौन ग्रंथ को मत ग्रं... इहां चा।
दिक मैं निंदा करे है तहां अनुचितार्थ दोष नहीं पतत्प्रकर्षतोजे सो रचना को आरंभ करै ते सो नहीं निवा है
कहैं तने करति पो मिथ्यु थने पुरुष आदि ग्रंथ कौं जाइ यो घोनि रके सो जानि एह दूषन कविता मांह ३४
उदाहरन हम सो हित सो उत सोद ककें निति को मिलि वो व दरावत नहीं सु कि ते दिन बीति गए कवि
मे उनवात नहीं व दरावत नहीं विन हीं अपराय उतें उनके रसके प्रेम स और दरावत हीं रंग लाल भए
कर लाल नके पराभा मिनि के स दरावत नहीं ३५ लिष्यो इहां पहिली तुक के अर्थ को दूसरी तुक मिला
ऐ वो य होत है सो निर्मलय दकाव्यप्रकास सो नहीं मिले साहित्यदर्पन सो नहीं मिले काव्यदर्पन सो नहीं मि
लै है और इन ग्रंथ नि सो विरुद्ध सो इह मत दूषन भ्रांतिभंजनी में औ रसमरद स में दयो है चित दै औ से देषियो
है गउ वह गयो लाल भ्रांति भंजनी का कहे ठौर ठौर मैं पोल ३६ अनुचितार्थ आदि नित्य दोष है तिने गुन कि

... मिला ३१

८ अनुचितार्थ तो उचित अर्थ में अनुचित मा है तहां होय है ईहां लोक निंदा ही करत है या ते अनुचितार्थ नहीं

योनहो विरुद्धमतिकृत भासैहै ॥ अधिकपदगुनकियो है नहो उनरूपभासैहै कविप्रियाकी टीका म
करी है जो दोष कहै तौ अक्षोन होलगे औ वहै औ विदी तो निसो चलेया अनर्थक पकपदमें होत है उ
नसारोमदावाकदियो है अयकुवलयानंदमें संदेहवर्गरूउपमा मेमतूसलक्ष्मी जहां लषायमतज्ञ
कुवलयानंदकोउपमातहोकहोय ३२ वर्न्यउपमेयऔउपमानथाकीजहांसादृश्यकोलक्ष्मीकहिए
सोभाजहां भासैनहीं इउपमाअलंकार होय यह कुवलयानंदको मन हो हादसीकेरतिकोभलो उप
मानरूउपमेयपतहो काकतालीयकोउदाहरन नहिं देय ३१ हंसी सित दिवपक्षी स्वर्गकी गंगाको
अवगाहनकरैहै नैसे स्वर्गकी गंगाको अवगाहनमारी की रानिभी करैहै तहां नाऊ मारी कीतिभी
पढ़वैहै यह अक्षोउदाहरन अैसो जो मत है तो काकतालीय घटउदाहरन हैनोनहीं या काककी आग
मनकियासों तोनायककी आगमनक्रिया औ तालकेपतनक्रियासोंनायिका आगमनकिया यह
काकतालको अर्थ काकनेजसें चोचसो फारिफारि तालको उपभोग कियो अैसोनायकनेनायिका
को उपभोग कियो या वारमें विविक्रिति विशेषका भयो अविन्तिकित संभव तो साधारनथमेहै नहीं।
मिलनेकोनहीं भोग करनेको संभव थो सो आयोनेचनिकहो इहांतो काकतालकी कियासोनाय
कनायिकाकी भी क्रियासो उपमानोपमेयभाव है काकमें न हो तो अथम काककीवदस्सन तिकि
यासों भी उपमानोपमेयभावनहीं चाहिए तुमारे मतमें असो भीवनेन होय सान पोकिकी अंधिआ
पनीजोयपै रेसूधी होयन रूपको मिकैस्योकोय ३५ दोहादोनोपमअथिकोपमकहैरनकोउके
दमसटकाव्यप्रकाशमे हूवनदियकहिंभेद ५· कुकाव्यकीनरहउपमातो है दीनहें केअथि।

कहै दंड म्यो नियद्दनाय कादंबरी काकी पुनि जानि चंद्र की म्योतिमारो पीजो तिन्हें ज्ञा की हरिन की आषि
मारी षी आषि देजा की काई अलंकार होय तहां सोभा विशेष चाहिये यह मन हनको है फिर उपमाना
लंकार में दियो है सकल का रूप के दीनी ताराम्या सपि का न निगाड़ी की सरनि मी रोहिनी के नाओ की
[illegible]ति इहां कहा सोभा भई फेरि कारक दीयक में उदाहरन दियो पथिक जात हैं आवत हैं देषै है सकै
हैं इहां गमनादि क्रिया सो एक कर्त्ता को अन्वय या सो कदापि विक्रिति विशेष भयो असे सभाव क्रिया
दि में विक्रिति विसेष विचारि लेनो जहां सो उत्पादि वाचक सो समनान हो उपमा उतिन्है विचारना हो सके
नेहहू कि विवरन भमे संदेह होनिरूपणम् ५ अथ दोषनिरूपनं कहू दोष है उचित कहिं कहूं दोष
गुन होय कहू दोष नहिं गुन नहीं असे कहत जोग १ कोपजनक वक्ता जहां १ उद्धत वाच्य रसमो दिरोहा
दिकार सरनिए २ श्रुतिकटु गुनजुक दोहि २ उहजहु की बाद ये विमारो ग्रीरि निउचारिवि कट सुभ
टके वह कौकारि दिउ महिजारि ३ इहां रौद्र रसके कोपक कोपजनक वक्ता को उक्ति में श्रुतिकटु गुन लेक
नारि के वीर टर [illegible] की नेक मे अचंज अभेक उरंग भीते हनुमन्त कि सिगजे ४ इहां उहन हनुमान वा
चन हां कवीरवने गुन आदि पद सो वीर वीभत्स सान जानिए अर्के किरन को देषि के यह विनकमन है
यथा पिथ्यो न ग्रेन कहू देहन पापको थाय ५ श्रृंगारादि रसन हि नहै याते इहां कुवीरवने ताव दोषभीत
हो भयो औ गुन भी नहीं भयो कछु भवने तो रसमे दोषक हूं गुन है यह के धोरे वयं रस कन करन है गाज
न वन मरवा राज रूप पटल पटि पट के मदो पाके न को गोद वाज ६ यह भीर सदे याने गुन दोष युक्त विन
महोन दी सरूप रो के रविको मयूष नहो षवे उ [illegible] कन नैन ताराचे में परम रिले रूषी न हो उ पजहां मेटे जो पिरूष

गुछनीच
ग्ररंड

३३

गने रूकतावतालै जैसे बराबरी रसोई पाके

कै॰ ३२

भूषनहोतैंजवतिनकेसोवै अविभरिलैं कोकिलसोकाकतैं कहायलेमधुरवाकपाकी ज्यौंकगांवमें गंवारिनकेयसिलैमोहनिवहोवैअसैंउदनबराबरी कोथलीहीमेंरावरीतैंकरिले ९ इहांभीषवेरा वेइत्यादिशब्दनीरसमेंदोषभीनहींगुनभीनहीं इतिअतिकदूअर्थप्रदोष॰ आदिमेनिहतार्थप्र पुक्तगुनजोतिए अप्रयुक्तनिहतार्थगुनसोपद्यादिमेंजानिसरतसमैजहांसातरसप्रसलीलदो षनमानि ८ सोहनकोपुलककरालियेविदोहानिविकटलषानअमनभोमहविविजयप्रियदर्पक सोमधुहानि ९ दर्पककामजेसोमामश्रीहकसमहानहै किंवादर्पकजोर्कमसोसोभनहैश्रुतिमध नकामुकहैवन १ औथनुष २ हूकोकविकहैविकटकराल १ सुभग २ देउकट॰ तीव्र १ समञ्जरतां नकहेतातनमैंयस्त॰ सुधा १ वारि २ धृत ३ मोक्ष ४ हूकोगोरस ५ कोप्रिय ६ हूकोसोच कोडी १ हेमराहेरा ५॰ विजय॰ जय २ पार्थ २ विमान ३ हूकामुकआदिएकअर्थमेप्रसिद्ध औरिमें अप्रसि द्वकालिकाश्यवपुलैसाधनरतनिनवाहसोहतहैअतिचिकुरसोभजोकुममोनाह ९ कालिकाजा केवपुमेलसहै किंवाकालिकासोजाकोवपुलसेहै कालिकाश्रुमेघमाल १ औगोरी २ सुरा ३ दामेहै नोगानीकोभेद ४ नवमेघ ५ हूमेकालिकाहै साधननिहतिमेरदनहैसाधन॰ सुसिद्ध २ ह॰ नि हतिरवथ ३ सेनाथ उरिउपाय ५ कहिश्रीरामजीकोवनसमैंवननरावनकेमारिवेकउपायमेकिवा वेसवनमैरतचिकुरसपेनासोसोहनहैवनमेजटाराषीहैतासोंचिकुर १ केस १ अहि २ मेल ३ औमि चेचल ४ हूविचारहूउमा १ कनककार २ सिय ३ कुमारी केदकेलियेहूसवइहांभीएकअर्थमेप्रसिद्धआ दिपदसोचित्रकाव्यआनमकभीकेतनभाषाकविकहतहैमेजानिप्रियएमाथवीमाथवीसवम

२२

व

नारिकैरववनकेरंभमएउत्सवउत्सैधारि ॥ नायिकामाथवीमदिराकेवसहोयकैनायकपासमाथवी
कुटनीकोभेजैदकैरवकुमुदनाकोवनउदीपनहेसोमानकोशत्रुभएघातेंउत्सवकोपताभेद्दषेधा
निकैप्रमानमाथवीदकुटनी१रूम्हरा२रूवासंति३डुकोकविजानदूतीनहिकैरव०सत्रु१कमो
दरक्षली१मगभेद१हमीनरराजीव०रुकेजटिउत्सव०दर्ष१सकोपकदेदईरवोलतसुनिसधोद
ईरआयोहेरिसाजिसिंगारसिंगारदिनपदिरिसिंगारसुफेरि१२प्रमानदई०नायद१भेकहुवि
रुर०सनागस१श्रृंगारसुरत१२रसभेद२अहसेउर१लोगधसुचूने५फिरिलोयनकोलोय
नसषीकोनकानत्नमिहारिराजीवरुराजीवपुनिराजीवदिदियवारि१३पीछेकेरववृत्यादिमेक
योदेखिमुदिरआयोमुदिरमजरनलवदवादउपासगदृगनेकदेरोपकदाळेनिहारि१४मु
दिर०सकामुक१मेदरमकुर०स०दर्पन१वकुलरकली१रुकुलालदेउथलषकनीभरनतूनीरा
सनिषंगा१कदं०उपासंगधजानोरुधि५वान१विशिषरू०प्रघनरुफेसि०आसुगधअहजिह्म
ग५पग६कलेव०मार्गन८स्रोप९पत्री१०इषु११सर१२पगसोहतिनासोमंजरीमजरीसुलिय
घतिलपिचंपलाकाकोरमुलमयोरसिलवसजाने१५श्रुतिभूषनमजरी०स्रुमतिलकाव
ल्लरी१थूलमकरंदमकुलउदा१०आवाम्ररअहवचपलाअसती१बीजुरअथिरफिरिसिल०
रमन१अरुकामरुहूवानकोन्तमानिग्रयस्त्रीउरुषकेरदसमेलजात्येजकअसली लगुनतियसोन
दिकुटेसककविनसुपारीआदिफोरनकोसादैहमैगदजानतिकैनोदि१९रहोलजाव्येजकअसी
लदोषसोगुनभयोग्यानदेदईवडीमंदरीननिकवानिवुदेकैदेहोयजवहेश्रीविवुलाईएसुषकदि

सकैनकोय ९ सोनरसमैंग्रग्रीलगुनलोचनकीचरउदरमलमोसगोविकुचनोनितउपगतम
रषतहोतनिमोहनगुनषोनि १८ सदिमगुनसोदिसमुवाजस्नातिकोंमोहीदोषनहीसमफोस
वकेही १९ जहांकनकरचनोमिलेग्रतिविभूतिसरसायलाघनकोभूषनलहेहग्रमोतुरइकभा
यरेचयोगभीनहीमिलेरहोएताकोवर्नेनहैकिवाकविकोवर्ननहैग्रयहूनोपरलयोहैजोनि
परैहैकविएताकोवर्ननकरेहैमिक्षुककीनिदाएताकोस्नातिहुहोग्रयग्रमनोतगुनसमुफि
लेननहैग्रयकोग्रमतोतगुनघातताहिततोनमसोकहीवेवे पैवानर। स्थलीनदोहैयह
व्याकरणमेंप्रसिद्धसबैयप्रसिद्धनहींग्रोमोंजोयासम्भप्रसिद्धमा०क्लिष्टवग्रादशाहहीतिपतोभा
षामेंवनेनहीग्रोनहोंग्रापनोमनमेंविचारकरेनहाभीग्रसपरग्रावेनहाभीदोषनहीग्रयग्राम
पनकोहैसुवचनगोवारकोग्राम्यगुनतिहियामसोगपानसोदीरजोभरैनविनकिहिकाम २२
ग्रयन्नसनपदगुनहयग्रादिवसजोकहैंगुहोनसनगुनजानगएगएतनिकेग्रलोजाततानलजनहिया
न २३ नायकमोहितजिगएग्रादिपदेसाकभौलोजिएविहारीहैघाजागतवेसिगोसोकरलमोकपा
रकिनहैग्राततजातभतिकोजानेकिहिवार २४ जेसीमेलगारेग्रोनायकरहोविरहिनीकोउ
क्तिमेंदोषनहीग्रधिकपदभीकहूगुनजोनिएग्रेयानरहनिवारुनविनेहरोषिवितग्रवदातहि
जाननहेरसिकजाननहैयहबात २५ नहोरसिकजानतहैसोनहीजाननहैयहग्रथैदोषवाभनहीं
कह्योनाहीसोंजानिवोवहस्याफेरिजाननपदकह्योतासोंपदग्रथै निकमोरसिक
हीजानततहैग्रोरिनहीजाननहैग्रोरिनहीजाननहैग्रोरिकेमानिवेकोनिषधकियोग्रपुनरुक्त

११

ओरहरेहरोयमेंगुनविदितकथन १ विषादरसमेंजहे लालानअर्थास ३ विस्मय ४ क्रोध ५ हठीनता ६ इत्या
दिसमुक्रमस २९ अथर्यातरसकथितहैंवाक्य १ प्रसादन ४ मादि हृषि ६ हनिश्चय ॥ मैंलषोदोष
ननिकहेनादि ३१ अथविदितकथनविदितकहि एविधेयनिर्है सज्जोनिएकाहूकोग्रवेसोकारिको
ईवातकहि एउहैसमेंमेंविग्रहनग्रथवतग्रहनपिकानभाषाभूषनहग्रुतिपरवाहपरवाहजे।
वलेलोनाम २८ रविउदेशहग्रहनविधेयहतोकोफेमिक ह्योयातेइहा दोषनहोसएकेस्तानमेंसहभीभा
सनहेयहकेतनेलायनिकेमतहेअथवतलालपिकानेअसोकहेओगिहीनरहंभासनहेपुनरुक्तिको
ग्रणमहेवीरमेंदोषनहींयहनियमनहींहै जहांचमत्कारहोयअलंकारउपजावेनहांदोषनहींद्रग्रथ
तिरहोएकावलीअलंकारमयोयेअसेंआहुतिदीपकआदिजानिएविषादमेविहारीचलनचलननेलोल
वलेसबसुषसेगललागयग्रीषमवासरशिसिरनिसपियमोपासवसाय २४ माउअहोपिपमादुलमस्त
वीरहेगेग्रापकामसिलीमुषमानिहेमोहिचदाएचाप २० सनिरीसजनीरजनीकोकथाइनैनेचको
रनिजोविनहेसुपचेदसुजानसजीवनिकोलषियासमहेकछुरैनिनहेअभिलाषनिआतुरनाहेवदीव
नहीबुनअोनटग्रानिकहेसुविदानजानिपरोश्रमसोकितहू विसवासिनिवीतिगई ३१ इहांविहान
ओवीतिजानेएकअर्थहेपदोषनहीं अथलाराजप्रासभाषामेंभूषनपीयनिकजाकेसषीयामचादि
नोआदिपीयनिकरजाकेनहींहामचादिनीनाहि ३२ अथविस्मयआअलेलालअलेलीकलनिकोरे
लषिलषिसषीसिहानिआजुकालिमेंदेषियेउरउकसौंहीभौंनि २३ काललषीकछुआरहींआजुल
षीकछुओरदिनदिनछिनछिनदेषियेछवकोओरैतौरलषीलषीवषानसोकेहोअथक्रोधमें

35

मारौंन हि मारो जु सव चक्र सहित कलि मंहि दिन पन एहर कौं रवौ हाव लषत हो नाहिं ३४ कनी भरन चमू ।
सेना २ प्रतना ३ कटवाहिनी ४ रुथ्वजिनी ५ अनीकिनी ६ वलु ७ सैन्य ८ लहफिरि चक्र ९ अनीक १० वरू
थिनी ११ व्यूह १२ सवलविन्यास १३ किययुध १४ संप्रहार १५ सं[illegible]ट १६ सजुग १७ कलि १८ आहव १९ हल
द अयुद्दो नना मैं रसिक प्रिया हू रवै न देषन को हू यहीन पगाई हू तो लिषि हू लिषि चौ वी देषि मिल्यो मन
हो हू मिली मिलि षिल वे हू कौं मिली मति मो ठौ ऐसे मे आगि चलाय हो के सव कैसे हू काढ़ कुमार हे री
वौ हू है न वार मे वार के ना रैग्यो हू टि लाल हू मैं न मेरे वी ३६ आनि दयाल लाल सी मुनेंनो मुनेंनो नल गि सिहैं का
न शौषा विना सक विरदत य अवे उ षसैंन मोन ३७ अपरद्या मैं जाइ हवेन्न नपथि कपे रिकहति
वरजाद प्रियान मौवत पाय हो पीछे करी होकाद ३८ मति अनाथ जो वनि दूनेम निरे हनेगवारक ।
हि को उ जन रदे य गो व हिज मके र रवार ३९ अथ अर्थांनर सक्रमित वाचा मैं अर्थांनर सक्रमित मैं हो ।
घत निक मनि हे रि भाषा भूषन को कि लहै कोकिल [illegible] जवे गि तु मैं कहि है देवि ४० हू सरी को
किलसहूनिक स्मा हाय कैं औ गि अर्थ में गयो मधु रसा हू कोकयो सवको मनोहर लागौ अ सोसह को
जव वाले ये मो अभ्या मदे मे कवि हो परि हैं गद गद ह्वे है गी वो म को सुवीच हैं गो सुरे ४१ इहां गद को अ
र्थ सेना हू सरा गद को अर्थ भ्रू वि अर्थ प्रमाद न मे जो मैं कवि मे कहो तो हिनि दो वि रि विहारी [illegible] देवि हि ति मो
औ स्लो सो हू करौरि करो वि ४२ इहां वाजो करनो है ह वि मे आयो आयो पीयमो अैसे जानि अथ मैं यहा है
यही दे अैसे [illegible] जानिए अथ निसदोष स्नुक विविवक्षित अर्थ को भ्रम्या [illegible] कनहि हो नोता तातेर स्नावक
अरय करै क हू उद्योन ४३ कवि को जो विवक्षित अर्थ ता की प्रतीति को न ही करावत है या ते गतस

३५

स्त्री नैं असमर्थ अवाचक निरर्थक ए तीन्यों दोष कवि नैं भलो नायिका कौ छोड्यो तौ नायका की स्तुति विव
क्षित है भलो उहष वाची मह है सो नायिका की स्तुति को प्रतीति कराव निहार नहीं भयो असमर्थ असम
र्थक विको विवक्षित चलन ता मैं है ना आदि शब्द मारन कौ कहै गो असमर्थ अवाचक निरर्थक तो चरन
पूरन कौ ए औ कवि को जो विवक्षित अर्थ ता को तिरस्कारक जो अर्थ ता की प्रतीति कौ कराव सो ऊ गु
न नहीं होय सो विदग्ध पद है हां कवि को विवक्षित अर्थ है पर तौ सो अनासक पद स्तुति ता को हारक
है असमर्थ अन्य अर्थ क सो सबै क में वाह्य आदि निहोयो तौ निन्द्य दोष जानि परत है असमर्थ तुविता यन्न दो
ष है तन है तो विरुद्ध मति कृत कैयो तो निन्द्य दोष है यह विरुद्ध मति कृत परिहार में गुन है तन है एक ही शु
द्ध को नाम विन भी है जन्म भी है ता सैं हां सकर नौ विलब्धु में जनक की सो है पीया समर्थ जो समर्थ
कैं आपुन में प्रत्यहार पथ आनेर मग आदि के उक्ति मैं न्यून पद भी गुन होय अमर्माहीं पिय नाहीं गहो।
वो हो ह मनो हो ह मनो होय पर कहीं हो सो करनि है तुम सो नहीं कहति एतनाऊ परसा जो मो परतै है।
हो न न भयो पतला कथक हरगु नंद दु को दंड को षंड कियो जिनि श्रानित में सो हार सु जो ति है कहो
जो वि मैं पानि ४५ इहां है में स को परसुराम जी को वाक्य उत्तराद्धे मैं आधान तो निविनय जनक औ रा
मनी के वाक्य इहां दोष नहीं अथ समाप्त पुनरात गुन जा इहां वाह्य है आसमाप्त कवि वि शेषन नहीं है इहां
न हो समाप्त पुनरात दोष नहीं दोहा तें पिय सषि पर देस को जब तें गौन कियो नतो अति है संदेसो कुशल को
न बनै दीन न दीन ४६ इहां वाह्य है है विशेषन भी न ही है यातें दोष नहीं समाप्त करि विशेषन मात्र है नै
मैं यह दोष पहैं यद सादिन्य दर्पन है दोह बिहारी जो ज्यों व नज्न बंदन कुच मिति आति आयि कौ यत्नो सो कि

कोर ६

दोहा

कौन दियो। तजो दीन है।

वा संसे दियो किन नहीं दियो तो को २

कोल

३८

वछिनकदिक्षपाछीनपरतनितिनाय ४७ अपिकायदेरहोवाकाप्रस्नकियोफेरआगेंकह्योतो
भीदोषनहींकविनहाविगयोरावनंचायोजिनकयलासवानसैंवलीअथनदेषतदहेविगोचादेकु
वैनोवनपैनोमिनसकतभूपदमिकविकहेहैंजोसआसलोउसरिगोसावदोकिसोवकामवारिणकेरी
रअसोरामकोविलोकेवामरूपनेनभरिगोपकेनमोहायमैलेषे ज्योरघुनाथजवकांचकोसो
वासननसरामसनविषरिगो ४८ इहांचारिहेतकमेवाकाप्रस्नकियोदेमोभीदोषनहींकवितकोस
ललरेसमुतवनकोगवनकीनोदोननिकोभागभोअसराहिये थरकोगीधकोउधास्योआकवेथुहू
कोनास्योहियोवालिकोविदास्योहैतिसानाकरिमूरकोगुनिनिकोमषसाध्योदेवनिकोभषसा
ध्योपषकेविभीषनकोभारहस्योथरकोलकनारिछ्योरकियोरछकोसंहारकियोहरोकोअहार
देकेहारकियोहरको ४९ अथप्रसिद्धअर्थमैतिदैनदोषनाहींचदहिलोदिनहिंकजगुनकेज
लोहिगुनचंदभोगतेश्रीनाहिराधिकामुषलोद्दपरआनंद ५० दिनमेंचंदमोकांतिहीनहैरातिमै
कमलसोभाहीनहैसोयहनहीभोगिवेकोकारनसोलाकप्रसिद्धदेविहहै विहारीचलतचलतेलो
लेचलेसबसुषसंगलगायग्रीषमवासरसिसिरनिसिपियमोपासवसाय ५१ दिनरातिवडीहोतिहै
यहहेतममसिद्धहैलिष्योहैअजोगपदवनेनरसभंगकोकारनहैअजोगपदयथाएसायउवीसुनिकैस
मोहलोप्रनभयोमुनिकैअनुरागगेपाकाहूउमानिकैपागलरेहरुगोकिनहूकोउद्योनोलेभागेपानाथो
गयोरहिनाहिरहोसुधिअसोहैजहंप्रेमसोपागयोआनंदआगसमातनअसहीनंदववाउठिनाच
नलागेपो ५२ येसोहासवनेनअजोगपदकीजैजहांअनुकरनहैदोनसुदोषअदोषरहेचादतहिंय्या।

सोहा

दोहा

थकौ क्यों है दूषन पाव ५३ ऐसो सब ह्वा नेक ह्यो व हां दूषन पुष्ट क्योंकि होय सब जो पीके दोषक है
हैं ते अदोष होत है बड़े बड़े ह्वा माहि पैं गरूर कहे यह नोह गयो कहा वह का हलौ कह्यो हूं तो वन मांद ५४
बड़े बड़े श्रृंगार के प्रतिकूल वन तनाई कौ ठौर गयो गात संकुचित का हलौ तो अप्रयुक्त अनुकरन में दोषन
हीं ऐसे और भी जानिये आछो लगै गुन न तहां न लगै दोष हां है विद्रुमा भलो दोहू नहीं दोष अदोष न टेरि
५५ अथ रस आदि को अदोष रस संचारी थायि जहां विनानाम न बुफाय कारन कारज हां नजहं संचा
री सु कहाय ५६ रस औ संचारी औ स्थायी जहां नाम कहैं विना नहीं समुझे परै न हां नाम कहे दोषन
हीं औ जहां कारन काम जहां होय एक कारन होय ह सब ह्वा जहोय तहां भी दोष नहीं है दयो रस हों सं
पिय निय है लाज स रूप भूर नि वेत सिंगार पिय निमित पराति सु अनूप ५७ इहां रस को और सं वा
वक श्रृंगार को औ संचारी लाज को औ श्रृंगार रस को स्थायी रति को नाम कहैं विना प्रतीति नहीं होति

नि

है यातें नाम कहे दोष नहीं रस ध्वनि में कहे हैं संचारी आप नी क्रियाकु जो नियत है सो इहां नहीं है
तिय की चित वनि वाल की मिली लाज भय लस हिय उन्माद हमाह न्तु तन्त्र लौ इति कलेस ५८ इ
हां भी नाम कहे विना संचारी नहीं जान्यो जाय तिय की उन्मतता परी चे चलता उ प जायतासों लाज भ
ई औरी हरि हि विलोकति आय ५९ तिय की जो उन्मत्तता सों चंचलता कारन उजेन को इस मादि में दो
ष नहीं ऐसे नानि ए सभा प्रकास में रस और स दो व औ अदोष कह्यो यातें इहां विशेषक विन हीलि
ख्यो विरोधी रस को स्मरन में दोष नहीं जो करसों कुच को गह तजावक है तवनाय मोह गरजन को
रचे सो रन म स्योल घाय ६० इहां करुन रस में श्रृंगार को स्मरन है श्रृंगार करुन सों विरोध है तो भी दो

इहां नायक नायकके गुन व कहते

घनहीं सुहो श्रृंगार सों करुन बटै है कवनपिय दुसि करुण है रिसक गहन के सजे से के ना घर वहे तैसे
गए विदेस ८१ अैसो नायक के मैं रैना यिका कों नगुन कहि कैं करना को पोषैं कवित की बांधीवान
मैं विरुद्धता दोष नहीं कवित्त स्याम कहै पाप २ नभर अमि रे सतजम दास की गति वे जहां जल नहीं ज
ल जात है को अथ अनुराग हू के रंग को कहत लाल वरषा मैं मान स को हंस उड़िजात है चंद्रिका पिवैं चके
र गावें जे हों ना चै मोर भाषै जहां वा रि सें मराल निसु हात है च पापैं न भै र नव संत माल ती को मोर फूल
न अैसो कना रिल है पाय ग्रात है ८२ सवैया नाति के आनन के मद के परे फूलत है बकुले यह जान
इ मैं न के वान सों फूटै हियो अौ कदा इ सो कवित्त सपिकान इ फूल के का मके वान अौ चाप अौ भौ
रोन की पंच चंद्रिमान इ यों सम मैं कजो नि सा मक मोद फूले न अैसो कनि के फल गनइ ८३ साहित्य द
र्पन मैं काम के पुष्प कोन भी नामक होत है इति श्री हरिचरनदास कृते हरि प्रकाश विवल्ल भे अदोष निरूप
णम् ८ अथ काव्य चंद्रिका तें कवि न सम समस्या पूरण उपाय लिषै है अथ यश रुह वस्तु को लघु कहि वर नैं सृष्टि
काल १ कल्यांत २ मैं होय पूरब अवलोक ३ तकक कथन मैं व स्तु गहल हुक र वर नि अ यो क अथ सृ
ष्टि काल है हरि प्रसाद लोहि विश्व को रचन लगे पाक र तन भ हक नक अति हो भये वारत ल्य जु पहार र
स मस्या होत भए सवैसा नुमान पर मानु से औ वित र ह भी पूरन होय स म ह वांघि व की वर को कोविन।
होत भए सवै सानुमान परमा नु से वुद्धि चलाइवे के लिए लिषत है अथ कल्यांत लघुता लहत जुगात
मैं गुरु सतो क अह हक करते होत जु करटस औ तत्तु स्व हरि जक इ मल भ सो सत्तर म हो हद दर भ सो अ
य हूर अवलोकन को लल सें अति दूर तें दिषैं को ल सम मान ताब दी सत दीघ सो लसें थाल सो भान ४ अ

॥ कोल मस्त र स्सित ररतेदे बहूत कोल घीसमान लसतहै
ता रा दीप से भानु थाल सो लसत है ॥ १२

वनकेकयनमारेलयतेमल्लगुरुमझजेमानतमगराजेमवलघुकोगुरुकरिकेदततेजगमैंकविराज
५ हेतनजगारिमेंजलथिमेंउत्पत्तिकोश्रोहोकिकेंटवस्तुकोंमझनकगिवदनोंजतोमोकि ६ ग्रथकतनजु
गकोग्रादिमेंलषोसत्यजुगग्रादिमेंवडोकोंननोदहोयनगसममस्तनहोनदेवीरनततरवरजोग ७
समसावकमोममकग्रहसमकस्तुतेतरमोग्रथसमुद्रमैनिकरीपारावारनेपैविसवेतीमोदिपोदी
सोपादोनकोदोरिदोतिगिलिजातिद ८ राजसातसमातदेनैनमैमीनकमीनगिलेग्रतिपीनमनतरा
हिउत्पत्तिकोमैंकहोलदासुरदेसकोकोजेइतोवषानभयकारीदषतलगेमनोसिदहस्तान ९ कालको
सीगाजुमानोवाजकेचरनमेंप्रोटोकिस्तदेमिलानननडतिवदतिमोसोंकहोनेजायग्रतिरिकग्रविलुक
मेंक्योंकरिसकेसमाय १० कहोदेकमानकहोवानसववारिकोसकुवस्तुमेंएककोचरनोसकवि
ग्रनेकजलदपनत्यादिमेंजानतनदसविवक ११ सकुमेंकाचसदलमेंग्रागकोपरीवकुनवाकोदतउ
पतिग्रतननादीनस्पातिमपिपूनेकोनाद १२ साचमेंपाचनिसाकरदषाभालमेंदाऊकपालमेंदाऊकने
फलमेंमनिविचितमापाचित्रकसप्रमेंप्रसतेहारसमतलषमवेग्रसभवसभवेमतोकनिग्रवरोष १३
मासादहदतिचककोमायाचुतग्रमानभुजविहीनसंग्राममेंग्रसुरचलावतवान १४ सीसविहीन
रुंडमविलोचनकहूविनेदेचित्रमेलिषोग्रलीनदेनिमासमाषीपावकोकोपतहजसुमेरु १५ य
हमायामेंचित्रमेसप्रमेंमोसंभवैवैमसप्रमेंमाषीकेपावकेमारेसुमेरुकोपतदेषैकरमेलिषेलत
वालदिवाकरसप्रमेंदेष्योसजनीसप्रमेंफिरिनाविलोक्योजागिहोयडेदहोवदनहिकनहसोचत
केग्रागि १६ वालदपेरीमेंसीगसमाकोग्रथग्रभ्रातरमवेषाकालकतोसषपावेकहोपुनिको

का. ३८

तबिनाघुरसूनकह्यावतनासकरैकुलहूहिकोकोननहीपतिसोंककुआदरपावतहोरीऔवागतउ
गमेंनाहकहाकोरिनासिसांरेगरचावनअर्थकोमेलवनेनजहाकहूगोदमेंअगेजवाकषिलावत
१८ दोरतपांगलेदेषतऔधरअथश्लेषमेंकाविनकरषकरापेजातनागनचढतनितिहिसरदतसुंद
रीमेंजाकोषासहेनजविनऔवतसकोरेऔकुसलगातजरजरदेहहरिकेहेसडूलासदैभोगनवि
हीनप्रनमालहिजपतरैहैमाननलैबुलनफिरिविरदप्रकासैहैहृदाकोरैनरैहैवरषसाठिसन्नीमें
जोबनभयोकैकोइभूपसविलासहै १९ कनकोंयकेपरेजातहैऔकरपकेसरैगनोंहीहृदयरह्यो
होहिरसचाहषासाहोराऔषासरोगकुकहिएउरासलगातमेंजरपेसासोमागो हैभोगनहीहैवि
हीनजाकेहसवोसएतोतछलभीविरदविनष्टभयोहेरहहोतजाकोअथअनय अनयगृह
व्यतिरेककहिपुरीसमससाजायजाकेसावेसाचनोसोअनयजुकहाय १९ वालककाहकुमारजो
मोरमञ्जविसालतामछोरकुकेवमैपैवेगोकुंजरजालअथव्यतिरेकजिहिंअभावव्यतिरेकेनदृष्ट्र
भावनहोजायआगकेहेअतिवालनहिंनीहपुनिसोनाहोय २१ लोकोकिंऔरामहिपरवामवमन।
हिभाषतहेकोयनहिंतिथिवारमिकेपरेकवहीपूनोहोय २२ सोचमानतेधमिकोलागोहेगदनहेरु
तिसमसमापूरनोपायः अथअजननास्थायनकेननककेहैबजननाहृथाहेहसुप्रयोजनलछनोतोंही
सोध्यनिजानिहथाअंजननाहूनिहेकहतकिनसज्ञान २३ नदीमेंवरप्रयोजनवतीसोनदीकेतीरवरसो
तलताप्रविज्ञतालक्षनानहोससुफायसकेहोतिपरैफिरनहींउठैदोहासीतललतादिकहानकोहूहै
लछनपेमिश्रथेवायनहिंभासइदेहजुकियहहगोरि २४ सीतलताआदिजानिवेकोपरलछना

३८

जाके देषस्र भावे तल षिम्रभावजहमौद
भावव्यतिरेक तहै जोकहि केसिरमैर १

३ ऐसे तें प्रसंग में तो रूढ सो जोगिक को बाधक है जायगो फेर जो जोगिक होय गो सो अर्थ जना ही सें ... नसो अनही होयगो ॥ मेघपर रूढ है ईहां जोगिक को बाध भयो फेर अपने अर्थ करके व्यंजना ही सें ऐसे है

करैंगे तो न नहीं को अप्रथम भयो तो रस अवश्य बाधन हीं जो लक्षना होय दोहा सीतलतादिक के लियें कविक
रिदै है अनुमान सवै गैर निर्वहै नहीं यह तो निश्चय जानें २५ सवबोर में अनुमान नहीं लगे दोहा सुप्रतीक (पूर्वदिसा)
दिसनु लषति वारिवाह रोह चाह है बाय दोयगो रूढ सो जोगिक को कविनाद २६ वारिवाह मेहु पर रूढ
है जो पानी भरें है ता पर अर्थ सो लगे है जोगिक है सो नहीं जामें नायगो सुप्रतीक दिग्गजना की दिसा जा
(अनुमान करके) नेगे पै सुंदर है प्रतीक अंगराज को यह अर्थ उनमान सो नहीं आवैगो और वारिवाह आदि में व्यंजना होय सो
ग्रैमें जासो अर्थ व्यंजना विचार है मारे वना पत्र्यो षक नितरो सन जोवन कै उपजै है रिवातन जहां गुन षानि
२० निहारी लोयन लोने लगे अहनेह सो पूरि सरसन होत विकरी नाहिं रेषें दित समर्मति सो रस बूझत है थन
के करचारी जे कुलदीपक है कवित कुलदीपक को पद रीति सुधारी २७ रस को पनहीं उपजे है औरो
सन भंका सउपने है वान वचन औ वात व तो गुन औ जमादि गुन इ गुनी ति गुनी लोयन नेत्र औ दीप सिषा
सो लायु रूषा कवि सो श्रृंगार नहीं वनै नेनहूं मोति औ नेह तेल सरजो था औ सूर अर्थ नाको नहीं भकास को
रोस महू पन सुंदर मनि के आगे दीआ नहीं वे रोय यह कहत हैं रस श्रृंगार आदि औ रस जल थन दो लति औ
थन सो जो ऐसो पद ते जो कुलदीपक है कवित तिन को जगमें यह रीति विचारी तो दीपक उपमा सो आव
तो न व उनमे हो तो दीपक सहदीक द्यो ता सो मन या मम भयो फेरि सवैया कोक विलास व गावति देत रूनें
सषप्रैवर नील वनावे भाग हरी न लहे जतनों सुजहां ने विराजत सेन जनावे मित्र सो नाहिं मिली अवलो शुनि
पाविन कौ हरि गेह पढावे सो करनी की लगी यह जोमिनि नाहिं सषी नव कामिनी आवे २८ कोक साह।
औ कोक चकवा नाके विलास कों व दावे है हूस करे है यह अर्थ न रूनपुरुष औ तरुन हंसक्षेन कों अवरवस।

कहै

औरौं वर आकास भाग भारपना की त्वरीन सौं औ भाग प्रातना दिव री में द जार जनन करै नौ न हो मिलैं जहो
न में विराजति है औ जहो विशे सो पक्षी कोना मह है सो न हो रा जत है से न दुसारा औ सेन सो व दोमित्र हि त्
औ मित्र स ये पत्री पाती औ पत्री पक्षी सौ करै सो कार औ सौ कर औं सुदो भ्रात्राय की ति २९ औ वरर दन पा
क सासन के व स स दा छाया नल पानि औ सुर निरा ची दे षी है भू षित पिरत हैं चि चंदन कुसुम गात
देवर करन राजी द्वीपगति ले षी है सो दति कनक न गभा जति सुर ग्रामल में अलका वलि वीना सो है चिप
षी है जल पित सद न पिप्र षजा को ना नियन अक्षगर है नहो औ लीन री आ वरे षी है ३० औ वर जो वसु सो।
जा को पाक पवित्र रदन है सासन सो षकि वा मासु ना के वस में स दार हति है अम रापा ग औ वर आकास
न हो रह तिहै पाक सासन इंद्र ना के सदा वस में औ जा की छाया कों नि दे षि वे में न हो आ वति है औ सीलजो
ली है वस्त्र सोट को चलति है औ देवता की छाया पर छाया न हो सुर नि षाद आदि औ सुर देवता दुवि
कवि चंदन सो कुसुम सों गात भू षित कि ए फिरति है औ दीरि चंदन कल्प वृक्ष को भेद है ता के कुसुम सों
गात भू षित कि ए फिरति है देवर को राजी राषति है औ वर वा क्रितना को देके राजी करति है हीं हाथो।
की सी गति औ हो पनि में जा की गति कनक सो ना ज वा दिर सो सोह तिहै औ कनक न गसु मे रुत हां सो ह
तिहै औ स सुर के ग्राम में राजति है औ गाइवे में सात सुर औ तीनि ग्राम है सुर सहित ग्राम सो राजति है अ
लक की आवली पंक्ति जा को लसै है औ वी ना प्रवीन जो है ता सो जा की रुचि है अप्सरा अलका कुवेर
की पुरी वलि सौं वाथन वी ना सो जा की रुचि दे षी है जा को सद ज को जलपित वालि वा पिप्र षभ्रमत सो
जो नि पर तै है अप्सरा समुद्र सौं निकरी है जल जा को पिता है सहज भाई जा को पियूष है ३१ गति गुरता

नसुषकरननिद्रावोदहिचाहतरसनसुषवालानामरतहै राषतविभूतिफेरिमुक्ताफलहारचहैभावत
भवनमालअरुकंठियरतहैआसनअनेकगहैकेसरितचासोसोहैकामनीकेवसमोदरजनिभरतहैके
यौंभोगगणपेकोहीभोगीहैजतमोदिकेयोजोगासाधिकोईजोगीविचरतहै ३२ भोगीरातिसुषसों
गुदरानकरतहैजोगीरातिमेंगुदरानिकोसींकमिरागषेहैतासोंसुषनिद्राकोंकरतहैसुषसोंइवेमें
भीकहतहैभोगीरसनिकोंचाहतहैसुषसोंवालानवीनस्त्रीकेनामसोंरतहैजोगीरसकोंषटरसता
कोंनहीचाहतहैवालाजीवालाजीकहतहैवालालमनजीकोनामहैभोगीविभूतिसंपतिकोंराषतहै
फेरिमुक्ताफलमोतीनाकोहारचाहतहैजोगीविभूतिराषतुकताकहिवडूतफलकोआहार
चाहतहैभोगीभवनघरजाकोंभावतहैजोगीभवसंसारनहींभावतहैभोगीअकोमालसंपत्रिकोंरा
षतहैजोगीअरुकमालाकोंधरतहैभोगीअनेकतरहकीजेहैआसासंवरहानकोवेवडूवाचकताकोंगा
हतहैजोगीअनेकगाहडआसनआदिकोंगहतहैकिंवाभोगीविलासकेअनेकआसनकोंगहतहैजोगी
अनेककीआसनिकोंनहीराषतिहैभोगीजाकीनचासोलागीकेसरिसोहतिहैजोगीकेसरीनाहरला
कीनचासोंसोहतहैभोगीकेमिनीस्त्रीताकेवसहैजोगीजीकीनवहैजाकेवसमेंकामहैभोगीरजनि
रातिमेमोदआनंदसोंभरतहैजोगीरजनिसोपूरिनेसोंसवृथाख्यालकरो० मति० लाल० सो० आज०
अलीअरी० रातितेंअरुसंगवेहैसोतिमरो० प्रीति० साल० सो० लाज० विनीहरी० दैवडोसुषहेहै
मोदभरो० राति० नोल० सो० राज० नेरोभलो० औरिहिएंउषपैहैप्रेमभरो० निनि० चालसो० काज०
अटाचलो० केतिकचोजववेहैहै ३३ ख्यालकरोसोतिमरेमोदभरोप्रेममथरो २ चामियअरुकरकेकहेदप्रति

कल्प्र
६०
40

हाके भेद ष्यालकरोमतिसोतिमरोप्रतिमोदभरोरतिप्रेमथरोनितिर ष्यालकरोमतिलाल ३ ऐसें जा
निएफेरि ष्यालकरो मतिलालसो ४ फेरि ष्यालकरोमतिलालसोप्राज ५ चारोतुकमें ऐसें पढिए
फेरि ष्यालकरोमतिलालसोप्राजअलीप्ररी ६ ऐसें रातितं ऐसें गवैहदेषवडोसुषहैदेयोंरिटिए
उषपैदकेतिकचोजवदेहैं ७ अलीप्ररीविनीवरीनेरोभलोप्रराचलो ८ ष्यालकरोअलीप्ररीसो
तिमरोविनीवरीमोदभरीनेरोभलोप्रेमथरोप्रराचलो ९ दोहा ष्यालकरोमतिलालसोसोतिमरो
प्रतिमालसोरभरोरतिजालसोप्रेमथरोनितिचाल १० सोरठा ष्यालकरोमतिलालसोतिमरोप्रति
मालसोमोदभरोरतिजालप्रेमथरोनितिचालसो ११ नीतिकीचालसोयाकोकामधेनुकोभेदकहत
हैंरुपावहछेदनिकरतहैंमालाकोरसकोलषज्यालाद्रतसरीरवालाएरसकोंचषैपालाकरतसचीर
१४ गोमूत्रिको १ अश्वगतिचरनगुप्त एकपादवेधमेंचलतहैंमानदानगुननाते मनआनदानगान

गोमूत्रिका

मा	ला	को	र	स	को	ल	षैं	ज्या	ला	द्र	र	त	स	री	र
वा	ला	ए	र	स	कों	च	षैं	पा	ला	क	र	त	स	ची	र

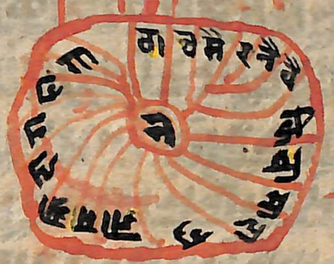
अश्वगति

मा	ला	को	र	स	को	ल	षै
ज्या	ला	द्र	र	त	स	री	र
वा	ला	ए	र	स	कों	च	षैं
पा	ला	क	र	त	स	ची	र

कपाटबंध

मा	ला
को	र
स	को
ल	षैं
ज्या	ला
द्र	र
त	स
री	र

वा	ला
ए	र
स	कों
च	षैं
पा	ला
क	र
त	स
ची	र



चरनगुप्तचित्र

मा	को	स	ल	ज्या	द्र	त	री
ला	र	कों	षैं	ला	र	स	र
का	ए	त	च	पा	क	त	च

हानसांनवानवनमैंनरन का व ज नैनपैनकिनबान ३५ अथवर्ननवंधवम है नपीतवसकर

नवसिदसनवदोवेहास सांनजा(नसतरातहूने

ननमानोपास ३६ छत्र

						का	पै	वि				
						ला	स	नि	नी	य		
						नहीं	मैं.	हि	जी	य		
			है	क	व	को	की	ज	त	ला	ज	
			जि	ब	ती	च	है	तु	प	च	ह	मो
वि			तमे	स	व	का	व	व	म	प	हि	त	कं
त	न	वो	ल	त	चा	है	गा	ग	ह	व	कैं	थ	व	का

छत्रबंध

छप्पर स नतीपवन मैं.

काव जरा पेंछे लो मन तली यं नदी ... जीय पु टेक्वका॥ बीग जत सासूजिबानी ...

हव पायत ... तक॥ वसभरम विनवं तन बोलत ... हेग ... हकां सवक॥

कावजराये तिति ... सावज ... पेचे व का॥ ... जात ... नजतनीतम

नेपकरनमस्तके॥ प्रीतदीत नितचेतवित कितमितगे तकितगेजे॥ वसन नीयवन मै

पीयावदकदसर्ही हासानैननचावतघाय स्समतचरस्तप्रकास ३८ धनुषवंधस्व रूप अथ चरणगुमनवलिषिपीय मध्य

मिलावि ह्यवयनस ... दुलासमदनसदनमनदरनमममकेमरगवास ३९ नचतरंचतसघसषि

सवरपरतजनितनरिगानवंवयन टवरचावरसवमन ...

... ४१ अथअंगेछुरचुन अं वारिनकरि सो भअतिजदे मदारजुतवाम गीयन की जहां

दुलनाअं सोहै संग्राम ४२ अथवेजन तनुन भरनी की सोभा जहां गुरु व्यास ४२ अथ तिहावलो।

अरनी

सलेषा

लीलहविलास करत जहार मदेषिये मैं सोगुण

कमांस ... सुंत

प	त	ट	ल	षि	गो	प	स	म	त	१ चरणगतमरूप
	ग्र	मि	त	वि	ह	ग	व	प	न	
स	द	ला	स	म	ट	न	स	द		
	न	म	ञ्ज	म	न	ह	र	त	म	
९	म	म	न	षि	क	म	ग	वा	स	
	नं	च	त	र	च	त	स	ष	स	२१
	षि	स	यं	र	ध	र	त	ज	ति	
	न	हि	ग	ग्र	व	न	व	व	य	
२	न	ह	व	र	वा	व	र	स	व	२।

केहरि

जातजात		गोतम
जातजात	हार पथ रूप	हित (कित)
सतपत		कितमित
गतमत		चेतचित
हतहोत		प्रीतरीत नित

लविला सचरत जदां रविदे षिपथे सेगगतस मासेपरकी सषि चोटसें काम हदैं सव जा मरहैं छ तियापरकीह दियासैन सांज सोजोतिहिये विरहानलके परकीरहै वाह

करकी करकी वन गोरव दाजु सैं वान सदा तन नंहौ मिलौ पिय सो यहौ लीषि मैं लहैं सम की ४४ नरे गोपकी नतू तिने रो पिया वस हो यके हार कोया ऐलरौ नाद का ता मो तु सोषद रैत ऊ आयो ऊनो लिये फूल छ्यौं वा की विलोकनि सो मति वा को कै नैछ नतो परवारैं परो परी प्रीतकी गांठिक वेतरटू येंद वकानिकें वनय्र ठाननरी ४५ अनी मानत ाहे मति आनदें तो हि विलोकन ही लियमो हिय नी धनी चातुर चाह है ते रावनावनि ता निमें नो सोन दूजो वनी वनी दैं जदां केलि करें वनि कीर च केलकला करै को पजनी जनी अंमतें तो समनो सज नीरति रैमकी।

लक्ष्मी

सवैया

घरकी

परकी

परी

रामपरी

41

तो परवारी झूठी ४८ करमें होड़ पावनि को परस्यो न रह्यो परदेस गयो व रमें सर सो हिय वे धन का मम

धी चवै है नैन निरंतर है हो वरमें सिर नायक रोवत तो न प्रान रहै तिद देव रसो न रसो ह रिवा सुषदेषन को

चित चाहत न जाय मिलो वरसो ४० अथ पोरसी आश्रन भाषा को चित्र कला ति कुजो अ जे धाने वेताबनने

वरचारु जमुरैद केतन न रूप रान रवहू रमेत ताव द अे सो न दी महतात व गहे मन मो य कलो रुप सारपै राज अ

न को ट कमार सेन मद है मन आठपै मोद रकी फलके लबि सो द र की नलगे पल को छन ५८ को ई लु।

गाई को वचन नायक को जाय दे कु ना कहो अज धाने घर सो वगो को अर्थ कहो जन एल गाई तो रतन ने मैं जव

रगह तो चाह सुंदर जमुरैद पत्रा केहै रूप राम सुष को नूर रूप वहू र रह र सो मे ताव द चमके है मह ता व चहै

मा अे सो मन को नहीं पकरै है जे सो मुषमन को गहै है मो पके मकला वडै हषमा रगाल पर सो भत है मन्नो।

को ट कवाल कमार सो पके है गभ्या अे छा मे जु मद हलै दे सन भले है गो हर मो मी की फलक सो दर पतिगु

य से स्कन पार सी अनुभाषा को चित्र कगछसि कगर हे तो जनप श्यसि कि रसि के वद रा सतनि हुरो ति छ

आमद सिकिन व ने सहूयुआ मद वा रा मा सनावि हारे ला मद मद्य गिर फन मषे दस्राव रंजे भ सवान उचा गो राजनि उ

ने लप ने अज गो हूराग्र षतूर थो न लि नैं र षवा रो ४९ को ई पुरुष को उकि सै रिनी सो गछ किना य दे कु

कहो गर हतः हरसो जनन पावसो लगाई को नास है जनें प श्यसि है ष है कि क्यों कानको ई रसिक पुरुष को

देषै द वद को अर्थ कहो रास मे सो च तिहारो किं क्यो नहीं वन विषै तिरसि को अधर दे है सव रा ति आमद आ

ई फेर वा रो वर पा भी आ रैं तो मुम को ओदे दम अघ आज गिर फै लप करी षेद हसो ई जा इहो वु षा वस्य न क

रोने कहि दिये प द मा रोल प न मुघ राज नि सो भै है अज गो हर मा नी सै न य के मो नी सो जा नि प यो किं यो अषत

रनाराननलिनेंकमलनाकोरछकहैं॥ अथनृरकीपारसीव्रजभाषाकोचित्रकदोहासोयहआगिलें ॥ राम्रोर ४
मचकेवारस्तुदूवकनवगूजहकेलनोमेवीनममरगूव ५० कोईनायकाकीतगीफकहैहै साचसिरकेकेम
४ आगिजस्वर्ष ॥ गगालरमचककुचवारकोअर्थहूवदेहूजआविवगूजगलाकेलवोहतानेरैंमवीनममें
देषतांहों मरगूवमनोहरहैहै पूवनोमेवीनममरगूववमपारसी अभन्तरकोहमारोकियोनरकोप्रका
करी सप्रसिद्धहैहमारीकविचातरीताभेंपारसीदेषिलेहुगेरूपगर्विताकीउक्तिजाकोईस्वप्नकोफलअफ
लविचारेंतासोंपारसीनृरकीकोचित्रकदोहासोअ॥ चेपुरसमनहुरामन्दोदमदरष्याचविजनीवीनाकाप
ता सीमेमिकेंवगुलाव ५१ सोअ॥ वेरतोमस्त्राप्यायपयोहोयतासोंरूपगर्विता नायकाकीउक्तिहैसोअ
विरतुरातोकोंपुरुसममछेहैमन्दोदममदेष्याटरे॥ वमपानोमेविजनीमो ५२ कोयहहतुरकीहैवी स्वा योहि
य नादेषनकैंको॥ सीकौनपुरुस॥ है यहतुरकीहै पुरुष अध्याहारसोंजोनिएवगुलावगुलावकोमेमी
कल्लनेमेथा॥ तेरेअंगकोसीसकुमारताओपुसवोयगुलावमेंनहीनिकसोहै अथयारसीदसभाषा
नृरकोकोचित्रककोईपुरुषएकांतमेंसोकोदेषिकेकहतहै सेवयाहूवनुराभनदोदम ॥ कामिनि
कापूसीवारदुबोंनदसोदमआनदरूकदासादबुलनवरायतोआगुलहायरचोदमतोईकारीउनो ल
मनहतमअजेआफिलसिनफेल्याअरीनमपावषनीहआपानेहुरकेताचीनमेंमायनमाकमियोनम
५२ सूवअक्कातुरातोकोमनमहोदमदेष्याहकामिनिकापूसोकोननवारकोअर्थहैकोनहैतैयहतुर
ईलातकें कीबुबोंनदसोदमपरूचामेंआमदआयोरूकदोआकासमेंयहतुरकीस्याहस्यामबुलनवादरकोनाम
तुरकोहैवरायतौरेलिएआभाषाहेगुलहाय०वहतफूलरूभाषाचीदमन्चुयामेनेतोईकारीनेरेआ

देव ते ल

गैंउजीग्राप० मन० मेहस्त मंहां नेरे ग्रांगे ग्रां पुमें हो ईकारौउजी० मनतरकी ग्रां नेकिलमिन ग्रांजकरता
हौं किलमिनवरकी फैल्या ग्रां गैनमदेसभाषा पायचेहूमान्तरको घजीदछपेषा नेहुरहू गाकहूरतरकोदि
वीमसो बन्दरको तेरोहै मेगोयमकदनाहाँ मैमोहि मीनमकरे ग्रांयबनभाषा ग्रांगैउदेसकी भाषाको
विवकमंदमस्तव्यानिमनदरनसदनवानिभूलैंहूनमलाभहूउनेपावयारिग्राईहैनियनानिचिनरावि
कुलकोविग्रारी दथिहोनिसौसनेहूउषयारिवो मानिले० न० उग्रा० ग्रमादेर० एसुनहोइलादसानार
कहिनैनारिवैकनवारवोलीसषिदेषिग्रागैलिदमुषनमोग्रवारवारीयाकिनेनपारिवो ५२ हेराया
उग्रांवसवजेमषीदै नेग्रमादेरहमसवकेब चनेनहीं० मानिले० नहींमानै० एसुनग्रांसोहाइलोभईहै
सानारतीकोकहिनवारिवाकहिनदींमकेकनवारवोलीमषिहैसषीकेननोवेनोहिकहीदेषिके
गोविंदकेउधकोनुमीनुमग्रारवारग्रांविवेरजवनदेषेगीनववाडीघरनहीयाकिनेनपारिवोयाकिने
रहिवेनपामिवोनहींमकेगीग्रायमावषाडीभाषाग्रांदेसभाषाकेविवकग्रालगेनभवणिसुणगुरु
जगमामगेकमलग इलफूलवालननिहारेके नाग्रडाउसामकोथाकामणिगविसवासमेहूयोरिस
रतिजपैहोकीविनारे केबूठबलिऊडेकालीकावलिसांहूवे एमभिलीजठपालिननलश्वरीविसार
कैंकाईजाणीकेमपणलीधाहूपवीधाहियायानेहीध्याणकाराजेलाजनसभावेके ५४ नायिकाना
यककोदेषिग्रासक्तभईहैनाकोदसामषीनायकसोकहतिहैवाकोभवनघरनहींग्रालगेनहींसाहा
नदेगरूजनकोविसरणसनुजाननिहैउहीपनहैतासोकमलग्रांगइलकुसुहमीनाकोनहीनिहारहै
नाथडेउसासनाषडेजलदनिसासेलेतिहै कीथाकियाकोमनतेनाहूकोविस्रामसनमैहैमाहूमा

तो

मान

न

मा

सषीनायकसौकहै ... कहतहै ... कूरवे पक... ...है ॥ ... उ... पावको ... नही विचकोपुल कीनसे पान ... कूरम ... ...

कीकहसोपेमकीव ... ... सीदेषलीकहीर भई है ... ... ना ... ...
कीधि

कवि ५१

रवाइकेपुरुषश्रोमाहसुंदरकोभोनामहै योकीलमारीसरतिनयोहीं कीजवतेंदेषीनवहीतेंविचारैहेया
दिकरैहैइंद्रीवरषामभएमोवमिउवैहै कालीजोकोवलिउवनीठ्ठ रातमेंमोहटैहैनाहिनहींदेषैहै पमधातरद
मिलीजैवजातिहेवरनलावरीनलावकीपालिनदताकोनहींविसारैहै कोईजाणोकहाजानोंकेमकैसी
नसहेकोपणमतिजानोधोलियोहै रूपवीपाहियानसोरेरूपसोंवाकोहियामनकेदिरद्योहै थाने
दीठ्योयकोनमदिरैषेमोहेमानलाजकोनहींसंभारैहै उनमतरसोहै यहप्रथैनमसिलोवांसोंभाषाभ
चनमेलषोसमझोयालेकाररूहोकेहेमवरोपमेमसाटकेअनुसभ ५५ नपकहूंमाचीनमेदोहायेरेलिया
यकहेनुसभापकासमेसोमेदेननतायं ५६ प्रथसभाप्रकासकीसूचीनायिकाकीजातिजानोपद्मि
नीसुआदिकेमिसीयाआदितीनिमुग्धाआदितीनिगानिपज्ञातअज्ञातनवोढाविश्रब्धनवोढा यहसु
ग्याभेदमध्याप्रौढाहूकोभनिएधीराआदितीनिओरुजेष्ठाकनिष्ठाभेदअरुपरकीयासोपरो
ढाकन्याभनिएगुप्तादिवदग्धापुनि लक्षिताकुलटाहैमुदितानुसयानायकाकोयामेवतिषे ५७ क
होसामान्यअसमेंभेदादुखिताहूजानोवक्रउक्तिगर्वितातहैमानवतीनवीदेमानभेदहसनिसमेतप्राधे
नायिकहोउत्तमादिभेदसबसषीहूउचरीहै [illegible] नायककोभेदअरुहसषाअनुराग
कहेहेदरसनभावहावहेलाहूकोधरीहेवरनेविभावअनुभावथाई सात्विकहूसंचारीनतिसहितकीरीतिभ
लेकरीहै ५८ भाषोभावसंधिओरुवलताहूसोनिभावैरसदेवमित्रशत्रुसमहूउचारैहै अरागोभा
वनिसाकानप्रेमलेकनहूरसमैंसंदेहभावध्वनिनिरधारैहैरसाभासभावाभासरसदोषादोषहैं अथा
हारउपलक्षनजातिव्याप्तिधारैहै ओमिहूसत्रन्वयओरीतिओरौंतिओसमासपुनिसआसियाओजोकि ५३

कारसमहहिसुथारहै ७९ द्रव्यगुनक्रियासब्दजातिव्यक्तिलछनाहेस्लदाअउतजनकेभेदनिदिषाएहैं
उपादानलछनाहेसारोपासाध्यवसानासुद्धागौनीजहंतअजहंस्वार्थाषाएहैं गूढअगूढव्यंग्यफ
लपमेयभेगानवांजनासुसाक्षीहूकेभेदहेसुद्धाएहैसहसोजुहानहैसंजोगआदिभेदपायलछनाहू
मूलमलीभांतिसोंवनाएहैं ८० अरथीरचीहेवकाआदिकीविसेषतातेहतिनामसुंनौअगैग्रंथकेपा
हुकोमानीहैउत्तमकाव्यहूलछनामूलध्वनिसोंतोअविवक्षितविवक्षितवाच्यकविनिवषानीहैअत्य
तनिरस्कृतअरथांतरसंक्रमितहैअभिधाहेमूलजाकोकहेमेंपिछानीहै विवक्षितान्यपरवाच्यसंल
स्यअसंलस्यअसंलक्ष्यरसभावध्वनिमेंमनोभानीहै ८१ सलसभेदसब्दअर्थवस्तुलेकृतिकोविस्तारत
सेभवीसोंप्रबोलक्षिसोंदरसायोहै दसद्भारचारिसोपचावन १०४ ५१ ध्वनिभेदमध्यमकेइनभांगआ
दिआवगायोहैसब्दचित्रवाच्यचित्रअधमकेभेदकहेगुनरीतिआदिहूसभेदमेंबतायोहै एतीबातनकेव
केंजेरा[illegible]घनकवीसरहेताहीकोसुरहेहेसनिमेंकोयोहै ८२ श्रृंगारकोविनलायनकमलआलुना
ईजलमेंजलमेंसेउदिवाकरकोविवहरसायोहै प्यारीदेहदेसमेंसरोवरसलोनोमुषअंसोजगजोहै
कहूहूसरोनपायोहैसोभासुनिमूपतिअनंगरंगसोंहिपपोसाजिवेकोरसहासमेवकपवायोहैरोम
राजिमिसितेंरसीलीस्यामरेसमकीरसीलिएंजोवनजरीवकसंचआयोहै ८३ कीटवनतेंनहोविजहांरसना
मधुरध्वनिमाहतिहेमतिमोदनलालकीनोहींकहेकविरूवोपरें उपमाकोनलायकनतेतुम्हनाल
कीनिस्कृयमथ्यकोमाननहेषितिहेहिकैंनीवीडोराजुविसालकीहेग्रहचाललषायपरेनहिंन्योनल
पायपरेकाटवालकी ८४ सषिदेषनहींहूषमाउसुतादिहिएहरिमीलिलमाउलहेसवअंगग्रनेह॰

जस
र

देहरूपी सरोवर मे
देहरूपी देसमें सर
समान सुषहै॥ ताके
ने त्र सोई कमल
छना है सुहर तासु इन
लताजलहै॥ ताके सु
र बिंदु सोई सूर्य कोबिंब
स्वरूप है॥ जो रेहे छत
है॥ कामदेवरूपी राजा उसी
देसकी सोभाको सुन
केरंग प्रेयपायो है॥ तिन
हे सते सवा रहन रास
प्र थम हास्य रस सेवक
भेज्यो है॥ ता पाछे रो
मराजीको चढानो
कीयो है॥ स्याम रस
रसमकी लीए जोब
नरूपी जरीवि केस
मुस सापनवारो ज्यो
यो है॥ ९७॥

समापनेवारो
रसनायहु घूंटकाको कहै
कहीनहीतौ कविरूठोपर
नहै॥ उपमाके तापैक
सौलवैतो तुम्हनी ज्यो
नीवीलहै कीविसालवी
आकृत कुवनकी छिति
देखतें [illegible] की निस्य सुनत है
विकट है बहु कै नीस्याव तें [illegible]
की चाल दिखाई नहि दे ता [illegible]
छिपाइ न रही तौ सो है॥ [illegible]

कल्प॰ वृ॰

४४

मानो निषंग न हीं मुष की छवि चंद्र तहै है म्रकुटी नु गावे कम्रदे षट्हे लेक म्रली हू न जाननि टेकि न है मद की
गति नो हि लेसजनी कोटिह करि की रसनादि के है ॥ १५ दोहा जो चाहो भव भय मिटे भजो सदा गोविंद हरि
उन्नीरन नलसि दल षाइ करो आनंद १६ भवजल पार करे न लसिय हतु वसहज सुभाव हे आन गमेन
दत रैं व ठिकाव की नाव १७ सैव पावा सज हो सवनी रथ को श्री भगीरथ को सरिता हू वसी है सव तिना
हि समा श्री उमा जिन की ममता को न हू जो लसी है ते सव श्रोगम नोहर चाहू न पावन भक्ति रसी है दोहु हे
लषि जानन तहारे है कारन तारन को न लसी है १८ अथ श्री गंगा जी को भक्ति कवित्त जेसे नीर विंदु अरविंद
परा जन है कलम पद पंकज मे म्रसे गंगा धार है पाप पुंजन नासै सो विनासहे अषिल षद म्रमति मकासे से
मुसिर को सिंगार है मेट हरि लोक हू को एक वात निसा कूर वेकूट कमंजा को कि ऐनाम कोड चार है जमको
मसदो कवै कागद को रहो निजले षपर चेर पाते व षकरता रहे १९ जो दिरा षसी सजनरे सजादि भाष
तहैं जिनि पाई हरिमी चय्र रूका मसो छमा को हो षानि देषी दीन पद्या को वानि सुन्यो है वषान तुव वेद
ति को ग्राम सी मायलोक माय को पुजा पतिहू लोक रही क्षान ही मिलाय तेलो दे नितु न स्याम सो परउपता
पी द्रोहद जापी मदिरा पीग्र सैन तरि जात पापी सुरवा पीन तेरे नाम सो २० नाम लिए सव पापन से रवि जाति से
ज्यो तम [illegible] नो मन सो हीरे तकी ज्यों कनिका परे अत पें तो विषि लोक के ऊपर जाहीं दीन की श्रोर दयो निधि
या विन तो मेरे म्मलि हों नाहीं देव नरेगि निग्रंगनि मो निजडा मि दोनु गन रंग [illegible] निमो ही २१ दोहा अतिद
पाल हरि हिय वसनि में तु अभक्ति विहीन रमा करो अपराध सो क्षमा जानि के दीन २२ अथ कवि की र
स्थिति नवापार स भेद सम में राजत वस्या ग्राम ष्यो विष्णु मसवे सम में वासु देवत पद[illegible]स २३ ता को सुत श्रीरा

द्रोही नाम

प्रसन्नता

हरि गीत

पावन

गंगा

केरव

का.ख. ८५ यनकियो चैनपुरवास परगन्ना सेप आनहो चारिवर्नसद्भलास ७४ सालग्रामी सरजुकी मिली गंगासो या
तिंग्रेनराल मैंदेस नटहैसार निसरकार ७५ तनैरामयन सरिकोट रिकविकियम हवासकोवल्लभ
ग्रंथ हिरचौक विनादोषमकास ७६ उदाहरन प्राचीनदेकौनेकहनवीनयाग्रंथकोसुगमकरिलषि
देसकविप्रवीन ७७ पुरोहित श्रीनंदकोसुनिसांडिल्य महानहम हैतिनकेगोतमेंमोदनभोजनमान
७८ इन्द्रादिककोंहेतजो सेपतिसोजतमानैनदिन त्रिजा चौ औरिसुरनहिमेमोसाम्रजान ७९ राधिकाके
हगासे सजनीसमतानहींपेकजकेदलकीदेषजननमंजुलभामतदेनअनन्तडीवनीकुविकजलकोहे
छुटिपरी अलकेपलकेछुइउ चडरोजनमेंफलकीहकेवनकेमनुचाहपहारमेंधारयसोजम
सवैया नाजलकोहै ८० संवत नंद १ इंदु तास न ३ दिग्गज १३ १ सोगननाजुदिषाईहमसरोजेवलसीदस छु
मीतिथिप्रांतहोसावरोपक्षनिकाईतोरनडागकेओबुधवारविकमीनिकोगतिलायलगाईश्रीनवल लि
छप्पदाई सी उपकेवनहोरचनायहपूरीभई ८१ श्रीराधापदकेजकीरजनिजनैननिलायचकादनकियम्र
नुनवद्भलहिकेवलगाय ८२ इतिहरिचरणदासकृतेहृदकविवल्लभोग्रंथःसंपूर्णोसमाप्तम्

१५०० २ पत्रे६

45

॥अथ अलंकार॥ चमत्कार को जनक जो पुनि दूषणथि मैं होय॥ शृंगार रसादिक हाय न है अलंकार सो॥

उपमा लछन॥ उपमान र उपमेय मैं समता भाव होय॥ ताहि उपमा कहत हैं सकल [illegible] कवि सिरमौर॥

उपमा लछन॥ जाकी उपमा दीजै ताकौ कहत उपमान॥ [illegible] को उपमा दीजै ऐसो उपमेय बिख्यान॥

[illegible] है तो लम [illegible] हि है [illegible] वाचक जान॥ एक धर्म दुहून मैं [illegible] दार्स्टप्रिधान॥

دلبری

طرف

کریم بخش طرف

طرف طرف

